अखण्ड भाग्योदय दर्पण

ज्योतिष

2-3

2010

द्वितीय भारत जनसंख्या

परियोजना उत्तर प्रदेश 1987-88; APP Lko

❀ ॐश्रीमन्महागणाधिपतयेनमः ❀

ज्योतिष

अखण्ड भाग्योदय दर्पण

धनोपार्जन चमत्कार

तेजी–मन्दी

और

जन्म कुण्डली विषयक

अद्वितीय फलित ज्योतिष का महान सरल ग्रन्थ

लेखक :—

भगवानदास मीतल

प्रकाशक :—

भगवानदास मीतल, भृगुज्योतिष पुस्तकालय,

नया बाजार मथुरा (यू० पी०)

संशोधित परिवर्धित]

[मूल्य [illegible]) रु०

जनवरी सन् १९६२ के इस एक संस्करण के प्रकाशक :—

शिक्षा ग्रन्थागार,

डीग दरवाजा, मथुरा ।

संसार में सत्य बोलना सर्वोत्तम धर्म एवं अद्वितीय तप है ।

मुद्रक :—बा० वृजमोहनलाल अग्रवाल द्वारा
जयभारत प्रिंटिङ्ग प्रेस, मथुरा में मुद्रित ।

भगवान श्री सत्यदेव लक्ष्मी नारायण जी महाराज
की सेवा में
वन्दन एवं समर्पण
बन्दों श्रीहरि पद सुखदाई
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे, रङ्क चलें सिर छत्र धराई।
बहरौ सुने, गूंग पुनि बोले, अन्धे चले सब कछु दरसाई।
सोई कृपा प्रभु मोपर करिये, श्री चरणन की प्रभु दुहाई।
क्योंकि नाथमैं अल्प बुद्धिहूं, किन्तु पड़ो चरणनहूँ आई।
तन्दुल समझ, सुदामा के प्रभु, पुस्तक पुष्प लेओ हरषाई।
प्रार्थी—भगवानदास सीतल.

❀ विशाल भृगु-संहिता पद्धति ❀

पृष्ठ—६००

इस भारत प्रसिद्ध गन्थ क द्वारा प्रत्येक स्त्री-पुरुषों के जिन्दगी भर के हालात, बिना गुरू की सहायता के, घर बैठे सदैव मालूम करते रहिये। आपका भाग्य कौन २ सी सालों के अन्दर कौन २ तारीखों में, उदय होगा, आपकी धनोन्नति कब २ होगी, परिवारिक सुख, देहिक सुख, धन की स्थिति, सन्तान सुख, स्त्री, विद्या, बहन, भाई, रोजगार माता-पिता मकान जायदाद, सुख-शांति, धर्म कर्म, भाग्य प्रभाव, यश—अपयश, आयु, ख्याति, आमद, खर्चा, पुरातत्व जीवन बाहरी स्थानों का सम्बन्ध, मित्र, शत्रु, भोग-विलास, इत्यादि जीवन और भाग्य के हरएक सम्बन्धों में, वड़े भारी विस्तार के सहित, दर्पण की भांति जानने योग्य लिखा है। गलत बनी हुई कुण्डलियाँ भी स्वयं सही कर सकते हैं। यह शर्त है कि आप ५००) रुपये की फलित ज्योतिष की पुस्तकें खरीद लेने पर भी, इस ग्रन्थ के बराबर सच्चा और सरल फलादेश प्राप्त नही कर सकते हैं! भारत की जनता ज्योतिष और विद्वानों के भारी तादाद में प्रशंशा पत्र प्राप्त हो चुके हैं। पृष्ठ संख्या ६०० कागज उत्तम, पक्की जिल्द पेशगी मूल्य सिर्फ ६) रुपये डाक खर्च माफ

पुस्तक मिलने का पता—भृगुज्योतिष पुस्तकालय, नया बाजार मथुरा।

❀ अखण्ड भाग्योदय दर्पण की ❀

* विशेषतायें *

१–धन लाभ का, दैनिक फलादेश।
२–धन लाभ का, मासिक सरल फलादेश।
३–धन लाभ का वार्षिक सरल फलादेश।
४–राजयोग समय का सरल फलादेश।
५–विद्या एवं सन्तान पक्ष, का सरल फलादेश।
६–आय व पुरातत्व एवं उदर और जीवन की दिनचर्या का फलादेश।
७–स्त्री एवं दैनिक रोजगार के समय का फलादेश।
८–धर्म-भाग्य भक्ति एवं देवी शक्ती आदि के समय का फलादेश।
९–देह, आत्मबल, ख्याति, सुन्दरता आदि के समय का फलादेश।
१०–रोग, शत्रुपक्ष, झगड़े, झंझट आदि के समय का फलादेश।
११–माता,भूमि,मकान,जायदाद,सुख-शान्ति आदिके समय का फलादेश
१२–पिता,मान-प्रतिष्ठा,बड़ा कारबार राज समाज के समय का फलादेश
१३–रेस आदि विविध व्यापार कार्योंके लिये लाभकारी रङ्ग एवं मणियाँ और सर्व ग्रहों के गुण, दोष, स्वभाव, कर्म आदि का, फलादेश।
१४–चाँदी की विविध प्रकार की चमत्कारिक तेजी मन्दी।
१५–सोने की तेजी मन्दी का सरल फलादेश।
१६–गुड़ की तेजी मन्दी का सरल फलादेश।
१७–गेहूँ की तेजीमन्दी का सरल फलादेश।
१८–कपड़े की या सूत की तेजी मन्दी का सरल फलादेश।
१९–कागज की तेजी मन्दी का सरलफलादेश।
२०–ज्योतिष सीखने के कुछ महान सरल आँकड़े।
२१–गलत जन्म कुण्डली को सही करने की महान सरल विधि।
२२–ग्रहों की शान्ति के, कुछ दैनिक, १२ महान सरल साधन।

नोट–चाँदी,सोना, गुड़, गेहूं, कपड़ा, सूत,कागज,की हर ,प्रकार की तेजी मन्दी का फलादेश, हरएक बारहों लग्न वालों को बराबर २ रूप में लिखा हुआ है, और भाग्य सम्बन्धी हर एक विषय का फलादेश सबका अलग२ सिलसिलेवार नम्बरों सहित लिखा हुआ है।

❀ श्री ❀

धनवाद
११-११-५६

श्री श्री १०८ श्री परम आदरणीय मित्तल जी ।

जै शिव शम्भो ।

बाद सब कुशल के साथ श्रीमान् जी के सपरिवार की कुशलता भगवान से प्रार्थी हूँ। आपकी भृगु संहिता पद्धत्ति नामक ग्रन्थ को पढ़ कर मुझे बहुत खुशी प्राप्त हुई,जब कि आपकी कृपा से कुछ थोड़ा बहुत सामान्य ज्योतिष का ज्ञान मुझे भी है, बाद (१) जो श्रीमान् के यहाँ विश्व के भाग्यवानों की कुण्डलियाँ, प्रत्यक्त ज्योतिष शास्त्र, नामक जो पुस्तक है, वह और (२) अखण्ड भाग्योदयदर्पण (३) शरीर सर्वाङ्ग लक्षण ! ये तीनों पुस्तकें शीघ्रातिशीघ्र पत्र पाने के साथ वी. पी. से भेजने का अवश्य कष्ट किया जाय, ताकि आपकी इन सुन्दर रचित कीर्तियों से हम भी लाभ प्राप्त करें। वी. पी. अवश्य छुड़ा ली जायगी आशा है प्रार्थना पत्र स्वीकार करने का कष्ट किया जायगा। विशेष श्रीमान् जैसे ज्योतिष मार्तण्ड दैवज्ञ महानुभावों की कीर्ति है, इसी तरह हमेशा सूर्य के साथ समान, जब तक सूर्य है तब तक अमर रहें यह भगवान से प्रार्थना है ।

पुस्तकें भेजने की कृपा जल्दी किया जाया उत्तम होगा ।

आपका कल्याण कांक्षी अज्ञात ग्राहक :—

दैवज्ञ रत्न पं० ब्रजभूषण शर्मा, (त्रिकालज्ञ)

राजज्योतिषी, ज्योतिष मार्तण्ड

C/O

श्रीमान् बाबू मुखुसिंहजी के मकान में हीरापुर

पो० मुकाम--धनबाद

जिला--धनबाद (बिहार)

शरीर सर्वांग लक्षण

इस सरल हिन्दी पुस्तक के अन्दर चोटी से लेकर एड़ी तक के समस्त अङ्ग, प्रत्यङ्ग, गुप्ताङ्ग, हस्त रेखा, आकृति, कृति, रङ्ग-रूप, कद, स्वभाव, गुण, शकुन, अङ्ग फड़कन तथा चहेरे की बनावटों पर इंच २ पर बड़ा भारी अनुभव सिद्ध प्रत्यक्ष फलादेश, बड़े लम्बे विस्तार से लिखा है इसके द्वारा केवल मनुष्य को देखकर के ही उसके भाग्य और आचरण का पता मालूम किया जासकता है। यह अद्वितीय शास्त्र है।

मूल्य १॥) डा० खर्च ।॥)

नोट—यह पुस्तक अन्य पुस्तकोंके साथ मँगाने पर डा०खर्च माफ होगा।

भगवानदास मीतल भृगुज्योतिष पुस्तकालय, नया बाजार मथुरा

प्रशंसा-पत्र

प्रेषक-श्रीलखाणि अलाना जूसब, बी. ए., एल. एल. बी.

फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट और सिविल जज कमला इन्सट्रेक्टर

चीतखाना चौक जूनागढ़

ता० २५-८-५१

श्रीमान् जी,

मैंने आपकी पुस्तक 'विश्व क भाग्यमानों की कुण्डलियाँ का सूक्ष्म रूपेण अध्ययन किया। वस्तुतः यह ज्योति सम्बन्धी पुस्तकों से अपना एक विशेष स्थान रखती है। ज्योतिष विश्लेषण बड़ी सादगी और संतोषप्रद रूप से किया गया है। मैं इस पुस्तक को सर्वोत्तम कृति मानता हूं। मैंने आपकी अन्य पुस्तकों को भी पढ़ा है। मैं जोरदार शब्दों में इस प्रकार की पुस्तकें निकालने की सिफारिश करता हूं। क्योंकि ऐसी पुस्तकें निश्चायात्मक रूप से ज्योतिष में दिलचस्पी रखने वालों के लिये लाभप्रद सिद्ध होगी। इस उपरोक्त पुस्तक का दर असल में एक अत्यन्त कुशल और ज्ञान पूर्ण प्रकाशन है।

पुस्तक परिचय

प्रिय पाठक-गण इस पुस्तक का मूल दृष्टिकोर्ण यह है कि ज्योतिष का फलादेश सरल रूप से कैसे देखा जाता है, प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन में, गृहस्थ सम्बन्धित, धन व जन, व्यापार, सुख, समृद्धि की उन्नति एवं पूर्ण आनन्द हरएक विषयों में, कब २ कौन २ से विषयों में प्राप्त हो सकेगा और कौन २ से अनुकूल ग्रहों के रङ्गों का कौन २ सा कार व्यापार लाभदायक साबित होगा, और कौन २ सा रङ्ग व्यापार में, अनुकूल होगा, और कौन २ सी मणियां पहिनना लाभदायक होगा, और जन्म कुण्डली में जन्म के समय बैठे हुए नव ग्रहों में से, कौन २ से ग्रह किस २ विषय में शुभ फलदायक होंगे, और किस २ विषय में अशुभ फलदायक होंगे, तथा खास तौर से चाँदी की चमत्कारिक तेजी मन्दी बड़े ही सरल ढंग से, ठीक २ कैसे जानी जा सकती है इस विषय पर बड़ाहीं चमत्कारिक अनुभव सिद्ध प्रकाश डालाहै और सोना, कपड़ा कागज, गुड़, गेहूँ की भी तेजी मन्दी सुन्दर लिखी है। और प्रत्येक मनुष्य की जन्म कुण्डलियों में कौन २ ग्रह क्या २ फल प्रदान करने के अधिकारी हैं और कौन २ ग्रहों का क्या २ स्वभाव है क्या २ रंग हैं, क्या २ असर है कौन २ सी मणियां किस २ ग्रह से संबंधित हैं, और सबसे बड़ी महत्वदायक बात यह है कि, भाग्य के प्रत्येक विषयों पर बगैर विंशोत्तरी दशा व अन्तर दशाओंके देखे बिना ही, केवल पंचांग के ग्रहों से ही, अपनी२ जन्म कुण्डलियों के सच्चे प्रत्यक्ष फलादेश व अच्छे बुरे समय की सच्ची जानकारी, बड़े ही सरल ढंग से, बगैर किसी प्रकार की गणित किय बिना ही मालम कर सकते हैं, और विंशोत्तरी दशाओं की प्रणाली से जाना हुआ फलादेश, प्रायः बहुत गलत साबित होता रहता है, किन्तु यह फलादेश ईश्वर की महान कृपा से प्राय सत्य हीं होता रहता है।

नोट—जिन राशियों को, पुस्तक के अन्दर फलादेश में नहीं दिया है, उनका रुख समान्य समझना चाहिये।

फलादेश जानने की विधि

इस पुस्तकके अन्दर हरएक बारहों लग्नों में जन्म लेने वाले व्यक्तियों का फलादेश सिलसिलेवार एक के बाद एक का लिखा हुआ है, अतः फलादेश देखते वक्त, पाठक सर्व प्रथम अपनी जन्म कुण्डली को इस पुस्तक की बड़ी वाली कुण्डलीसे मिलान करके देखलें, जो कि कुल बड़ी कुण्डली बारह हैं। इन्हीं बारहों में से, जिस किसी कुण्डली से, आपकी कुण्डली मिल जाय बस वहां से आगे की आखिरी छोटी कुण्डली तक में आप अपना हर विषय का फलादेश देख सकते हैं बारहों कुण्डलीयों के नाम इस प्रकार सिलसिलेवार हैं १-मेष २-वृषभ ३-मिथुन ४-कर्क ५-सिंह ६-कन्या ७-तुला ८-वृश्चिक ९-धन १०-मकर ११-कुम्भ १२-मीन और तेजी मन्दी का फलादेश पुस्तक के आखिरी हिस्से में देखियेगा।

और वर्तमान समय की जानकारी करने के लिये सदैव वर्तमान साल के पंचांग द्वारा ग्रहों के फलादेश मालूम करिये। और यदि गुजरे हुए समय की जानकारी करनी हो तो पुराने पंचागों से देखिये और यदि लम्बे भविष्य की बातें देखनी हैं तो दस वर्षीय या पंचवर्षीय पंचाँगों के द्वारा अपनी भविष्य की जानकारी करियेगा, इस पुस्तक के अन्दर जिन २ ग्रहों का फलादेशों में उल्लेख आया है उन सब ग्रहों में, लम्बी और गहरी बातों की जानकारी करने के लिये आपको चार ग्रहों की जानकारी का सबसे अधिक ध्यान रखना आवश्यक है शनी, बृहस्पति, राहू व केतू अतः जब तक यह चारों ग्रह अनुकूल नहीं होते हैं, तब तक ठीक२ सुधार किसी भी खास विषय पर नहीं हो पाता है क्योंकि यह चारों ही ग्रह प्रत्येक मनुष्य की कुण्डलीयों पर सबसे अधिक समय तक चलता है और दूसरे चार ग्रह सू० मं० बु० शु० यह तो करीबन १-२-१½-२ माह में ही स्थान परिवर्तन करते रहते हैं और चन्द्रमा तो २¼ दिन में ही सन परिवर्तन करते रहते हैं। इसलिये इन पांचों ग्रहों का अच्छा या बुरा असर तो अधिकांश रूप में बार २ ही प्राप्त होता रहता है किन्तु ऊपर वाले चार ग्रहों का जब अनुकूल समय आता है, तब २ ही जीवन में किसी विशेष घटनाओं द्वारा विशेष

उन्नति और विशेष परिवर्तन का समय प्राप्त होता ही रहता है और सबसे अधिक शनी की चाल का मिलान,इस पुस्तक के द्वारा अधिकाँश रूप में करना चाहिये क्योंकि इनका एक २ पर ढाई २ साल ठहरने का समय आता है और कभी २ राहू या केतू, बुरे फल प्रदान करने के स्थान,अवसरों पर यदि लाभदायक उत्तम ग्रहों के संग में आ आजाते हैं तो उन्हें भी लाभ की सूरत अख्त्यार करनी पड़ती है।

ग्रहों की अवस्था और अंश ज्ञान

पंचांग के अन्दर हर एक ग्रह बारह राशियों पर -१ अंश से लेकर ३० अंश तक सदैव ही ठहरा करता है और प्रत्येक ग्रह ५ अंश तक शिशु अवस्था में रहता है और १० अंश तक किशोर अवस्था में रहता है और २० अंश तक युवा अवस्था में रहता है। और २५ अंश तक प्रौढ अवस्था में रहता है, और ३० अंश तक वृद्ध अवस्था में रहता है। इसलिये वृद्ध अवस्था में और शिशु अवस्था वाले ग्रह कुछ कमजोर फल करते हैं, और प्रौण अवस्था व किशोर अवस्था वाले ग्रह, कुछ अच्छा फल प्रदान करते हैं,और युवा अवस्था वाले ग्रह, बहुत मजबूत फल प्रदान करते हैं। किन्तु जो जो ग्रह २९अंश से आगे और १ अंश से कम होगा, तो उस ग्रह की निर्जीव अवस्था होती है, इस लिये वह ग्रह अपना फल किंचित मात्र ही कर सकता है।

प्रिय पाठक आकाश में सदैव चलते रहने वाले, इन नवग्रहों का वर्णन पंचाँगों में जिस प्रकार लिखा रहता है, इस बात को प्रायः सभी जानते हैं किन्तु भारतवर्ष के सभी ज्योतिषी पंडित, अधिकांश रूप में फलादेश कहते वक्त केवल विशोत्तरी दशा व अन्तर दशाओं से ही काम लिया करते हैं, जो कि फलादेश प्रायः गलत बैठता रहता है। अतः इस प्रकरण में भगवान की दया से, हमको जो प्रत्यक्ष अनुभव, इन नवग्रहों की आकाश गति विधि से, सैंकड़ों हजारों कुण्डलियों पर सही साबित हुआ है जोकि हर एक ग्रह का, एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करते ही, हर ऐक प्राणी मात्र के भाग्य पर हर एक विषय में क्या २ असर तथा हर एक जिन्सों पर क्या २ तेजा मन्दी का योग पैदा करते हैं। अतः इस प्रत्यक्ष अनुभव के द्वारा जनता का लाभ और ज्योतिष का मस्तक ऊंचा कर सकते हैं।

ता० १४-१२-५३ फोन नं० ३३४५६

चेतना लिमिटेड, चौतीस राम पार्टरोड बम्बई, १
की ओर से प्रमाण पत्र

परम आदरणीय श्री भगवानदास जी !

आपका पत्र मिला। भृगुसंहिता पद्धति का कुछ अंशों में अवलोकन किया, जन साधारण के लिये ज्योतिष को इतना सरल और बोध गम्य बनाकर आपने समाज का बड़ा भारी उपकार किया है। आपके प्रकाण्ड पाण्डित, परिश्रम और अध्यवसाय के बिना यह कठिन काम कभी पूरा नहीं हो सकता था; इसके लिये आपकी जितनी भी प्रशंसा की जाय वह कम है। इंगलिश में आप इस ग्रन्थ का उल्लेख कर रहे हैं यह जानकर प्रशन्नता हुई। प्रकाशन कौन लोग कर रहे हैं। यदि आप चाहें,तो प्रकाशन का भार हम पर रहने दें। आपकी सम्मति मिलने पर हमारे डाइरेक्टरों के सामने यह प्रश्न रखा जा सकता है।

भवदीय—
सुधाकर दीक्षित

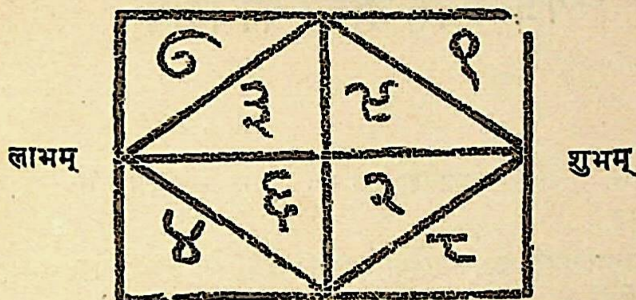
श्री मान्यवर मित्तल जी जै हिन्द ! ता.४-१-५७

आपकी भृगुसंहिता पद्धति देखकर हृदय आनन्द से गद्गद् होगया। मेरे पूज्य वयोवृद्ध पिताजी की तथा मेरी इस वस्तु की तीव्र लालसा थी क्योंकि इससे ज्योतिष शास्त्र के वैज्ञानिक अध्ययन के लिये द्वार खुलता है। आपने दैवी-वरदान से जो कुछ लिखा है वह वास्तव
द्वार खुलता है। आपने दैवी वरदान से जो कुछ लिखा है वह वास्तव
में ज्योतिष का सार है, क्योंकि तदनुसार ही इसका फलादेश है। ऐसी मेरी कल्पना को पुस्तकालयाध्यक्ष जानते थे, पूर्व सूचना के बिना ही पुस्तक को पाकर चकित रह गया। आप धन्य हैं, आपका प्रयास भूरि २ प्रशंसास्पद है।

भवदीय—
चन्द्रदत्त जोशी शास्त्री
प्रशिक्षक, राजकीय बुनियादी शिक्षक
प्रशिक्षक केन्द्र, लोहन

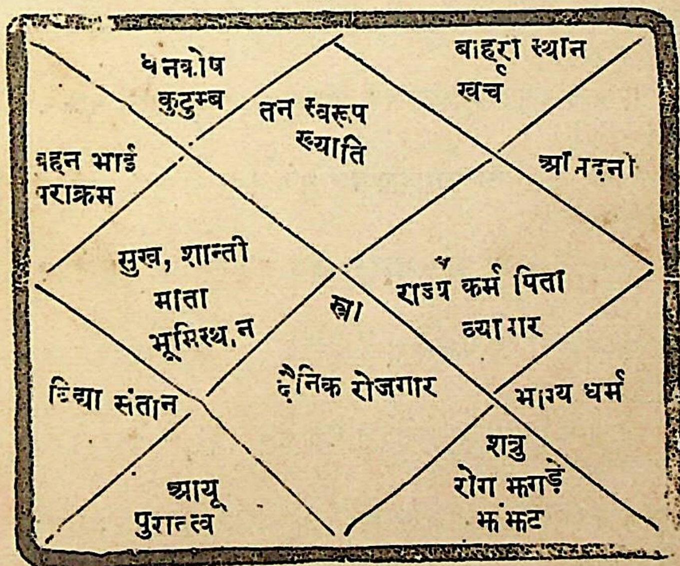
सर्वोत्तम बीसा यन्त्र

❀ ॐ श्री लक्ष्मीम् ❀



जन्म कुण्डली के अन्दर किस २ स्थान से किस २ विषय का क्या २ फलादेश देखा जाता है।

×



×

समस्त जन्म कुण्डली वालों को, फलादेशीय पेज नम्बर जानने की विधि

१-मेष लग्न वालों को फलादेश पेज नं० ११ से लेकर पेज नं० २५ तक में देखिये ।

२-वृषभ लग्न वालों का फलादेश पेज नं० २६ से लेकर पेज नं० ४० तक में देखिये ।

३-मिथुन लग्न वालों का फलादेश पेज नं० ४१ से लेकर पेज नं० ५५ तक में देखिये ।

४-कर्क लग्न वालों का फलादेश पेज नं० ५६ से लेकर पेज नं० ७० तक में देखिये ।

५-सिंह लग्न वालों का फलादेश पेज नं० ७१ से लेकर पेज नं० ८५ तक में देखिये ।

६-कन्या लग्न वालों का फलादेश पेज नं० ८६ से लेकर पेज नं० १०० तक में देखिये ।

७-तुला लग्न वालों का फलादेश पेज नं० १०१ से लेकर पेज नं० ११५ तक में देखिये ।

८-वृश्चिक लग्न वालों का फलादेश पेज नं० ११६ से लेकर पेज नं० १३० तक में देखिये ।

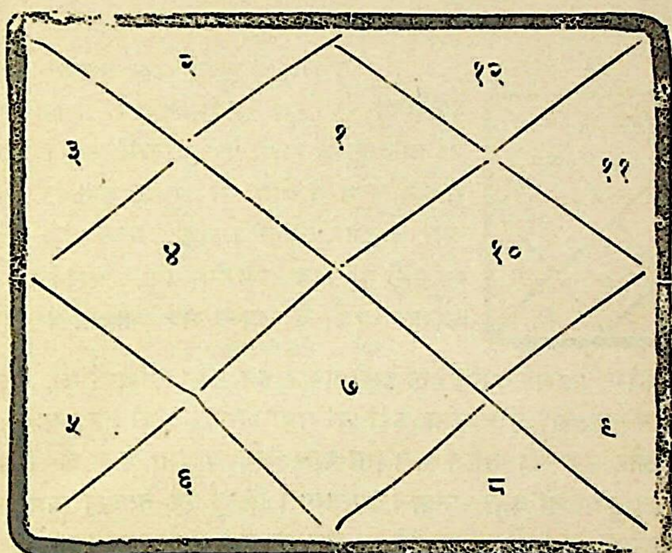
९-धन लग्न वालों का फलादेश पेज नं० १३१ से लेकर पेज नं० १४५ तक में देखिये ।

१०-मकर लग्न वालों का फलादेश पेज नं० १६१ से लेकर पेज नं. १६० तक में देखिये ।

११-कुम्भ लग्न वालों का फलादेश पेज नं० १६१ से पेज नं० १७५ तक में देखिये ।

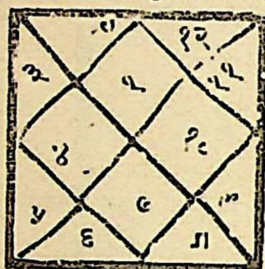
१२-मीन लग्न वालों का फलादेश पेज नं० १७६ से लेकर पेज नं० १९० तक में देखिये ।

मेष लग्न फलादेश प्रारम्भ



इस मेष लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सुख और धन लाभ के सम्बन्ध में मुख्य ग्रह प्रायः श०शु० चं०बु० ही हैं और अधिकांश इन्हीं ग्रहों के रंग व मणियां धनोन्नति संबंधी सभी व्यापारादि कार्यों में लाभप्रद सिद्ध होंगे, किन्तु राशि और स्थानान्तर के भेद से प्रायः सभी ग्रह अच्छे और बुरे फल के सूचक बन जाते हैं जैसा कि आपको कुण्डली नं० १ से लेकर कुण्डली नं० १४ तक में विचारहेतु इन सभी ग्रहों का भाग्य के हर एक विषय में भिन्न २ फलादेश महान् सरल रूप से जानने को मिलेगा ।

कुं० नं० १

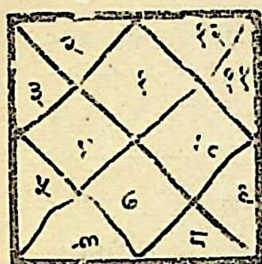


पंचाँग के अन्दर इस कुण्डली वाले व्यक्तियों को जिस २ दिन चन्द्रमा वृषभराशी पर और कुम्भ राशी पर आयेगा उस २ दिनों में धन लाभ के योग से सुख अनुभव होगा और चन्द्रमा, कन्या वृश्चिक, मीन इन तीन राशियों पर जब २आयेगा तब २ अशाति पैदा करेगा बाकी के अन्य सब राशियों पर सुख प्रदान करेगा। इसके अतिरिक्त इसी प्रकार इन तीन राशियों को छोड़ कर जन्म कुण्डली में चन्द्रमा कहीं भी पड़ा होगा तो भी वह लाभप्रद रहेगा और सुख की प्राप्ति करायेगा और यदि चन्द्रमा जन्म के समय वृषभ का हुआ तो बड़ा धनवान बनायगा। किन्तु एक तोचन्द्र अमावस के आसपास का न हो और राहू या केतू के साथ न हो तब उत्तम रहेगा

(धन लाभ का मासिक फलादेश)

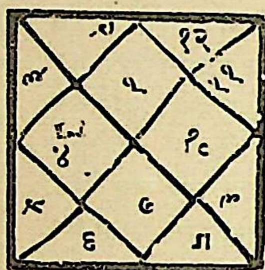
इस कुण्डली वाले व्यक्ति को पंचाँग के अन्दर जिस २ समय और जिस मास में शुक्र, वृषभ राशी पर या कुम्भराशी पर या मकर राशी पर या मेष राशी पर या तुला राशी पर या कर्क राशीपर आयेंगे तब २ धन लाभ का योग सुख पैदा करते हैं और जब २ शुक्र कन्या राशी पर या वृश्चिकराशी पर या मीनराशी पर जिस जिस२में आयेंगे तब २ कुछ हानिकारक रहेंगे और शेष राशियों में रहेंगे। और सूर्य या बुध भी जिस २मास में कुम्भराशी पर आयेंगे तब २ धनलाभ का योग पैदा करते हैं। इसी,प्रकार यदि जन्म कुण्डली में भी शुक्र ऊपर लिखे अनुसार किसी भी राशी में कन्या, वृश्चिक, मीन को छोड़ कर कहीं बैठा हो तो धन लाभ करेगा किन्तु मुख्य तया वृषभ, मकर, कुम्भ,तुला कर्क अथवा मेष में कहीं भी हों और सू० बु०कुंभराशी पर हों तो धन के लिये श्रेष्ठ तथा सुखद रहेंगे और कुंभराशी पर हर एक ग्रह लाभकारी रहेगा।

कु० नं० २



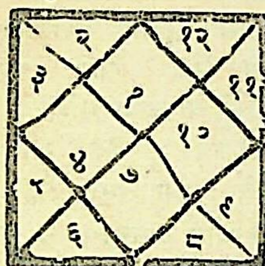
पंचांग के अन्दर इस कुण्डली वाले व्यक्तियों को जिस २ समय और जिन २ वर्षों में २॥ वर्ष को शनी वृषभ राशी पर आयेंगे तब२ धन का अधिक लाभ करते हैं और शनी ढाई वर्ष को जब धन, मकर कुम्भ राशि पर या तुला राशि पर आयेंगे तब २ धन का खूब लाभ करेंगे और शनी मिथुन, सिंह, कन्या कन्या, मेष वृश्चिक राशियों पर भी कुछ अच्छा फल प्रदान करेंगे। किन्तु जब मीन राशि पर शनी आवगे तब नुकसान दायक रहेंगे और वृहस्पति जिस २ साल में, मेष राशि पर या सिंह राशि पर या धन राशि पर तुला या मिथुन राशि पर या कुंभ राशि पर जब २ कभी इन राशियों में कहीं भी आवेंगे तव २ भाग्य की ताकत से लाभ का योग पैदा करते हैं और यदि गुरु कन्या राशि पर जब कभी आवेंगे तब २ हानिकारक योग पैदा करते हैं। राहू जब २कभी डेढ़ दो साल के लिये मिथुन,कन्या कुम्भ राशियां पर जब २ कभी आयेंगे तब२ उन्नतिदायक तथा विपत्ति नाशक रहेंगे और शेष सभी राशियों पर कुछ न कुछ अशाँति दायक रहेंगे, किन्तु डेढ दो वर्ष को जब २ कभी कन्या, धन कुंभ राशियों पर कहीं भी आयेंगे, तब २ उन्नतिदायक, लाभदायक, दुःख भंजन रहेंगे किन्तु और सभी शेष राशियों पर कुछ न कुछ अशाँतप्रद रहेंगे और कुंभ राशी पर हर एक ग्रह लाभप्रद रहेगा और जिन २ वर्षों में शनी राहू केतू गुरु यह चारों ग्रह अच्छी राशियों में आयेंगे. उन २ वर्षों में खास तौर से विशेष लाभ प्राप्ती का योग आकर बनेगा क्योंकि सू० चं० मं० बु०शु० यह पांचों ग्रह तो हर साल के अन्दर कभी न कभी अच्छे ही आते रहते हैं। अतः जिन वर्षों में व जिन महीनों में प्रायः सभी ग्रह ऊपर लिखे मूजिब किसी न किसी राशियों में ही, एक ही समय पाते हैं उस २ समय में भाग्योदय हुआ करता है।

कुं० नं० ३



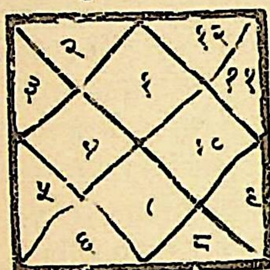
पंचाँग के अन्दर जिवर समय में या जिस जिस वर्षों में, शनी मकर राशी पर हो और मंगल भी मकर राशि पर हो और वृहस्पति मेष या सिह या धनराशी में कहीं भी हो और राहू मिथुन पर केतू धनराशी पर हो और सू. बु. मेष मिथुन, सिंह या कुम्भ कहीं भी हो और शुक्र कर्क, या तुला, मकर व मेष इन राशियों में से कहीं भी हो और चन्द्रमा मेष, भी कर्क, तुला मकर इन्हीं चार राशियों पर कहीं भी हो अतः इस प्रकार सभी ग्रह एक ही समय में जब उप-रोक्त राशियों में कहीं न कहीं एक साथ आवेंगे और उस समय सूर्य से शुक्र अस्त नहीं होना चाहिये, तब वह समय राजयोग का होता है ।राजयोग की प्रवलता और भी अधिक ऊंचे रूप में पाने की इच्छा रखने वालों को यह समझना और जरूरी होगा कि एक तो इस कुंडली वाले की जन्म कुंडली में भी यह ग्रह उपरोक्त रीतिके अनुसार ही कहीं न कहीं सभी ग्रह बैठे हों और ऊपर लिखे अनुसार सभी ग्रह, उपरोक्तर राशियों में कहीं मौजूद हों जो कि पंचांग से तुरन्त मालुम किये जा सकते हैं । अतः ऐसे समय में प्रवल राज योग माना जाता है और यदि ऊपर वाली ग्रहों की स्थिति एक साथ सब आ जाय अर्थात् जन्म लग्न और लग्न गोचर तो राजयोग अवश्य होगा चाहे किसी भी रूप से हो और यदि शनी, मीन या मेष राशी पर आवे या गुरू मकर पर आवे या राहू या केतू मकर पर आवे तो राजकारक सम्बन्धों में अशांति रहती है !

कुं० नं० ४



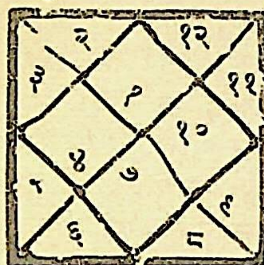
पंचाँग के अन्दर जिस २ समय में या जिन जिन वर्षों में या जिन मासों में सूर्य मेष राशि पर हो या सिंह राशि पर हो या कुम्भ राशि पर हों या धन राशि पर हों और सूर्य का साथ छोड़कर बृहस्पति भी इन्हीं चारों स्थानों में कहीं भी हों तो विद्या काल के समय विद्या में सफलता व सहायता मिलेगी और संतान प्राप्ति के समय संतान पक्षमें सफलता व सहायता मिलेगी और शुक्र या चन्द्र इन दोनों में से भी कोई सिंह या कुम्भ राशि पर जब २ कभी कोई आवेंगे, तब २ भी विद्या और संतान पक्ष को सहायता व सुख की प्राप्ति होगी और सूर्य का मिथुन व कर्क पर आना भी विद्या व संतान पक्ष के लिये अनुकूल ही रहेगा और शनी का सिंह राशि पर मंगल का सिंह राशि पर आना भी संतान व विद्या के पक्ष में अनुकूल ही रहेगा और इसी प्रकार ऊपर लिखी हुई राशियों में से कोई भी ग्रह यदि जन्म कुण्डली के अन्दर इन २ राशियों में, जो-जो ग्रह भी बैठे होंगे तो वह ग्रह विद्या व संतान और वाणी की शक्ति आदि के विषय में बहुत श्रेष्ठ फल प्रदान करेंगे, किन्तु सूर्य के साथ कोई ग्रह अन्त होगा तो फल बहुत उत्तम नहीं दे सकेगा। और यदि बुद्ध जन्म के समय पंचांग की गोचर प्रणाली से जब २ कभी, सिंह या कुम्भ पर आयेंगे या जन्म के समय होंगे तब २ भी विद्या व विवेक की शक्ति के लिये श्रेष्ठ रहेंगे और संतान पक्ष के लिये कुछ दिक्कतों के साथ कुछ अच्छा फल प्रदान करेंगे और राहू या केतू जब २ कभी भी सिंह राशि पर आवेंगे तब २ संतान पक्ष में व विद्या स्थान में हानि या परेशानी पैदा करते हैं और सूर्य जब २ कन्या, तुला, वृश्चिक, मीन, वृष इन दो राशियों में आवेंगे तब २ विद्या व संतान व दिमाग को परेशानी पैदा करते हैं।

कु० न० ५



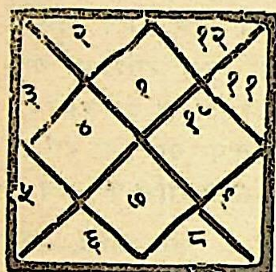
पंचांग के अन्दर जिस २ समय में मंगल मेष राशि पर आते हैं या वृश्चिक राशी पर आते हैं या सिंह राशि पर आते हैं या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर आते हैं और वृहस्पति जब २ कर्क राशि या वृश्चिकराशि पर आते हैं और शनी वृश्चिक राशि पर आते है तब २ आयू के सम्बन्ध में व उदर सम्बन्ध में शक्ति पैदा करते हैं और पुरातत्व सम्बन्धी लाभ की योजनायें पैदा करते हैं और जीवन की दिनचर्या के प्रभाव की व रौनक की शक्ति प्रदान करते हैं तथा जीवन की निर्वाहक शक्ति में सहायता पैदा करते हैं और इसी प्रकार की राशियों में यदि यह कोई भी ग्रह जन्म के समय जन्म कुण्डली में, इनमें से, मंगल या गुरू कोई भी बैठे होंगे तो पुरातत्व सम्बन्धित शक्ति को व आय की वृद्धि के लिये तथा जीवन की रौनक व उदर के सम्बन्ध तथा जीवन की निर्वाहक शक्ति के लिये वहुत श्रेष्ठ समझे जायेंगे और यदि मंगल, मीन राशि पर या कर्क राशि पर या कन्या राशि पर होंगे या चन्द्रमा वृश्चिकराशि पर हों या राहू या केतू वृश्चिक राशि पर होंगे तो पुरातत्व शक्ति व आयू व उदर के स्थान में एवं जीवन की दिनचर्या आदि सभी मामलों में परेशानियों के योग पैदा करते हैं और यदि मंगल वृष या मिथुन तो भी आयू के सम्बन्ध में या पुरातत्व शक्ति के संबन्ध में व जोवन की दिनचर्या की रौनक के सम्बन्ध में कुछ अच्छे ही रहेंगे, और मङ्गल का कन्या पर होने से इन सब विषयों में कुछ २ अच्छे और कुछ २ वुरे फल प्रदान करेंगे और इसी प्रकार इनको भी जन्म कुण्डली के अन्दर जहाँ भी मंगल बैठे हों उसी प्रकार का फल कारक समझना चाहिये जैसा कि ऊपर हर राशियों में इनका फल लिखा हुआ है।

कु० नं० ६



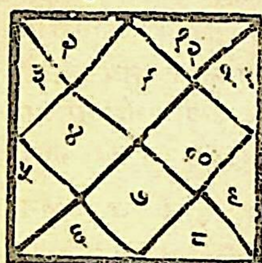
पंचाँग के अन्दर जिस २ समय और जिस २ मास व वर्षों व दिनों में शुक्र, मेष राशी पर या कर्क राशि पर या तुला राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या जब २ आवेंगे या शनी, मेष राशि पर या सिंह राशि पर या तुला राशि पर या मकर राशि पर जब२ कभी आवेंगे या चन्द्रमा, तुला राशि पर या मेष राशि पर जब २ कभी आवेंगे तब २ स्त्री स्थान में सुख की प्राप्ति और दैनिक रोजगार के स्थान में उन्नति पैदा करते हैं और भोगादिक पक्ष के स्थानों में सुख के साधन पैदा करते हैं और यदि जन्म के समय जन्म कुण्डली के अन्दर भी कहीं यह शुक्र, शनी, इन तीनों से कोई भी या सभी ऊपर लिखी राशियों में ही यदि बैठे होंगे तब तो, स्त्री स्थान का व दैनिक रोजगारके स्थान का बड़ा ही सुन्दर सुख मिलेगा और वृद्धि के साधन पैदा होते ही रहेंगे और यदि शुक्र, वृष या मिथुन या सिंह या धन इन २ राशियों पर कहीं हुए या बुद्ध और गुरू, तुला राशि पर हुए या गुरू,मेष,मिथुन,कुम्भ इन तीन राशियों पर कहीं हुएतो स्त्री स्थान में व दैनिक रोजगार के स्थान में, कुछ कुछ अनुकूल, शक्ति, थोड़ी सी दिक्कत के साथ प्रदान करते रहेंगे और यदि सूर्य तुला राशि पर या मेष राशि पर हुए मंगल, मेष, कर्क, तुला, मीन इन २ राशियों पर कहीं भी हुए या राहू या केतू तुला राशि पर या मेष राशि पर कहीं भी हुए तो स्त्री स्थान में व दैनिक रोजगारके स्थान में दिक्कतें पैदा करते रहते हैं यह योग चाहे जन्म कुण्डली में हो या पंचाँग के द्वारा भूत, भविष्य वर्तमान में हो सभी में इसी प्रकार का फल प्रदान करते हैं किन्तु अच्छे समय का विचार करते वख्त या कुण्डली के अच्छे ग्रहों का विचार करते वख्त यह ध्यान रखना जरूरी है कि सूर्य से अच्छे कभी अस्त नहीं होने चाहिये और जो २ ग्रह २९ अंश से ज्यादा और एक अंश से कमती होंगे तो वह ग्रह बहुत ही थोड़ा असर करते हैं।

कुं० नं० ७



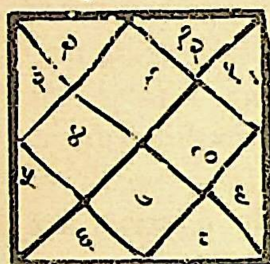
पंचाँग के अन्दर जिस २ मास में व जिस २ वर्ष में वृहस्पति, मेष राशि या सिंह राशि पर आवें या सूर्य धनराशि पर आवें या चंद्रमा धन राशी पर आवें या शनी, धन राशि पर आवें, तथा भाग्य धर्म और भक्ति का विचार उदय होगा और सतमार्ग का अनुसरण होगा तथा ईश्वरीय शक्ति की सहायता प्राप्त होगी तथा सज्जनताई में नाम होगा और शुक्र और मंगल तथा बुद्ध के धन राशि पर आने से भी, धर्म और भक्ति व ईश्वरीय शक्ति की सहायता का कुछ अधूरा सुख प्राप्त होगा। और यदि जन्म के समय में जन्म कुण्डली में भी यह उपरोक्त सभी ग्रह यदि इन्हीं २ राशियों में बैठे होंगे या जो २ ग्रह भी इस लिखे के अनुसार जन्म कुण्डली में, इन२ राशियों में बैठे होंगे तो वह इन २ विषयों के लिये अर्थात् ईश्वरीय मार्ग के लिये श्रेष्ठ होगा और सदैव सहायक समझा जायगा। और यदि वृहस्पति मकर राशि पर जब जब कभी आवेंगे या राहू धन राशी पर जब जब कभी आवेंगे तब तब भाग्य धर्म, भक्ति व ईश्वरीय सहायक बल की कमी रहेगी और भाग्य पर कुछ चिंतायें माननी पड़ेंगे तथा कुछ अधार्मिक कार्य करने में प्रवृत्ति, स्वार्थ की ओर बढ़ेगी यह सभी बातें दोनों तरफ लागू होती हैं कि चाहे तो इन उपरोक्त २ राशियों में ग्रह जन्म कुण्डली में बैठे हों और चाहें पंचांग की गोचर प्रणाली से भूत भविष्य वर्तमान में जब जब कभी इन२ राशियों में यह ग्रह आयेंगे तो फल इसी प्रकार का देंगे किन्तु दोनों स्थितियों में जो २ ग्रह श्रेष्ठ होता है वह पूर्ण श्रेष्ठ फल का देने वाला होता है और जो जो ग्रह एक स्थिति में श्रेष्ठ होता है वह आधा फल करता है किन्तु यह ध्यान रखना और जरूरी है कि एक तो सूर्य से कोई ग्रह अस्त न हो और दूसरे कोई अच्छा ग्रह बुरे ग्रह के साथ न हो और कोई ग्रह शून्य अंश न हो।

कु० न० ८



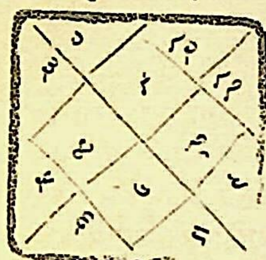
पंचाँग के अन्दर जिस २ समय में मंगल मेष राशि पर या तुला राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या मिथुन राशि पर जब २ कभी आयेंगे या सूर्य मेष राशि पर आवेंगे या चन्द्रमा मेष राशि पर आवेंगे या शुक्र मेष राशि पर आवेंगे या बृहस्पति मेष राशि पर आवेंगे या बृहस्पति, सिंह या धन राशि पर आवेंगे, तब २ देह को सुख व ख्याति प्राप्त होगी तथा देह में बल और सुन्दरता की वृद्धि होगी आत्म बल की जाग्रती होगी। और यदि इसी प्रकार इन्हीं इन्हीं राशियों में जो जो कोई ग्रह जन्म समय में जन्म कुण्डली के अन्दर भी इसी प्रकार बैठे होंगे तो वह ग्रह देह को बहुत ही श्रेष्ठ फल देने वाले सिद्ध होंगे। और मंगल जब कभी कन्या राशी पर या धन राशि पर आवेंगे तब तब भी देह में आत्मबल की वृद्धि होगी और इसके विपरीत यदि मंगल वृषभ राशि पर या कर्क राशि पर या वृश्चिक राशि पर या मीन राशि पर जब २ कभी आवेंगे या शनी,मेष राशि पर या कर्क राशि पर या तुलाराशि पर या कुम्भ राशि पर जब २ कभी आवेंगे राहू या केतू मेष और तुला राशि पर जब २ कभी आवेंगे तब तब देह और आत्मा को अशाँती प्राप्त होगी और देह की सुन्दरता में कमी पैदा होगी। यह उपरोक्त ग्रह योग चाहे जन्म कुण्डली में हों चाहे पंचाग की ग्रह गोचर प्रणाली में, फल दोनों में एकसा होगा और यदि दोनों में ही सुन्दर अच्छे बैठ गये तब तो बहुत श्रेष्ठ फल होगा किन्तु दोनों ही प्रकारों में यह सोचना आवश्यक है कि कोई अनुकूल होने वाला ग्रह सूर्य से अस्त तो नहीं है या २९ अंश से अधिक और १ अंश से कमती तो नहीं है क्योंकि ऐसा होने से ग्रहों की ताकत कमजोर हो जाती इसलिये पूरा फल नहीं देते हैं।

कु० न० ६



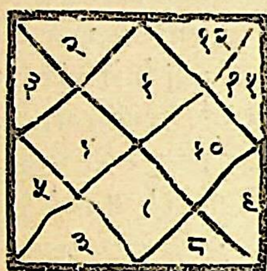
पंचाँग के अन्दर जिस २ समय में बुद्ध, मेष राशि पर या मिथुन राशि पर या कन्या राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर जब २ कभी आवेंगे या सूर्य कन्या राशि पर आवेंगे या मंगल कन्या राशि पर या कुम्भ राशि पर जब जब कभी आवे या शनीश्चर कन्या राशि पर व धन राशि पर व कर्क राशि पर जब २ कभी आवेगा या राहू या केतू–कन्या और मीन राशि पर, इन सब ग्रहों में से जब २ कभी कोई आवेंगे तब २ शत्रु से विजय होगी, तथा दिक्कतों से छुटकारा पाकर हिम्मत की वृद्धि होगी और यदि चन्द्रमा या वृहस्पति–कन्या राशि पर आवेंगे तो शत्रु पत्त में शाँती से कार्य निकालना पड़ेगा और यदि जन्म कुण्डली में भी इसी २ प्रकार के ग्रह ऊपर लिखी राशियों में कहीं न कहीं बैठे होंगे तो शत्रु पत्त में बहुत सुन्दर योग जीवन के लिये समझा जायेगा और इसके विपरीत यदि बुध, वृश्चिक राशि पर या मीन राशि पर या वृषभ राशि पर हुआ या शुक्र कन्या राशि पर या मीन राशि पर हुआ तो शत्रु पत्त से व कुछ झंझटों से अशाँती रहेगी और रोग तथा दिक्कतों के सम्बन्धों में कुछ हानि व परेशानी रहेगी और यदि बुध कर्क सिंह, तुला, धन, मकर राशियों पर कहीं भी हुआ तो, शत्रु पत्त से या किसी प्रकार की दिक्कतों से कुछ थोड़ी सी शांती भंग होती है। इसी प्रकार बुध यदि जन्म के समय इन्हीं २ राशियों पर कहीं भी बैठे होंगे तो ऊपर लिखे अनुसार ही फल प्रदान करेंगे। बुध प्रायः सूर्य से अस्त होते रहते हैं अतः जब २ बुध अस्त होंगे तब २ बुद्धी व अन्य कारणों से शत्रु पत्त में या किसी भी दिक्कतों के पत्त में अशाँती सी प्रतीत होती रहेगी।

कुं० नं० १०



पंचाँग के अन्दर जिस २ समय में चन्द्रमा, मेष राशि पर, वृषभ राशि पर, कर्क राशि पर या तुलाराशि पर धन राशि पर, मकर राशि पर कुम्भ राशि पर, इन सबों में से कहीं किसी भी राशि पर हों और यदि बृहस्पति भी कर्क राशि पर हों और शुक्र भी कर्क राशि पर हों और शनी, भी कर्क राशि पर हों या इनमें से एक दो ग्रह इस प्रकार हों या सभी इस प्रकार हो अर्थात् जितने अधिक ग्रह होंगे उतना ही अधिक आराम सुख की प्राप्ती होंगी और भूमि मकानादि की सुख शक्ति प्राप्त होंगी तथा माता के सम्बन्ध में सुख प्राप्त होगा। और जन्म के समय में यदि इसी २ प्रकार की राशियों में जन्म कुण्डली के अन्दर यह ग्रह बैठे हों तो, सुख और आराम के पक्के साधन व मकानादि भूमि आदिकी शक्ति व माता का सुख, सभी चीजें खूब प्राप्त होती रहती और यदि चन्द्रमा, मिथुन या सिंह, पर कहीं भी आये या जन्म कुण्डली में ही इन राशियों पर कहीं बैठा हुआ हो तो उक्त विषय में मध्यम फल मिलेगा किन्तु इसके विपरीत यदि, चन्द्रमा, कन्या राशि पर या वृश्चिक राशि पर या मीन राशि पर कहीं भी हों तथा मङ्गल, राहू केतू, इनमें से कोई भी कर्क पर हों, तो चाहे जन्म के समय, जन्म कुण्डली में हों चाहे पंचाँग की गोचर गति से किसी भी समय में हो तो, सुख की प्राप्ति में हमेशा कंटक प्राप्त होंगे और भूमि मकानादि का व माता का सुख भी ठीक प्राप्त नहीं होगा। किन्तु जो ग्रह अच्छे फलदायक लिखे यह हैं सूर्य से अस्त नहीं होने चाहिये, यदि अस्त होंगे तो वह ग्रह पूरा २ फल नहीं फल देते है और यदि कोई भी ग्रह २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह निर्बल होने से पूरा २ फल प्रदान नहीं करता है।

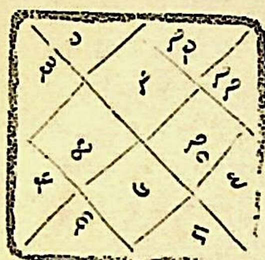
कुं० नं० ११



पंचांग के अन्दर जिस २ समय में या जिन २ वर्षों व मासों में व दिनों में शनी धन राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या वृषभ राशि पर या कर्क राशि पर या तुला राशि पर जब २ कभी आवेंगे तथा मंगल मिथुन राशि पर या तुला राशि पर या मकर राशि पर जब २ कभी आवेंगे या शुक्र मकर राशि पर जब २ कभी आवेंगे या चन्द्रमा मकर राशि पर जब २ कभी आवेंगे, तब २ पिता स्थान में व बड़े कारबार के स्थान में अपने वित्त अनुसार उन्नति सफलता व मान सम्मान प्राप्त करते हैं और यदि जन्म के समय यही सब ग्रह, जन्म कुण्डली के अन्दर भी इन्ही २ राशियों में कहीं न कहीं बैठे हों तो पिता स्थान में व बड़े कारबार के स्थान में पक्की उन्नति के सदैव साधन प्राप्त होते रहते हैं और मान सम्मान की अच्छी प्राप्ति होती रहती है। और यदि शनी सिंह या मिथुन राशि पर या कन्या राशि पर होंगे या बुध मकर राशि पर होंगे तो भी, पिता स्थान में व बड़े कारबार के स्थान में, थोड़ी बहुत तरक्की होती रहती है। चाहे यह योग जन्म कुण्डली में हो चाहे पंचांग की गोचर गति में हो। किन्तु इसके विपरीत ग्रह योग इस प्रकार होय कि शनी, मीन राशि में या वृश्चिक राशि में या मेष राशि में हों और बृहस्पति, मकर राशि में हो या राहू या केतू भी कोई मकर राशि में हो तो यह ग्रह योग, पिता स्थान में व बड़े कारोबार के स्थानमें,कुछ न कुछ खराबी अवश्य करेंगे चाहे यह ग्रहयोग जन्म कुण्डली में हों और चाहे पंचाँग की ग्रह गोचर प्रणाली में दोनों में ही इसी प्रकार का काम करेंगे। और यदि अच्छे ग्रहों में से कोई ग्रह सूर्य से अस्त होंगे तो उत्तम फल नहीं देंगे और यदि कोई भी ग्रह २९ अंश से ज्यादे हों या १ अंश से कमती होगा तो यह निर्बल होता है।

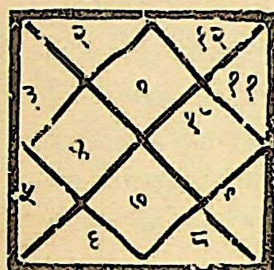
रंग व मणियाँ तथा ग्रहों के गुण दोष स्वभाव कर्म का फलादेश

कु० नं० १२



(गु०) मेष लग्न वाले व्यक्तियों को भाग्य, धर्म, खर्च, बाहरी स्थानों का उत्तम संपर्क तथा ठोस धर्म की कुछ कमजोरी इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह बृहस्पति हैं इनका स्वभाव बड़प्पन वाला तथा खर्चीला है इनका रंग पीलाहै इनकी मणी पुखराज हैं यह उन्नति प्रदान करने में बाहरी स्थानों के संबन्ध तथा कुदरती खर्च की शक्ति से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह है–६ धन ११ कुम्भ, १–मेष–३ मिथुन–४ कर्क–५ सिंह ७ तुला और नेष्ठ राशियाँ यह हैं–१० मकर–६ कन्या–८ वृश्चिक–१२ मीन और सामान्य राशियाँ यह हैं–२ वृशभ। (श०) मेष लग्न वाले व्यक्तियों को पिता, राज्य, व्यौपार कर्म, मान,प्रतिष्ठा,हकूमत, आमद आवश्यकताओं की प्राप्ति शानदार लाभ इत्यादि योगों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शनी है इनका स्वभाव कठोर स्वार्थ-युक्त अहंकारी है इनका रङ्ग नीला है इनकी मणी नीलम है यह उन्नति करने में बड़े आडम्बर युक्त महान कार्य की शक्ति से काम लेते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं–१० मकर, ११ कुम्भ २ वृषभ, ५ सिंह, ७ तुला, ६ धन, ३ मिथुन, और नेष्ठ राशियाँ यह हैं १ मेष, १२ मीन, ८ वृश्चिक और सामान्य–६ कन्या। (मं०) मेष लग्न वाले व्यक्तियों को देह, स्वरूप, आत्मबल, ख्याति, आयु पुरातत्व दिन चर्या उदर का सम्बन्ध इत्यादि रोगों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह मंगल हैं इनका स्वभाव बड़ा गरम है, इनका रङ्ग लाल है इनकी मणी मूंगा है, यह उन्नति प्रदान करने में गुप्त युक्तियों से व पुरातत्व शक्ति से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं–१ मेष–२ मिथुन५–सिंह–७ तुला–१० मकर–११ कुम्भ–६ कन्या और नेष्ठ राशियाँ हैं—१२ मीन–४ कर्क और सामान्य राशियाँ यह हैं–६ धन–२ वृषभ–८ वृश्चिक।

कुं० न० १३

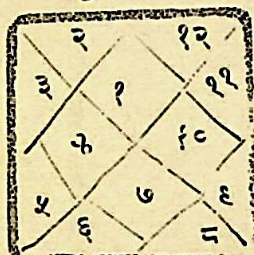


(शु०) मेष लग्न वाले व्यक्तियों को धन, कुटुम्ब कोष, स्त्री, दैनिक रोजगार इन्द्रिय भोगादिक शक्ति इत्यादि योगों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शुक्र हैं इनका स्वभाव बड़ा चतुर और लौकिक भोग सफलता पानेका है इनका रङ्ग सफेद है इनकी मणी हीरा है, यह उन्नति प्रदान करने में, नित्य प्रति के कार्य क्रम और धन की शक्ति से काम लेते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं–१० मकर–११ कुम्भ–१ मेष –२वृषभ–३ मिथुन –४ कर्क –५ सिंह–७ तुला–९ धन नेष्ट राशियाँ यह हैं ६ कन्या–८ वृश्चिक–१२ मीन।

(बु०) मेष लग्न वालों को बहन भाई पराक्रम, हाथों की महनत, शत्रु का सम्बन्ध, पेचीदा विवेक, ननसाल पक्ष इत्यादि योगों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह बुध हैं, इनका स्वभाव कोमल और परिश्रमी है इनका रंग हरा है, इनकी मणी पन्ना है, इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं–३ मिथुन–४ कर्क–५ सिंह–६ कन्य–७ तुला–९ धन–१० मकर–११ कुम्भ–१ मेष –२ वृषभ और नेष्ठ राशियाँ यह हैं वृश्चिक १२ मीन।

(चं०) मेष लग्न वालों को, माता मातृ भूमि, मकान जायदाद सुख शाँती मनोवल इत्यादि योगों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फददाता ग्रह चन्द्रमा हैं। इनका रङ्ग उज्ज्वल है इनका स्वभाव महान शीतल शान्ती युक्त है, इनकी मणी मोती है इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं–४ कर्क–५ सिंह–७ तुला–९ धन–१० मकर–११ कुम्भ–१ मेष–२ वृषभ–मिथुन३ और नेष्ठ राशियाँ हैं–६ कन्या–८वृश्चिक यह बुरे से बुरे समय में भी मन की ताकत के योग से कुछ न कुछ सुख शाँती प्राप्त कर ही लेते हैं।

कु० न० १४

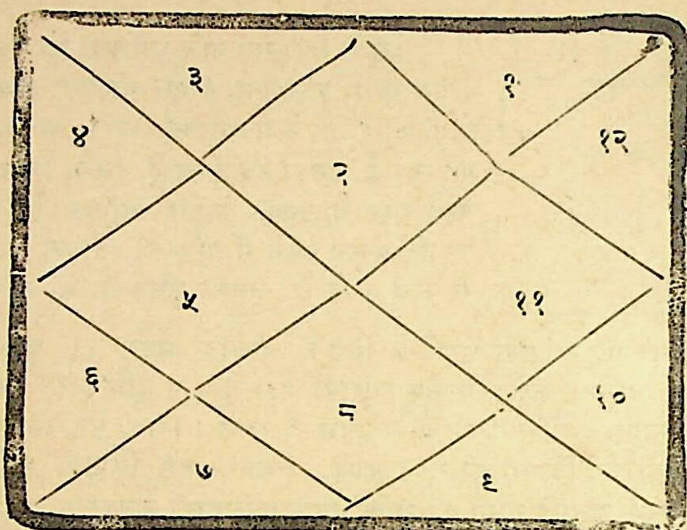


(सू०) मेष लग्न वाले व्यक्तियों को विद्या संतान बुद्धि, दूरदर्शता, वाँणी की तेजो इत्यादि योगों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह सूर्य हैं, इनका रङ्ग लाल है, इनका स्वभाव बहुत गरम है, इनकी मणी माणिक है, वह उन्नति प्रदान करने में बुद्धि की तीक्ष्ण शक्ति से कार्य करते हैं। उनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं-५ सिंह-९ धन-१० मकर ११ कुम्भ-१ मेष-३ मिथुन-४ कर्क और नेष्ठ राशियाँ हैं-७ तुला ८ वृश्चिक-१२ मीन और सामान्य राशियाँ यह हैं–२ वृषभ–६ कन्या। (रा०) मेष लग्न वाले व्यक्तियों को, दिमाग की गुप्त चालें, चिन्ता, कष्ट छिपाव, अधिक लाभ सूझ इत्यादि योगों की शक्ति प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह राहु हैं, इनका रङ्ग काला है, इनका स्वभाव दुखदाई है इनकी मणी गोमेध है, यह उन्नति प्रदान करने में गुप्त युक्तियों से काम लेते हैं, इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं–३ मिथुम–६ कन्या–११ कुम्भ और सामान्य राशियाँ यह हैं–५ सिंह–१० मकर–१२ मीन।

(के०) मेष लग्न वालों को, बाहुबल की गुप्त शक्ती, हृदय का गुप्त साहस, चिन्ता कष्ट, कटुता, अधिक लाभ के लिये महान कष्ट साध्य प्रयत्न इत्यादि योगों की शक्ती के प्रधान अधिकारी केतु हैं, इनका रङ्ग काला है, इनका स्वभाव कष्ट प्रद है, इनकी लहसनियाँ है, यह उन्नति प्रदान करने में महान कठिन कार्य की पूर्ति का अनुसरण करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं–६ कन्या–९ धन ११ कुम्भ और नेष्ठ राशियाँ यह हैं २७वृषभ ४ कर्क–१ मेष–८ वृश्चिक५–सिंह और सामान्य राशियाँ यह हैं–७ तुला–१० मकर–१२ मीन ३ मिथुन।

वृष लग्न फलादेश प्रारम्भ

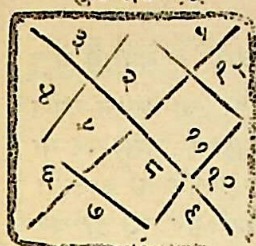






इस वृषभ लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सुख और धन लाभ के सम्बन्ध में मुख्य ग्रह प्रायः सू० सू० म० चं० ही हैं और अधिकांश इन्हीं ग्रहों के रंग व मणियां धनोन्नति संबंधी सभी व्यापारादि कार्यों में लाभप्रद सिद्ध होंगे, किन्तु राशि और स्थानान्तर के भेद से प्रायः सभी ग्रह अच्छे और बुरे फल के सूचक बन जाते हैं जैसा कि आपको कुण्डली नं० १५ से लेकर कुण्डली नं० २८ तक में विचारहेतु इन सभी ग्रहों का भाग्य के हर एक विषय में भिन्न २ फलादेश महान् सरल रूप से जानने को मिलेगा।

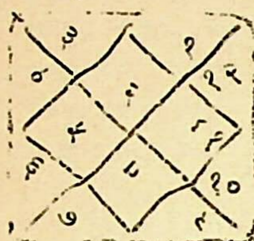
कु० न० १५



पंचाँग के अन्दर जिस २ दिनों में चन्द्रमा मिथुन राशि पर या मीन राशि पर आवेंगे तव २ धन लाभ उत्तम रहेगा और जब जब चन्द्रमा मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या कन्या राशि पर भी आवेंगे तब २ भी लाभ का योग रहेगा और यदि इसी दो प्रकार की राशियों का चन्द्रमा जन्सके समय में यदि जन्म कुण्डली में भी ऐसा ही कहीं बैठ जाय तो और भी मनोयोग की ताकत से हमेशा लाभ कर सकता है किन्तु इसके विपरीत यदि चद्रमा वृश्चिक राशी पर या धन राशी पर या मेष राशी पर यातुला राशी पर जब २ आवेंगे तव २ कुछ मानसिक बल की कमजोरी तथा कुछ अशाँति अनुभव करेंगे और जन्म कुण्डली में भी यदि ऐसा ही चन्द्रमा बैठ जायगा तो हमेशा ही संकट प्राप्त कराता है और यदि चन्द्रमा कर्क, वृष, सिंह इनमें से कहीं भी हुआ तो भी मनोबल की शक्ति प्राप्त होती रहेगी !

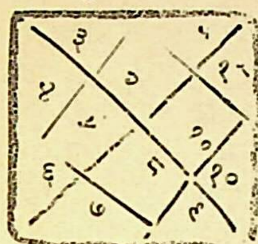
वृषभ लग्न वालों को धन लाभ का मासिक फलादेश—

जिस २ मास में बुध, मिथुन या मकर कुम्भ या सिंह राशि पर आवेंगे या खास तौर से शुक्र मीन या मिथुन राशि पर आवेंगे या सूर्य मीन या मिथुन राशि पर आवेंगे तब २ धन का लाभ उत्तम रहेगा। यदि इसी प्रकार की राशियों में यह तीनों ग्रह कहीं जन्म के समय में जन्म कुण्डली में भी बैठे हुए होंगे तो धन लाभ की प्राप्ती में हमेशा सहायता देने वाले समझे जायेंगे। किन्तु यदि सूर्य से बुध या शुक्र अस्त हुआ तो सुन्दर लाभ नहीं हो सकेगा या जन्म कुण्डली में इन ग्रहों में से कोई भी ग्रह २६ अंश से अधिक हुआ तो भी फल उत्तम नहीं मिल सकेगा और इसके विपरीत फल के लिये यदि बुध तुला, धन या मीन राशि पर आवेंगे या मंगल, मिथुन या धन या मेष या मीन राशि पर आवेंगे या मंगल मिथुन राशि पर आवेंगे तब २ धन के लिये हानि कारक योग पैदा करते रहेंगे।



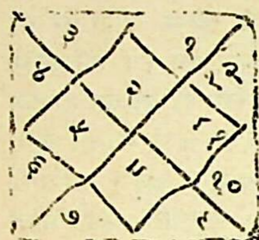
पंचाँग के अन्दर जिस २ वर्षों में में व मासों में शनी वृषभ राशि पर या मिथुन राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशी पर या मीन राशि पर जब २ कभी आवेंगे या बृहस्पति कर्क राशि पर या मीन राशि पर या वृश्चिक राशि पर जब २ कभी आवेंगे या केतू मीन राशि पर जब २ कभी आयेंगे, तब २ उन वर्षों में धन का लाभ श्रेष्ठ रहेगा और उन्नति के मार्ग प्राप्त होते रहेंगे और यदि जन्म के समय में जन्म कुण्डली अन्दर भी यह ग्रह इन्ही राशियों में कहीं बैठे होंगे, तब तो बहुत ही उत्तम लाभ करने का योग बनता है और इसके विपरीत यदि केतू मिथुन राशि पर हुआ या मंगल मिथुन राशि पर होता हुआ और यदि बृहस्पति कर्क राशि पर हुआ या मेष राशि पर हुआ या तुला राशि पर या धन राशि पर हुआ और यदि शनि मेष राशि पर या धन राशि पर हुआ तो उन२ वर्षों में धन की कुछ हानियाँ तथा उन्नति स्थानों में निराशायें प्राप्त होती रहती हैं। और यह ग्रह योग चाहे जन्म कुण्डली में हों और चाहे पंचाँग गोचर में किसी भी प्रकार में हों किन्तु दोनों में फल निराशाओं का व नुकसान का पैदा करते हैं और उत्तम फल देने वाले ग्रहों के सम्बन्ध में यह जानना जरूरी है कि कोई भी ग्रह ~६ अंश से अधिक और १ अंश से कम न हो अन्यथा फल पूरा २ प्राप्त नहीं हो सकेगा और जिन जिन वर्षों में श्रेष्ठ ग्रह आते हैं उन २ वर्षों में मासिक ग्रहों का श्रेष्ठ आना भी जरूरी है तभी उत्तम फल की प्राप्ती होती रहती है।

कु० नं० १७



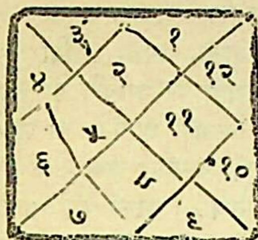
पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में खासतौर से शनि वृषभ राशि पर या कुम्भ राशि पर या मकरराशि पर आवें या और तब बुध भी कुम्भ राशि पर हों या शनि के साथ हों या वृष,मिथुन मकर,कुम्भ इन २ राशियों पर कहीं भी हों और शुक्र भी वृषभ मकर,कुम्भ,मीन इन २ राशियों पर कहीं भी हों तथा वृहस्पति, कर्क, मीन वृश्चिक राशि पर कहीं भी हों और सूर्य कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक मीन इन इन राशियों पर कहीं भी हों और चंद्रमा वृषभ,मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, मकर, कुम्भ, मीन, इन २ राशियों पर कहीं भी हों और राहू, मिथुन, तुला, मीन पर कहीं हों और केतू ,धन कर्क तुला पर कहीं भी हों। अतः यह सभी ग्रह ऊपर लिखे अनुसार ही किसी न किसी राशियों में ही होने चाहिये, तभी राजयोग का समय माना जावेगा ! इस प्रकार यह ग्रह योग पंचाग की गोचर गति से जिस जिस समय में आकर लगेगा, तब तब ही राजकारक, उन्नति दायक मान प्रतिष्ठा सूचक योग प्राप्त हुआ करेगा और इसी प्रकार के ग्रह योग जिस २ मनुष्य की कुण्डली में भी बैठे होते हैं दर असल में राजयोग का पूरा २ फल तो उसी २ मनुष्य को प्राप्त होता है, यदि इन श्रेष्ठ ग्रहों में से कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या अंश बल से २७ अंश से अधिक या ३ अंश से कमती होगा तो उन ग्रहों का श्रेष्ठ फल उचित रूप से कभी भी प्राप्त नहीं होता है। किन्तु पंचाँग से जिस २ समय में ग्रह योग आवेंगे तब २ इस कुण्डली के आधार पर फल तो उत्तम अवश्य ही प्राप्त होगा किन्तु जन्म कुण्डली में भी यदि उत्तम ग्रह योग हो तब तो सोने में सुगन्ध का कार्य है।

कु० न० १



पंचाँग के अन्दर जिस २ वर्षों में व मासों में व दिनों में शनी कन्या राशि पर आवेंगे या कर्क राशि पर आवेंगे या बृहस्पति कन्या राशि पर जब २ कभी आवेंगे या बुध कन्या राशि पर जब २ कभी आवेंगे या राहू कन्या राशि पर जब २ कभी जावेंगे या सूर्य जब २ कन्या राशि पर आवेंगे या चन्द्रमा जब२ कन्या राशि पर आवेंगे तब २ सन्तान पक्ष को तथा विद्या स्थान को तरक्की और उन्नति प्राप्त होती है। और इसी २ प्रकार की राशियों में यदि जन्म कुण्डली के अन्दर भी यह सभी ग्रह या इनमें से कोई एक दो भी इन कन्या राशि पर बैठे होंगे तो संतान पक्ष में व विद्या स्थान में दोनों में ही तरक्की व सफलता शक्ती प्राप्त होती रहती है किन्तु यदि इसके विपरीत तुम तुलाराशि पर या धनराशि पर या मेष राशि पर या मीन राशि पर कहीं भी होंगे या मङ्गल कन्या राशी पर होंगे या शुक्र कन्या राशि पर होंगे या केतू कन्या राशि पर होंगे तो सन्तान पक्ष में व विद्या के स्थानमें दोनों में ही कमी व कमजोरी प्राप्त होगी यदि वह ग्रह इस प्रकार जन्म कुण्डली में बैठे होंगे तब तो बहुत ही हानिकारक समझे जायेंगे और यदि पंचाँग की गोचर प्रणाली से जब २ कभी यह आवेंगे तब २ यह हानिकारक तथा दिमाग को परेशान करने वाले होंगे। और ऊपर लिखे अनुसार ग्रहों में से यदि जो २ ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह अच्छा या बुरा कोई भी फल विशेष शक्तिशाली नहीं दे सकता है और जन्म लग्न में भी श्रेष्ठ ग्रह हों और पंचांग की चालमें भी श्रेष्ठ हों तब तो इस समय में बहुत ही सुन्दर फल प्राप्त होता है।

कुं० नं० १६

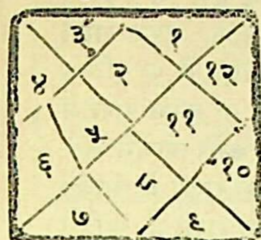


पंचाग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में व दिनों में मङ्गल वृश्चिक राशी में व मकर राशा में व कुम्भ राशी में व मीन राशी में व वृषभ राशी में व सिंह राशी में आवेंगे और शनीश्चर जी, वृश्चिक राशी में जब २ कभी आवेंगे या बुध वृश्चिक राशी में जब २ आवेंगे या सूर्य जब २ कभी वृश्चिक राशी में आवेंगे, तब २ स्त्री स्थान में व दैनिक रोजगार के स्थान में तरक्की व लाभ सुख पैदा करते हैं और यदि शुक्र या गुरू भी कोई जब २ कभी वृश्चिक राशी पर आवेंगे, तब २ कुछ परेशानियों के साथ स्त्री पक्षमें दैनिक रोजगार की लाइन में लाभ का योग पैदा करते हैं। किन्तु इसके विपरीत मङ्गल, धन राशी पर या मेष राशी पर या मिथुन राशी पर या कर्क राशी पर या तुला राशी पर जब जब कभी आवेंगे या चन्द्रमा या राहू या केतू कोई भी वृश्चिक राशी पर जबर कभी आवेंगे, तबर स्त्री पक्ष व दैनिक रोजगार की लाइनमें कुछ न कुछ परेशानी व कुछ हानि का योग पैदा करतेहैं.यदि ऊपर लिखे अनुसार जन्म के समय में यह सभी ग्रहों में से कोई भी यह जन्म कुण्डली में इस २ प्रकार के यदि बैठेंगे,तो वह ग्रह विशेष फलदायक होंगे अर्थात् जन्म के समय जो ग्रह जैसा पड़ जाता है अच्छा या बुरा वह ग्रह उसी प्रकार का फल जीवन में अधिक रूप से देता रहता है और जो २ ग्रह पंचाग गोचर से आते हैं, वह अपना फल निश्चित अवधि तक में विशेष रूपसे किया करते हैं। जो २ ग्रह सूर्य से अस्त होंगे या २८ अंश से अधिक या २ अंश से कमती होंगे, वह ग्रह प्रायः अच्छा या बुरा फल पूर्ण रूप से नहीं कर पाते हैं, यह विचार कर लेना चाहिये।

कुं० नं० २०

पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों व जिस २ मासों में खासतौर से शनी, मकर राशि पर आवेंगे या शुक्र, मकर राशि पर आवेंगे या बुध मकर राशि पर जब २ कभी आवेंगे या सूर्य मकर राशि पर आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी मकर राशि पर आवेंगे, तब २ भाग्य की शक्ति से व दैवी शक्ति से कोई लाभ उन्नति प्राप्त होती है और धर्म तथा ईश्वर भक्ति का भी चमत्कार उदय होता है और इसी प्रकार की राशि मकर में यदि जन्म के समय जन्म कुण्डली में भी इन २ ग्रहों में से कोई भी एक या दो या तीन या चार कोई ग्रह बैठ जाय तो सारे जीवन में अधिकांश यह ग्रह दैवी शक्ति के योग से लाभकारी सिद्ध होते हैं और धर्म व ईश्वर भक्ति और सत-मार्ग का अनुसरण प्राप्त करवाते हैं और इसके विपरीत यदि शनि, जब २ कभी मेष राशि में या धन राशि में आवेंगे, तब २ हमेशा धर्म की हानि व भाग्य की परेशानी तथा कुछ अपयश की प्राप्ति करते हैं और कुद-रती तौर से बनने वाले कार्यों में विघ्न पड़ते हुए दिखलाई देते रहते हैं। इस प्रकार से ग्रह योग चाहे जन्म कुण्डली में हो या पंचांग की ग्रह गोचर प्रणाली में हो, फल दोनों में ही इसी प्रकार का करते हैं किन्तु जो २ ग्रह जितने २ समय तक सूर्य से अस्त रहेगा, या जो २ ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह अपना फल पूरी २ ताकत से नहीं देता है, बल्कि वह अपने वित्त के दायरे से बहुत थोड़ा फल देता रहता है।

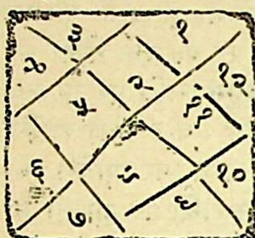
कुं० नं० २१



पंचांग के अन्दर जिन-जिन वर्षों में व जिस २ मासों में व दिनों में बृहस्पति वृश्चिक राशि पर या धन राशि पर या मीन राशि पर या वृष राशि पर या मिथुन राशि पर या कर्क राशि पर या सिंह राशि पर जब २ कभी आवेंगे और शनी जब २ धन राशि पर आवेंगे या सूर्य जब २ कभी भी धन राशि पर आवेंगे या बुध जब २ कभी भी धन राशि पर आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी भी धन राशि पर आवेंगे, तब २ आयु, उदर व स्थान में शक्ति पैदा करते हैं और पुरातत्व शक्ति के सम्बन्ध में, लाभ सुख का योग पैदा करते हैं, और यदि इसके विपरीत बृहस्पति जब २ कभी मकर राशि पर या मेष राशि पर या तुला राशि पर आवेंगे, और मङ्गल जब २ कभी धन राशि पर आवेंगे या राहू जब २ कभी धन राशि पर आवेंगे तब २ आयु व पुरातत्व स्थान में परेशानी व क्लेश पैदा करते हैं, और यदि कोई भी ग्रह या सभी ग्रह ऊपर लिखी राशियों के अनुसार जहाँ कहीं भी जन्म के समय में जन्म कुण्डली में बैठे होंगे तो उन २ ग्रहों का इस प्रकरण में विशेष फल प्राप्त होता है, और जीवन भर उन ग्रहों का प्रायः उसी २ प्रकार का फल प्राप्त होता रहता है, जैसा कि जन्म के समय में जो ग्रह जिस २ प्रकार का बैठ जाता है, और यदि इन ग्रहों में से कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या कोई भी ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो उस ग्रह का फल बहुत ही थोड़ी तादाद में प्राप्त होता है क्योंकि वह ग्रह शक्तिहीन सा होता है, और यदि बृहस्पति, कुम्भ राशि पर या कन्या राशि पर होंगे तो भी आयु निर्वाह तथा पुरातत्व शक्ति के विषय में कुछ-कुछ अच्छा ही फल प्रदान करते हैं।

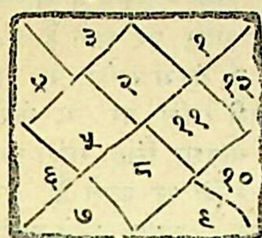
 वृषभ लग्न वालों को, देह तथा आत्मबल व सुन्दरता, ख्याती का फलादेश

कुं० नं० २२



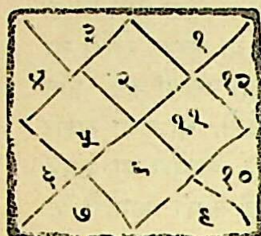
पचाङ्ग के अन्दर जिन २ वर्षों में व जिस जिस मास व दिनों में, शुक्र, वृषभ राशी में या कर्क राशी में या सिंह में या वृश्चिक राशी में या मकर राशीमें या कुम्भ राशीमें या मीन राशी में, जब २ कभी आवेंगे और चन्द्रमा, जब २ कभी वृषभ राशी में आवेंगे या शनी जब २ कभी वृषभ राशी में आवेंगे या बुध जब २ कभी वृषभ राशी में आवेंगे तब-तब देह संबन्धी और आत्मबल व सुन्दरता सम्बन्धी उन्नति व सुख और प्रभात की शक्ती प्रदान करते हैं। और यदि इसके विपरीत, शुक्र जब २ कभी मिथुन राशी पर या कन्या राशी पर या तुला राशीपर या धन राशी पर या मेष राशी पर जब २ कभी आवेंगे या मङ्गल, वृषभ राशी पर या गुरू वृषभ राशी पर या राहू वृषभ राशी पर या केतू वृषभ राशी पर जब २ कभी आवेंगे, तब २ देह सम्बन्धी व आत्मबल और ख्याती, सुन्दरता सम्बन्धी परेशानी का योग पैदा करते हैं। और यदि जन्म के समय में भी, इसी प्रकार की राशियों में, जो २ ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा, तो वह ग्रह ऊपर लिखे अनुसार सारे जीवन भर, प्रायः इसी २ प्रकार का फल देता रहता है। अर्थात् जन्म के समय, अच्छा ग्रह पड़ जाय तो अच्छाई का योग सदैवके लिये और बुरा ग्रह पड़ जायतो बुराईका योग सदैव के लिये प्रायः प्राप्त होता ही रहता है इसके अतिरिक्त यदि कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो उस ग्रह का फल बहुत कम प्राप्त होगा, क्योंकि वह ग्रह शक्ति हीन होता है। और समय समय पर पंचाग की गोचर प्रणाली के ग्रहों का फलादेश, उपरोक्त लिखे अनुसार भी अवश्य होता रहता है।

कुं० नं० २३



पंचांग के अन्दर जिन-जिन वर्षों में व जिन २ मासों व दिनों में शुक्र तुला राशि पर या मकर राशी पर या कुम्भ राशि या मीन राशी या वृषभ राशी पर या कर्क राशि पर जब-जब कभी आवेंगे, या तुला राशी पर शनी जब-जब कभी आवेंगे या मकर राशी पर शनी जब-जब कभी आवेंगे या राहू या केतू कोई भी जब २ तुला राशी पर आवेंगे या मंगल तुला राशी पर जब २ कभी आवेंगे, तब-तब शत्रु पक्ष में व रोग के पक्ष में, विजय का योग पैदा करते हैं। और इसके विपरीत यदि शुक्र कन्या राशी पर या धन राशि पर या मेष राशी पर या तुला राशी पर जब-जब कभी आवेंगे या सूर्य तुला राशी पर जब-जब कभी आवेंगे या चन्द्रमा तुला राशी पर जब २ कभी आवेंगे या बुध तुला राशी पर जब २ कभी आवेंगे तब-तब शत्रु पक्ष में या कुछ दिक्कतों के पक्ष में या रोग के पक्ष में कुछ परेशानी का योग पैदा करते हैं। यदि ऊपर लिखे अनुसार यही ग्रह जन्म के समय में, कहीं जन्म कुण्डली में भी इन्हीं २ राशियों में जो कोई ग्रह बैठा हुआ होगा तो वह ग्रह अपना फल विशेष रूप से जीवन में दिया करता है और जीवन भर अपना असर ऊपर लिखे अनुसार ही प्रायः दिखलाता रहता है। यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या कोई भी ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या २ अंश से कम होगा, तो वह ग्रह अपना फल नहीं के बराबर देता है क्योंकि वह ग्रह शक्ती हीन होता है, और बहुत ही सूक्ष्म फल प्रदान करता है।

कुं० नं० २४



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में व दिनों में सूर्य सिंह राशि पर आते हैं या सूर्य वृश्चिक राशि पर या कुम्भ राशि पर या मीन राशि पर या वृषभ राशि पर या कर्क राशि पर आते हैं, या चन्द्रमा सिंह राशि पर आते हैं, या शुक्र सिंह राशि पर आते हैं, या शनी सिंह राशि पर आते हैं, तब २ सुख प्राप्ति के साधन व भूमि सम्बन्धी साधन व मातृ पक्ष सम्बन्धी साधन सभी अनुकूल और सुन्दर प्राप्त होते, और इसके विपरीत यदि सूर्य जब २ कभी तुला राशि में या धन राशि में या मेष राशि में आवेंगे या मङ्गल सिंह राशि में या गुरू सिंह राशि में या राहू सिंह राशि में या केतू सिंह राशि में जब २ कभी आवेंगे तब २ सुख शान्ति में व मातृ पक्ष में व मकानादि, रहने के स्थानों में तीनों पक्षों में अनेक प्रकार की विघ्न-बाधा पैदा होती रहती है और यदि जन्म के समय यह सभी ग्रह ऊपर वाली राशियों के अनुसार जो-जो कोई भी जन्म कुण्डली में बैठे होंगे तो वह ग्रह ऊपर लिखे अनुसार तीनों विषयों में विशेष फल देने के जीवन में सदैव योग पैदा करते रहते हैं, चाहे कोई ग्रह अनुकूल बैठा हो या प्रतिकूल जैसा भी बैठा होगा वैसा ही असर जीवन में सदा दिखाता रहता है, इसके अतिरिक्त जो २ कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या जो कोई भी ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या कोई भी ग्रह १ अंश से कम होगा वह ग्रह अपना पूरा असर लिखे अनुसार नहीं दिखा सकेगा ।

कुं० नं० २५

पंचांग के अन्दर जिन-जिन वर्षों में जिन-जिन मासों व दिनों में शनी, कुम्भ राशि पर या वृषभ राशि पर आवेंगे तथा सूर्य जब-जब कुम्भ राशि पर आवेंगे या बुध जब-जब कुम्भ राशि पर आवेंगे या शुक्र जब २ कुम्भ राशि पर आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कुम्भ राशि पर आवेंगे तब २ बड़े कारबार सम्बन्ध में तथा पिता व मान के पक्ष में, उन्नति व योग पैदा करते हैं, और इसके विपरीत यदि शनि, मेष राशि पर या धन राशि पर जब-जब कभी आवेंगे या मङ्गल कुम्भ राशि पर जब-जब कभी आवेंगे या गुरू कुम्भ राशि पर जब २ कभी आवेंगे या राहू कुम्भ राशि पर या केतू कुम्भ राशि पर जब २ कभी आवेंगे तब २ पिता या मान या उन्नति के व्यौपार आदि कार्यों में कुछ परेशानी व कुछ हानियों का योग पैदा करते हैं, और यदि जन्म के समय में जो-जो कोई ग्रह भी ऊपर लिखी राशियों में से किसी २ राशि में भी यदि जन्म कुण्डली में बैठा होगा तो वह ग्रह बहुत ही प्रबल फल देने वाला होता है, और यदि शुभ राशियों में बैठा होगा तो शुभ फल सदैव देता रहेगा और यदि अशुभ राशि में कहीं बैठा होगा तो सदैव अशुभ फल देता रहेगा। इसके अतिरिक्त जो कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा तो, या जो कोई भी ग्रह २६ अंश से अधिक होगा या जो कोई ग्रह १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह अपना फल ऊपर लिखे अनुसार अच्छा या बुरा किसी भी प्रकार का पूरा-पूरा फल दे नहीं सकता है।

 वृषभ लग्न वालों को, रेस आदि सभी व्यापार कर्मों के लिये लाभकारी रंग, मणियां तथा ग्रहों के गुण दोषादि का फलादेश

कुं नं० २६

३ १ ४ २ १२ ५ ११ ६ ८ १० ७ ९

(शनी) इस प्रकार की वृषभ लग्न वालों को, सबसे प्रमुख उन्नति दायक ग्रह शनी है, यह शनी भाग्य की ताकत से व ईश्वरीय सहायक शक्ती से तथा पिता स्थान की शक्ती से व राज-समाज तथा व्योपार आदि आदि की शक्ती से, उन्नति के कारण बनाते हैं, यह शनी इन सभी शक्तियों के स्वामी हैं, इसका रङ्ग काला व कुछ गहरा नीला है, इसके स्वभाव में सतोगुण व रजोगुण की प्रधान्यता है-इनकी इस कुण्डली में बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं—नं० २-३-४-६-७-८-१०-११-१२ किन्तु प्रमुख राशियां १०-११-१२-२ है, इनकी मणी नीलम है, यह मान प्रतिष्ठा, धर्म, कर्म सभी उत्तम कार्यों के प्रमुख अधिकारी हैं।

(बु०) इस वृषभ कुण्डली वालों को धन, जन, संतान, विद्या, बुद्धी, विवेक, वाणी इन सब चीजों के अधिकारी फलदाता ग्रह बुध हैं। यही इन सर्व गुणों को प्रदान करने की शक्ती पैदा करते हैं। इनका रंग हरा है, स्वभाव में बचपन है। इनकी मणी पन्ना है, यह महान् विवेकी ग्रह हैं, इनकी इस कुण्डली में बैठने की प्रमुख, उत्तम लाभप्रद राशियां-३-५-१०-११-२-६-८ यह हैं। और इनकी-७-९-१२ १—यह राशियां नेष्ट हैं, यह बुद्धी योग द्वारा धन दिलाते हैं।

(गु०) इस वृषभ कुण्डली वालों को लाभ और आमदनी के संबंध में तथा आयु और पुरातत्व सम्बन्धी कार्यों में तथा जीवन की दिनचर्या और निर्वाह शक्ती के सम्बन्ध में-इन सभी सम्बन्धों में प्रधान अधिकारी बृहस्पति हैं। इनका रंग पीला है, स्वभाव में बुजुर्गी है, लाभ के लिये बड़ी भारी चाल चलते हैं इनकी मणि पुखराज है, इनके बैठने की प्रधान राशी, अंक—१२-४-८-श्रेष्ठ हैं और ७-१०-१ नेष्ट हैं। इनका हृदय की शक्ती पर स्थान रहता है और यह मुसीबत में भी लाभ का साधन कुछ न कुछ हृदय बल के द्वारा करते रहते हैं।

कुं० नं० २७

३		१
४	२	१२
५		११
६	८	१०
७		९

(शु०) इस वृषभ कुण्डली वालों को देह के सम्बन्धों में तथा शत्रु और रोग के सम्बन्धों में तथा ननसाल पक्ष व झगड़े झंझटों के सम्बन्धों में तथा आत्मबल व देह की सुन्दरता तथा हृदय की पेचीदा चालों के सम्बन्ध में इन सभी संबंधों के शुक्र प्रधान अधिकारी हैं, इनका रंग सफेद है, स्वभाव में गहरी युक्तियों का योग है तथा स्वाभिमान की प्रधानता है, इनकी मणि हीरा है, इनकी बैठने की श्रेष्ठ राशियों के अंक यह–२–८–१०–११–१२–३–४–५ हैं और नेष्ट अंक–६–९–१–यह हैं, यह बुरे समय में भी देह के द्वारा प्रभाव की शक्ती देते हैं।

(मं०) इस वृषभ कुण्डली वालों को–स्त्री सम्बन्ध में व दैनिक रोजगार के संबंध में तथा खर्च के संबंध में तथा बाहरी संबंधों में तथा इन्द्रिय भोगादिक संबंधों में अर्थात् सभी संबंधों में मंगल प्रमुख अधिकारी है। इनका रंग लाल है, इनकी मणि मूंगा है, इनका स्वभाव गरम है, खर्च की और हानि की शक्ती रखते हैं। इनको बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं–अंक–८–१०–१२–१–५ इन-इन अंकों पर बैठना ही मंगल का कहीं तक ठीक है अन्यथा एक प्रकार से यह जहां भी बैठेंगे वहां उस स्थान में कुछ न कुछ खराबी अवश्य करेंगे और ४–९ यह दोनों नेष्ठ अंक हैं।

(सू०) इस प्रकार की वृषभ लग्न वालों को, सुख सम्बन्धी मामलों में तथा मकान जायदाद के सम्बन्धों में तथा शान्ता और तेज की प्राप्ति के सम्बन्धों में सूर्य प्रधान अधिकारी हैं। इनका रंग सुनहला-लाल है, इनका स्वभाव महान् गरम है और स्वरूप महान् तेजस्वी है, इनकी मणि माणिक है। इनके बैठने की श्रेष्ठ राशियां इस प्रकार हैं–अंक–२–३–४ ५–६–८–१०–११–१२ इन-इन अंकों पर बैठना इनका शुभ और आनन्ददायक है और ७–९ पर बैठना नेष्ट है।

कुं० नं० २८

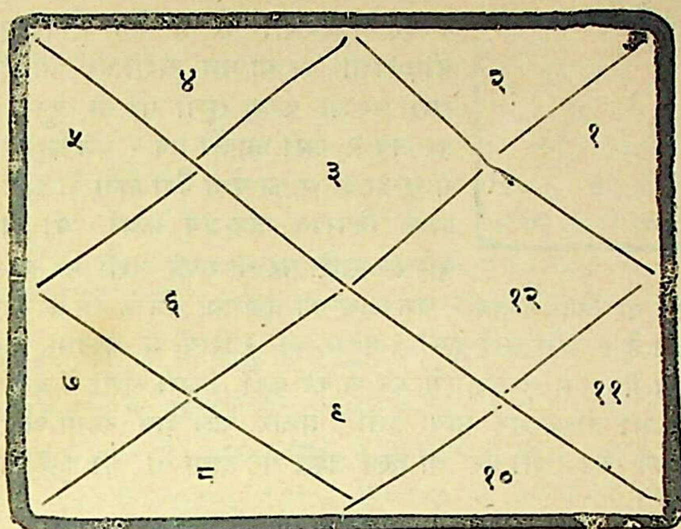
३ १ ४ २ १२ ५ ११ ६ ८ १० ७ ९

(चं०) इस वृषभ लग्न वालों को बाहुबल की शक्ति तथा मानसिक शक्ति तथा बहन भाइयों की शक्ति व देह के अन्दर की ढांचा शक्ति, इन सभी चीजों के प्रधान अधिकारी चन्द्रमा हैं, इनका रङ्ग सफेद उज्वल चमकदार है। इनकी मणि मोती है, इनका स्वभाव बहुत ही शीतल है । इनके बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं, अंक २–३–४–५–६–१०–११–१२–इन अंकों पर इनका बैठना श्रेष्ठ शक्ति-दायक है, और ७–८–९–१ इन अंकों पर बैठना नेष्ठ है, यह मन की शक्ति पर रह कर काम करते हैं।

(रा०) इस वृषभ लग्न वालों को दिमाग की गुप्त चालाकियां तथा गुप्त युक्तियाँ तथा वित्त के ज्यादे लाभ पाने की सूक्ष्म तथा कुछ कष्ट व कुछ कमी इत्यादि चीजों के प्रधान अधिकारी राहू हैं, इनका रंग काला है, स्वभाव में छिपाव और कटुता है, इनकी मणि गोमेध है। इनके बैठने की राशियां इस इस प्रकार श्रेष्ठ रहती हैं। राशि अंक ३–४–७–१२ इन-इन अंकों पर वह अपनी चतुराई से लाभ योग बनाते हैं और इनका –९–धन राशि पर बैठना नेष्ट है और यह बुरे समय में भी गुप्त रूप से जीवन शक्ति देते हैं।

(के०) इस वृषभ लग्न वालों को अपने बाहुबल के गुप्त कर्म की महान शक्ति एवं गुप्त बहादुरी तथा अन्धाधुन्दी कार्य संचालन शक्ति तथा कुछ कमी और कुछ कष्ट इत्यादि शक्तियों के प्रधान अधिकारी केतू हैं । इनका रंग काला है, स्वभाव में कटुता व गुप्त धैर्य है, इनकी मणि लहसनियां है, और इनके बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं—अंक–४–७–९–१२ इन-इन अंकों पर यह अपनी दृढ़ता शक्ति से बैठकर अन्त तक में और भी लाभप्रद रहते हैं किन्तु इनका अंक ३ मिथुन पर बैठना नेष्ट है।

मिथुन लग्न फलादेश प्रारम्भ



इस मिथुन लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सुख और धन लाभ के सम्बन्ध में मुख्य ग्रह प्रायः चं० मं० गु० ही हैं और अधिकांश इन्हीं ग्रहों के रंग व मणियां धनोन्नति संबंधी सभी व्यापारादि कार्यों में लाभप्रद सिद्ध होंगे, किन्तु राशि और स्थानान्तर के भेद में प्रायः सभी ग्रह अच्छे और बुरे फल के सूचक बन जाते हैं जैसा कि आपको कुण्डली नं० २९ से लेकर कुण्डली नं० ४२ तक में आपको इन सभी ग्रहों का भाग्य के हर एक विषय में भिन्न २ फलादेश महान सरल रूप से जानने को मिलेगा।

कु० नं० २६

४		७
५	२	१
६		१२
७	६	११
८		१०

जिन जिन दिनों में चन्द्रमा पंचांग के अन्दर कर्क राशी पर या मेष राशी पर या मीन राशी पर या धन राशी पर या मिथुन राशी पर या कन्या राशी पर या कुम्भ राशी पर जब २ कभी आवेंगे तब २ धन के सम्बन्धों में सुन्दर लाभ का योग पैदा होता है, और यदि इसके विपरीत जब-जब कभी भी चन्द्रमा वृश्चिक राशि पर या मकर राशी पर या वृषभ राशी पर आवेंगे तब २ धन लाभ की कमी या धन के कष्ट का अनुभव करता है। और यदि इसी २ प्रकार की राशियों में चन्द्रमा, जन्म के समय में जन्म कुण्डली में भी आकर कहीं किसी राशी में बैठा होगा तो सभी जीवन भर प्रायः इसी २ प्रकार फल देता रहेगा और यदि चन्द्रमा सिंह राशी पर या तुला राशी पर होगा तो भी कुछ लाभप्रद रहेगा।

धन लाभ का मासिक फलादेश

इस मिथुन लग्न में जन्म लेने वालों को जिस २ मास व समय में पंचांग के अन्दर बुध कर्क राशी पर या मेष राशी पर आवेंगे या सूर्य मेष राशी पर या कर्क राशी पर आवेंगे या मंगल मेष राशी पर या कन्या राशी पर आवेंगे या शुक्र, मेष राशी पर जब २ कभी आवेंगे तब २ धन का लाभ अच्छा प्राप्त होता रहेगा। और यदि इसके विपरीत बुध जब २ कभी मीन राशी में या वृषभ राशी में या वृश्चिक राशी में आवेंगे या मंगल जब-जब कभी कर्क राशी में या वृषभ राशी में आवेंगे या सूर्य जब-जब कभी वृषभ राशी में आवेंगे या शुक्र जब २ कभी वृषभ राशी में या कर्क राशी में आवेंगे, तब २ धन लाभ की हानि या लाभ की कमी पैदा करते हैं। और यदि जन्म के समय जन्म कुण्डली में भी यह सब ग्रहों में से कोई भी ग्रह ऊपर लिखी हुई राशियों में से कहीं भी कोई बैठा होगा तो वह सारे जीवन भर प्रायः इसी ऊपर लिखी स्थिति के अनुसार ही अपना फल हमेशा देता रहता है।

कुं० नं० ३०

पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में व दिनों में बृहस्पति कर्क राशि पर या मेष राशी पर या मीन राशी पर या धन राशी पर या सिंह राशी पर जब २ कभी आवेगा या राहू मिथुन पर या मेष पर जब २ कभी आवेगा या केतु धन राशी पर या मेष पर या सिंह राशी पर जब जब कभी आवेगा या वृश्चिक राशी पर या धन राशी पर जब-जब कभी आवेगा, तब-तब उन वर्षों में धन लाभ की वृद्धि होगी और इसके विपरीत यदि जिन-जिन वर्षों में बृहस्पति बृषभ राशी में या मकर राशी में आवेगा या राहू कर्क राशी में या धन राशी में आवेगा या केतू मिथुन राशी या कर्क राशी में आवेगा या शनि मेष राशी में जब कभी आवेगा तो उन वर्षों में लाभ की कमी व धन की कुछ हानि पैदा होती है। इसी प्रकार यदि जन्म के समय में कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर ऊपर लिखी राशियों के अनुसार कहीं भी कोई बैठा होगा, तो वह अपना फल ऊपर के लिखे अनुसार प्रायः सारे जीवन भर कुछ न कुछ अधिकांश रूप में देता ही रहता है। उत्तम फल देने वाले ग्रहों के सम्बन्ध में यह जानना जरूरी है कि कोई ग्रह सूर्य से अस्त तो नहीं है, और कोई ग्रह २९ अंश से अधिक या २ अंश से कम तो नहीं है यदि कोई ग्रह अस्त ऐसा है तो चाहे जन्म कुण्डली के ग्रह हों या पंचांग गोचर के ग्रह हों, उन ग्रहों का फलादेश पूर्ण रूपेण प्राप्त नहीं हुआ करता है। जिन-जिन वर्षों में वार्षिक ग्रह श्रेष्ठ आते हैं, उन उन वर्षों में मासिक ग्रह भी जब श्रेष्ठ आते हैं, तब २ धन लाभ सम्बन्धी उत्तम फल अधिक प्राप्त होता रहता है।

कुं० नं० ३१

४		२
५	३	१
६		१२
७	९	११
८		१०

पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में व दिनों में खास तौर से सभी ग्रह प्रायः इस प्रकार हों अर्थात् जिन २ वर्षों में बृहस्पति मीन राशि पर या कर्क राशी पर हो और राहू मिथुन राशि पर या मेष राशि पर हो और केतू धन राशि पर या मेष राशि पर हो और शनी वृश्चिक राशि पर या धन राशि पर या कुम्भ राशि पर हो और सूर्य मेष राशी पर या सिंह राशि पर हो और बुध मिथुन राशि या कुम्भ राशि पर हो और मङ्गल मेष राशि पर या सिंह राशि पर हो और शुक्र वृष राशि पर या तुला राशि पर हो और चन्द्रमा तो केवल वृश्चिक राशि व मकर राशि को छोड़कर कहीं भी घूमते रहें, अतः जब २ कभी उम्र के किसी भी समय में यह सभी ग्रहों का योग पंचांग द्वारा ऊपर लिखी स्थिति के अनुसार आता है, तब-तब ही प्राणी का राजयोग का समय समझा जाता है और यदि जन्म के समय में भी कहीं इसी २ प्रकार की राशियों में यह ग्रह जन्म कुण्डली में भी जिस पुरुष के बैठे होंगे, तो असली राजयोग उसी पुरुष को प्राप्त होता है, और प्रायः ऐसे मनुष्य की जिन्दगी का अधिकांश भाग अमीरी के ही रूप से व्यतीत होता। किन्तु यदि इन श्रेष्ठ ग्रहों में से कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या कोई भी ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या कोई भी ग्रह १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह अपना श्रेष्ठ फल पूर्ण रूप से कदापि नहीं दे सकता है क्योंकि वह निर्बल है इसलिये थोड़ी मात्रा में कार्य कर सकेगा।

कु० नं० ३२

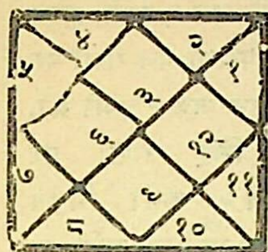
पंचांग के अन्दर जिन-जिन वर्षों में व मासों में व दिनों में शनी, तुला राशि पर पर या सिंह राशि पर जब २ कभी भी आवेंगे या वृहस्पति जब-जब कभी मिथुन राशि पर या तुला राशि पर या कुम्भ राशि पर या मेष राशि पर जब २ भी आवेंगे या बुध जब २ कभी तुला राशि पर या मेष राशि पर आवेंगे या मंगल जब २ कभी मीन राशि पर या तुला राशि पर जब २ कभी आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी तुला राशि पर आवेंगे या शुक्र जब २ कभी तुला राशि पर या मेष राशि पर या मीन राशि पर या मिथुन राशि पर या कुम्भ राशि पर जब २ कभी आवेंगे, तब २ इन सभी ग्रहों योगों में विद्या, बुद्धि, सन्तान, वाणी की शक्ति इन चीजों में सफलता व उन्नति की मार्ग शकित पैदा करते हैं और इसके विपरीत यदि सूर्य जब २ कभी तुला राशि पर या मेष राशि पर आवेंगे या राहू या केतू जब २ कोई तुला राशि पर आवेंगे या शुक्र जब २ कभी वृश्चिक राशि पर या मकर राशि पर या वृषभ राशि पर या कन्या राशि पर जब २ भी कभी आवेंगे तब २ यह सभी ग्रह योग सन्तान पक्ष और विद्या, वाणी आदि के पक्ष में विपरीत कार्य करेंगे और यही ग्रह योग यदि जन्म के समय जन्म कुण्डली में भी ऊपर लिखी स्थिति के अनुसार कोई ग्रह किसी भी राशि में यदि बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन पर ही ऊपर वाले फलादेश के अनुसार ही फल देता रहता है। किन्तु यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक और १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह अपना पूरा २ फल नहीं दे सकता है क्योंकि वह ग्रह निर्बल स्थिति में है।

मिथुन लग्न वालों को आयु व उदर व पुरातत्व व जीवन निर्वाह के सम्बन्धों का फलादेश

कुं० नं० ३३

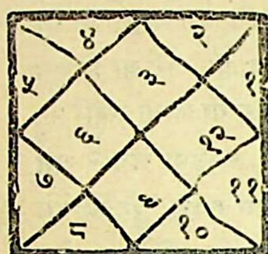
पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व जिन २ मासों में व दिनों में शनी मकर राशी पर या कुम्भ राशी पर या बृश्चिक राशी पर या कर्क राशी पर या तुला राशी पर या मिथुन राशि पर जब २ कभी भी इन २ राशियों पर आवेंगे या मंगल जब २ कभी मकर राशी पर या मिथुन राशी पर या तुला राशी पर जब २ आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी मकर राशी पर आवेंगे या बुध कर्क राशी पर जब २ कभी आवेंगे तब २ आयु व उदर सम्बन्ध में व पुरातत्व सम्बन्धों में व जीवन निर्वाह के सम्बन्ध में लाभ और उन्नति का मार्ग पैदा करते हैं और इसके विपरीत यदि बृहस्पति जब २ कभी मकर राशी पर या कर्क राशी पर या वृषभ राशी पर जब २ कभी आवेंगे या शुक्र मकर राशी पर या कर्क राशी पर जब २ कभी आवेंगे या शनी जब २ कभी वृषभ राशी पर या सिंह राशी पर जब कभी मकर राशि पर व कर्क राशी पर जब २ कभी आवेंगे तब २ आयु संबंध में व पुरातत्व सम्बन्ध में व जीवन निर्वाह के सम्बन्ध में, कमजोरियां व हानियां पैदा करते हैं और इसी २ प्रकार के ग्रह जन्म के समय में यदि जन्म लग्न में भी इन्हीं २ राशियों में जो २ कोई भी ग्रह बैठा होगा तो वह ग्रह जीवन भर प्रायः इसी २ प्रकार का फल देता रहा करेगा और जो जो ग्रह यदि कोई सूर्य से अस्त होगा या २६ अंश से अधिक होगा या एक अंश से कम होगा तो वह २ ग्रह अपना पूरा-पूरा फल पूरी पूरी शक्ति से नहीं दे सकेगा।

कुं० नं० ३४



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में या मासों में व दिनों में वृहस्पति धन राशी पर था मीन राशी पर या मेष राशी पर या मिथुन राशी पर या सिंह राशी पर या कन्या राशी पर जब २ कभी आवेंगे। या चन्द्रमा जब २ धन राशी पर आवेंगे या मिथुन राशी पर आवेंगे या सूर्य जब २ धन राशी पर आवेंगे या केतू जब २ भी धन राशी पर आवेंगे या वुध जब २ कभी धन राशी पर या मिथुन राशी पर जब २ कभी आवेंगे या मंगल भी जब २ धन राशी पर या कन्या राशी पर या मिथुन राशी पर जब २ कभी आवेंगे तब तब स्त्री पक्ष में वह दैनिक रोजगार के पक्ष में लाभ व तरक्की का योग पैदा करते हैं और इसके विपरीत यदि शुक्र जब २ कभी धन राशी पर आवेंगे या राहू जब २ कभी धन राशी पर आवेंगे य शनी जब २ कभी मीन राशी पर आवेंगे, तब तब स्थान में व दैनिक रोजगार के स्थान में कुछ हानि व परेशानी पैदा करते हैं। और यदि इसी प्रकार की राशियों में जन्म के समय में कोई ग्रह यदि जन्म कुण्डली में भी ऊपर लिखे अनुसार कहीं भी बैठा होगा, तो वह ग्रह सारे जीवन भर प्रायः इसी प्रकार का उपरोक्त फलादेश के अनुसार हमेशा फल देता रहेगा। यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या कोई भी ग्रह यदि २९ अंश से अधिक होगा या कोई भी ग्रह यदि १ अंश कम होगा तो उस ग्रह का फल कभी भी पूरी २ शक्ती युक्त नहीं मिल सकेगा क्योंकि वह ग्रह हमेशा निर्बल स्थिति माना जाता है।

कु० नं० ३५

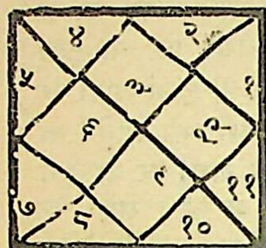


पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में वह दिनों में शनी, जब २ कभी, कुम्भ राशी पर या सिंह राशी पर या धन राशी पर जब २ आवेंगे और या बुध जब २ कभी भी, कुम्भ राशी पर या सिंह राशी पर आवेंगे या बृहस्पति जब २ कभी मिथुन राशी पर या तुला राशी पर या कुम्भ राशि पर जब २ कभी आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी कुम्भ राशी पर या सिंह राशी पर आवेंगे, या सूर्य जब २ कभी कुम्भ राशी पर आवेंगे, तब २ धर्म, भाग्य, भक्ती, व देवी शक्ति के गुणों में अर्थात् सभी बातों में उन्नति व लाभ योग पैदा करते हैं। और इसके विपरीत यदि, शनी, वृषभ राशी में या मेष राशी में या बृश्चिक राशी में या मकर राशी में, जब २ कभी आवेंगे या शुक्र जब २ कभी भी कुम्भ राशी में या सिंह राशी में जब २ कभी आवेंगे और राहू या केतू जब २ कभी भी कुम्भ राशी में या सिंह राशी में आवेंगे तब २ धर्म, भाग्य, भक्ति व देवी शक्ती, आदि २ कार्यों में विफलता का योग पैदा करते हैं। और यदि जन्म के समय में भी जन्म कुण्डली के अन्दर कहीं कोई ग्रह इसी प्रकार की राशियों में ऊपर लिखे अनुसार यदि बैठा होगा तो, वह ग्रह तो अपना फल सारे जीवन भर प्रायः ऊपर लिखे अनुसार ही सदैव देता रहता है। और यदि कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह प्रायः नहीं के बराबर ही सूक्ष्म फल देता रहेगा क्योंकि वह ग्रह शक्ती हीन अवस्था में होता है।

कुं० नं० ३६

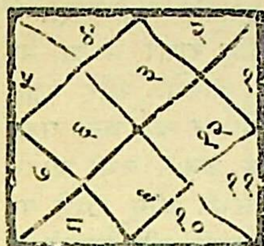
पंचाग के अन्दर जिन २ वर्षों में या मासों में व दिनों में बुध मिथुन राशी पर या सिंह राशी पर या कन्या राशी पर या तुला राशी पर या धन राशी पर या कुम्भ राशी पर या मेष राशी पर जब २ कभी भी आवेंगे या वृहस्पति जब २ कभी मिथुन राशी पर या तुला राशी पर या धन राशी पर या कुम्भ राशी पर जब २ कभी आवेंगे या सूर्य जब २ कभी मिथुन राशि पर या सिंह राशि पर या मेष राशि पर जब २ कभी आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी मिथुन राशी पर या धन राशि पर आवेंगे या मङ्गल जब २ कभी सिंह राशि पर आवेंगे या राहू जिस २ वर्षों में मिथुन राशि पर आवेंगे या शनी जब २ कभी वृश्चिक राशि में आवेंगे तब २ ऐसे ग्रहों के प्रभाव से देह को आनन्द उमङ्ग और स्फूर्ति व आत्मबल तथा सुन्दरता प्राप्त होती है। किन्तु इसके विपरीत यदि बुध वृषभ राशि में या कर्क राशि में या वृश्चिक राशि में या मकर राशि में या मीन राशि में जब २ कभी आवेंगे या शुक्र जब २ कभी मिथुन राशि पर या धन राशी पर आवेंगे या मङ्गल मिथुन राशि पर व मीन राशि पर व धन राशि पर व वृश्चिक राशि पर जब २ कभी आवेंगे या शनी मेष राशि पर जब २ कभी आवेंगे या केतू मिथुन राशि पर जब २ कभी आयेंगे, तब २ देह पक्ष की सुन्दरता व शांती में विघ्न बाधा व दिक्कतें पैदा करते हैं। इसी प्रकार यदि जन्म के समय में यह सब ग्रहों में से कोई भी ग्रह सब या थोड़े ऊपर लिखी राशियों के अन्दर यदि जन्म कुण्डली में भी बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही इस २ प्रकार का फल अधिकांश रूप में ही देते रहते हैं। इसके अतिरिक्त यदि कोई भी सूर्य से अस्त होगा या २४ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा, तो वह ग्रह अपनी पूरा २ फल पूरी पूरी शक्ति सहित नहीं कर पाते हैं।

कुं० नं० ३७



पंचाग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में व दिनों में मंगल, मेष राशी में या सिंह राशी में या वृश्चिक राशी में या मीन राशी में जब २ कभी आवेंगे और या बृहस्पति जब २ कभी, कर्क राशी में या वृश्चिक राशी में या मीन राशी में, जब २ आवेंगे या सूर्य जब २ कभी वृश्चिक राशी में आवेंगे, और शनी जब २ कभी वृश्चिक राशी में या कुम्भ राशी में या कन्या राशी में जब २ आवेंगे और राहू या केतू दोनों में कोई भी जब कभी वृश्चिक राशी पर आवेंगे तब २ शत्रु पक्ष में, लाभ और विजय, तथा रोग, झगड़े झंझट आदि के विषय में, मुक्ति का मार्ग पैदा करते हैं। और इसके विपरीत यदि मगंल जव २ कभी वृषभ राशी में कर्क राशी में, आवेंगे और या चन्द्रमा जब २ कभी वृश्चिक राशी में आवेंगे, और या शुक्र, जब २ कभी वृश्चिक राशी में आवेंगे और या बुध जब २ कभी वृषभ राशि में आवेंगे, तब तब शत्रु पक्ष से व झगड़े झंझट तलब मामलों से अशांती का योग पैदा करते हैं। और यदि जन्म के समय में इन सब ग्रहों में से जो जो भी ऊपर लिखी राशियों के अनुसार, जन्म कुण्डली में भी बैठे होंगे तो वह सभी ग्रह, प्राय सारे जीवन भर उपरोक्त विषयक फल देते रहेंगे, किन्तु इतना ध्यान अवश्य करें कि जो कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली में या पंचांग देखते समय यदि २६ अंश अधिक होंगा या जो २ ग्रह १ अंश से कम होगा तो वह गृह अपना २ फल पूरी शक्ती के अनुसार नहीं दे सकते हैं, 'क्योंकि यह निर्बल होते हैं।'

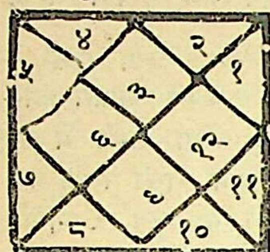
कुं० नं० ३८



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में व दिनों में बृहस्पति, कन्या रासी में या मीन रासी में जब २ कभी आवेंगे और या बुध, जब २ कभी, कन्या रासी में या मिथुन रासी में या कुम्भ रासी में या मेष रासी में या धन रासी में, जब २ आवेंगे और या चन्द्रमा, जब २ कभी, कन्या रासी में या मीन रासी में जब २ आवैंगे और सनी तथा मंगल दोनों में से कोई भी यदि कन्या रासी पर आवेंगे तो कुछ अड़चनों से लाभ करेंगे। और सूर्य जब २ कन्या रासी पर आवेंगे, तब मकान, भूमि तथा माता आदि सुख सम्बन्धी के विषय में श्रेष्ठ फल प्रदान करते हैं। किन्तु इनके विपरीत यदि, बुध, वृषभ रासी में या वृस्चिक रासी में या मकर रासी में, जब २ कभी आवेंगे और शुक्र जब २ कभी कन्या रासी में या मीन रासी में आवेंगे और राहू या केतु कोई भी जब २ कभी कन्या रासी में आवेंगे तब २ सुख शांती में बाधा होगी और मकान भूमि, माता आदि के विषय में कुछ अशांती का योग पैदा होता है और यदि जन्म के समय में भी इन २ ग्रहों, में कोई भी, ग्रह, इन्हीं रासियों के अन्दर अगर जन्म कुण्डली में बैठे होंगे, तो, वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेस के अनुसार ही फल देते रहते हैं। किन्तु यदि कोई भी ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या १ से कम होगा तो वह ग्रह अपना फल पूरी २ तादाद में नहीं दिया करते हैं।

 मिथुन लग्न वालों को, पता मान प्रतिष्ठा बड़ा कारबार-राज समाज का, फलादेश

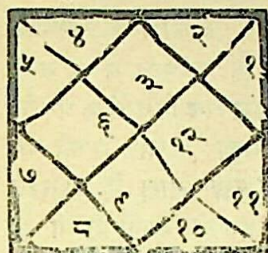
कु० नं० ३६



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में व दिनों में वृहस्पति कर्क राशी में या कन्या राशि में या मीन राशी में या मेष राशी में जब २ कभी आवेंगे, और मङ्गल तब २ कभी, मीन राशी पर या धन राशी पर या सिंह राशी पर जब २ कभी आवेंगे और चन्द्रमा, जब २ कभी मीन राशी पर आवेंगे और सूर्य-जब २ कभी मीन राशी पर आवेंगे-तब २ पिता स्थान में व राज समाज व मान प्रतिष्ठा के स्थान में व बड़े कारबार के स्थान में अपने २ वित्त अनुसार उन्नति का योग पैदा करते हैं और इसके विपरीत यदि, बुध, मीन राशी पर या कन्या राशि पर आवेंगे, और यदि राहू या केतू, दोनों में से कोई भी मीन राशी पर आवेंगे, और यदि, शनी या शुक्र इन दोनों में से कोई भी मीन राशी पर आवेंगे तो यह इस विषय में कुछ न कुछ हानिकारक कार्य करते हैं। किन्तु यदि जन्म के समय में, इन सब ग्रहों में से जो २ कोई ग्रह, इन्हीं राशियों में यदि जन्म कुण्डली में भी बैठे होंगे तो, वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही, ऊपर लिखी हुई स्थिति के अनुसार फल देते ही रहते हैं। इसमें इतना और ध्यान रखना आवश्यक है कि, शनी, शुक्र, मङ्गल, यह दोनों ग्रहों में से कोई भी यदि मीन राशी पर बैठे होंगे तो, यह ग्रह कुछ २ हानिप्रद और प्रायः लाभ की ओर ही कार्य करते हैं। इसके अलावा यदि कोई भी ग्रह २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह हमेशा ही बहुत थोड़ा असर करने वाला होगा क्योंकि वह निर्बल ग्रह माना जाता है।

लाभकारी रङ्ग, मणियाँ तथा ग्रहों के गुण दोष स्वभाव का फलादेश

कुं० नं० ४०



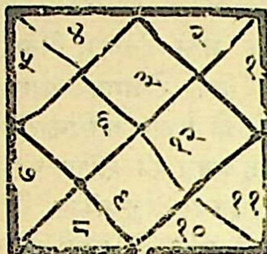
(गु०) इस मिथुन लग्न वाले प्राणियों को राज समाज, कार व्यौपार मान प्रतिष्ठा, पिता का संबंध, स्त्री संबंध, दैनिक रोजगार, भोग वैभव, इत्यादि २ विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता बृहस्पति हैं यह हृदय की शक्ति पर रह कर कार्य करते हैं इनका रङ्ग पीला है स्वभाव बड़प्पन का है, उन्नति के मार्ग में, रोजाना के कार्य क्रम की प्रधानता उत्तम होगी इनकी मणी पुखराज है, इनका जन्म कुण्डली में बैठने की उत्तम राशियां यह हैं–३–४–५–६–७–८–९–११–१२–१ और नेष्ठ राशियां १०–२ हैं यह बुरे से बुरे समय में भी कर्म वल की शक्ति से रोजगार और मान की कुछ न कुछ रक्षा कर ही देते हैं।

(चं०) इस मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों को कोष के अधिपति मुख्य ग्रह चन्द्रमा है-यह चन्द्रमा-धन की संग्रह शक्ति और कुटुम्ब स्थान की शक्ति के अधिपति फल दाता हैं और मन की राशी पर रहते हैं, इनका रङ्ग गौर है, इनकी मणी मोती है, इनका स्वभाव चंचल है, उन्नति के मार्ग में, धन जोड़ने की चेष्टा प्रधान है, इनका जन्म कुण्डली में बैठने की उत्तम राशियां यह हैं। ४–५–६–७–९–११–१२–१–२ और नेष्ठ राशियां ८–१०–२ यह तीन हैं, और सर्व श्रेष्ठ राशी-यह कर्क है।

(बु०) इन मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों को-देह, माता-सुख-भूमि-प्राण, आत्मशांती इन सब चीजों के अधिकारी फलदाता, बुध हैं, इनका आत्म विवेक की शक्ति पर रहने का स्थान हैं इनका रङ्ग हरा है इनका स्वभाव स्वरूप, बचपन व इनकी मणी पन्ना है, यह उन्नति के स्थान में, आराम की पहिले सोचते हैं, यह शांती प्रधान हैं, इनका जन्म कुण्डली में बैठने की उत्तम राशियां यह हैं,–३–४–५–६–७–८–९–११–१–और नेष्ठ राशियां–८–१०–१२–२ यह हैं .किन्तु इनका ६ अंक पर बैठना उन्नति के लिए अशुभ है।

 मिथुन लग्न वालों को, रंग आदि सभी व्यापार कर्मों के लिये लाभकारी रङ्ग मणियाँ तथा ग्रहों के गुण दोषादि का फलादेस

कुं० नं० ४१



(मं०) इस मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों को शत्रु पक्ष में आमदनी के लाभ के सम्बन्ध में व रोग झगड़े झंझटों के सम्बन्ध में व ननसाल पक्ष के सम्बन्ध में इन सब विषयों के प्रधान अधिकारी मङ्गल हैं इनका हिम्मत सक्ती पर रहने का स्थान है, इनका रङ्ग लाल है, इनका स्वभाव बहुत नरम है, इनकी मणी मूंगा है यह उन्नति के मार्ग में परिश्रम व दौड़ धूप व चालाकी व हिम्मत शक्ती से कार्य करते हैं यह लाभ प्राप्ती के हेतु कठिनाइयों की परवाह नहीं करते हैं इनकी जन्म कुण्डली में बैठने की उत्तम राशियाँ यह हैं–१–५–१२–३–७–६ और नेष्ट राशियां—२–४ वृषभ कर्क हैं बाकी की सामान्य राशियां है ।

(श०) इस मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों को भाग्य धर्म, आयु पुरातत्व, समय व्यतीत करने का दैनिक अमीरी ढङ्ग,यश अपयश,ईश्वर भक्ति, धर्म की वास्तविकता की कमी इन सब विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शनी हैं, इनका रङ्ग गहरा नीला है इनकी मणि नीलम है, इनका स्वभाव हठीला है, वह उन्नति के मार्ग में कुदरती शक्ति का प्रयोग कुछ आडम्बर के साथ करते हैं, और इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियां यह हैं–११–३–५–७–८–६ और १–२ नेष्ठ हैं इनकी सभी राशियां ऐसी हैं जिनमें कुछ व कुछ बुराई और अच्छाई सबमें लगी है ।

(सू०) इस मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों जो पुरुषार्थ भाई बहन महनत, तेज इत्यादि शक्तियों के प्रधान अधिकारी ग्रह सूर्य हैं, इनका रङ्ग सुनहला है इनका स्वभाव अत्यन्त गरम है, इनकी मणी मणिक है, वह उन्नति के मार्ग में महान पुरुषार्थ से काम करते हैं, इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ रगशियां यह हैं–१–१२–६–८–६ और ७–१० –२ ये तीन नेष्ठ राशियां हैं बाकी ११–४–४ भी अच्छी है ।

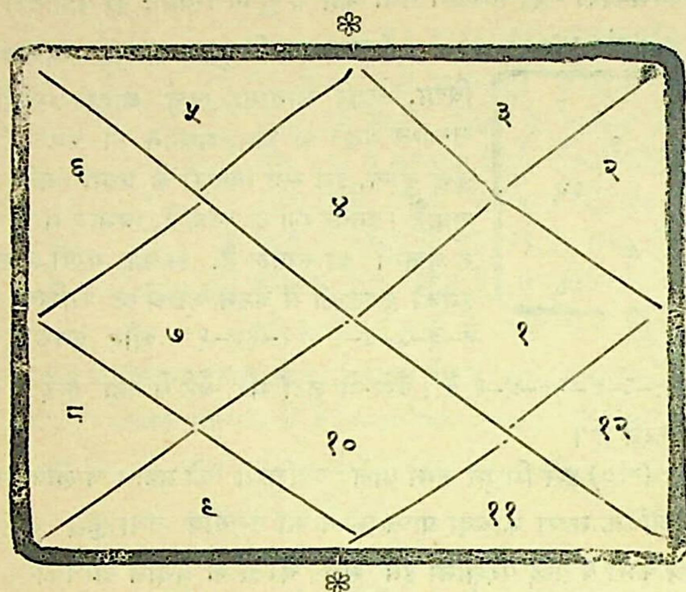
कु० नं० ४२

(शुक्र) इस मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों को विद्या, बुद्धी सन्तान, खर्च बाहरी स्थानों के सम्बन्ध बुद्धी का भ्रम, सन्तान की कमजोरी या कुछ दुःख, इन सब विषयों के प्रधान अधिकारी शुक्र हैं। इनका रंग उज्जवल है, स्वभाव में दूरंदेशी व बुजुर्गी का ख्याल है, इनकी मणी हीरा है, इनकी कुण्डली में बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं–३–५–७–६–११–१२–१ और इनकी नेष्ठ राशियां–६–८–१०–४–२ हैं। वैसे तो जहाँ भी बैठेंगे वहां कुछ न कुछ कमी करते हैं।

(रा०) इस मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों को महान चालाकी तथा बहुत अधिक गहरा फायदा प्राप्त करने की तरकीब तथा कुछ कठिनाई व कुछ कमी व कुछ परेशानी इन सब चीजों के प्रधान अधिकारी हैं। इनका रङ्ग काला है, इनका स्वभाव चालाक है, इनकी मणी गोमेध है इनके बैठने की उत्तम राशियां यह हैं–३–५–८–१ और नेष्ट राशियां यह हैं–४–६–१०–११–१२ बाकी की सब राशियां मध्यम हैं और वैसे तो यह जहाँ भी बैठते हैं वह शांती नहीं लेने देते।

(के०) इस मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों को बहादुरी की महान छिपी हुई शक्ति व कठिनाईयां और कुछ चिन्ता व कुछ गुप्त दृढ़ता इन सब बातों के प्रधान अधिकारी ग्रह केतू हैं। इनका रङ्ग काला है इन का स्वभावह ठीला गुप्त धैर्य वाला है, इनकी मणी लहसनियां है। इन कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियाँ यह हैं–५–६–८–१ और नेष्ठ राशियां यह हैं–४–३–१०–२–१२–११ बाकी दो राशियां ६–७ सामान्य हैं किन्तु इनका बैठना कहीं भी शांत प्रिय नहीं है।

कर्क लग्न फलादेश प्रारम्भ



इस कर्क लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सुख और धन लाभ के सम्बन्ध में मुख्य ग्रह प्रायः सू० शु० मं०गु० ही हैं और अधिकांश इन्हीं ग्रहों के रंग व मणियां धनोन्नति संबंधी सभी व्यापारादि कार्यों में लाभप्रद सिद्ध होंगे, किन्तु राशि और स्थानान्तर के भेद से प्रायः सभी ग्रह अच्छे और बुरे फल के सूचक बन जाते हैं जैसा कि आपको कुण्डली नं० ४३ से लेकर कुण्डली नं० ५६ तक में विचारहेतु इन सभी ग्रहों का भाग्य के हर एक विषय में भिन्न २ फलादेश महान सरल रूप से जानने को मिलेगा।

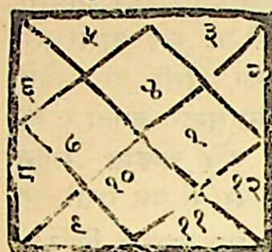
कुं० नं० ४३

इस कर्क लग्न वालों को पंचांग के अन्दर जिस २ दिनों में चन्द्रमा सिंह राशी पर आवेगा या वृषभ राशी पर आवेंगे या मेष राशी पर या मीन राशी पर या मकर राशी पर आवेंगे तब तब धन लाभ का योग सुन्दर बनता रहता है और इसके विपरीत यदिं चन्द्रमा मिथुन राशी पर या कुम्भ राशी पर या धन राशी पर जब २ आवेंगे, तब तब धन लाभ के विपरीत व अशांतप्रद योग पैदा करते हैं और वृश्चिक राशी पर भी जब २ चन्द्रमा आवेगा तब तब अशांत प्रद योग पैदा करता है और यदि जन्म के समय में चन्द्रमा जन्म कुण्डली के अन्दर भी ऊपर लिखी राशियों में वे ही कहीं बैठा होगा तो वह प्रायः सारे जीवन भर ही उपरोक्त प्रकार का सा फल हमेशा देता रहेगा और जब चन्द्रमा कन्या या तुला राशी पर भी कहीं होगा तो भी फल अच्छा ही प्रदान करता है।

(धन लाभ का मासिक फलादेश

इस कर्क लग्न वालों को पंचांग के अन्दर जिस २ मासों में सूर्य सिंह राशी पर या कन्या राशि पर या वृषभ राशि पर या मेष राशि पर या कर्क राशि पर या मीन राशी या मकर राशी पर जब २ आवेंगे और शुक्र जब २ वृषभ राशी पर या मीन राशी पर मेष राशी पर या कर्क राशी पर या मकर राशी पर या वृश्चिक राशी पर या सिंह राशी पर जब २ कभी आवेंगे और मङ्गल जब २ कभी वृषभ राशी या सिंह राशी या मकर राशि पर या तुला राशि पर या कन्या राशि पर या मेष राशि पर मीन राशि पर जब २ आवेंगे तब तब धन लाभ की उन्नति का योग पैदा करते हैं और इसके विपरीत यदि सूर्य मिथुन पर या कुम्भ पर या धन राशि पर आवेंगे और या शुक्र मिथुन राशि पर या कुम्भ राशि पर या धन राशि पर या कन्या राशि पर जब २ आवेंगे और मङ्गल जब २ मिथुन राशि पर या कुम्भ राशि पर या धन राशि पर या कर्क राशि पर जब २ कभी आवेंगे, तब तब लाभ के सम्बन्ध में विपरीत फल करेंगे

कु० नं० ४४



पंचांग के अन्दर जिन जिन वर्षों में बृहस्पति मीन राशी पर या मेष राशि पर या कर्क राशी पर या सिंह राशी पर या वृश्चिक राशि पर या कन्या राशि पर जब जब २ कभी आवेंगे और या शनी मकर राशी पर या वृषभ राशी पर या वृश्चिक राशी पर या धन राशी पर जब २ कभी आवेंगे और या राहू मिथुन राशी पर कन्या राशि पर या वृषभ राशि पर जब २ कभी आवेंगे और या केतू धन राशि पर कन्या राशि पर या वृषभ राशि पर जब जब कभी आवेंगे, तब तब उन वर्षों में धन की उन्नति प्राप्त होती रहती है किन्तु उन्नति वाले वर्षों में मासिक ग्रहों का भी योग अनुकूल होगा तब २ ही प्रायः उन्नति का आनन्द प्राप्त होता रहता है और इसके विपरीत जिन २ वर्षों में बृहस्पति मकर राशि में या मिथुन राशि में या कुम्भ राशि में या सिंह राशि में जब २ आयेंगे और राहू जिन २ वर्षों में सिंह राशि पर या कर्क राशि पर या धन राशि पर या मेष राशी पर जब २ आवेंगे और या केतू जिन २ वर्षों में मिथुन राशि पर या कर्क राशि पर या सिंह राशि पर या मेष राशि पर जब २ कभी आवेंगे,तब २ उन वर्षों में लाभ के विपरीत अर्थात् हानि की तरह यह ग्रह अपना फल दिया करते हैं। और यही सब ग्रहों में से जन्म के समय में, ऊपर लिखी राशियों के अनुसार जो २ ग्रह भी जन्म कुण्डली के अन्दर इस प्रकार बैठे होंगे, तो वह सारे जीवन भर ही प्रायः उपरोक्त लिखे अनुसार ही फल देते रहते हैं। किन्तु यदि कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २६ अंश से अधिक होगा या २ अंश से कम होगा तो वह ग्रह अपना पूरा २ फल, पूरी २ शक्ति के अनुसार कभी भी नहीं दे सकता है।

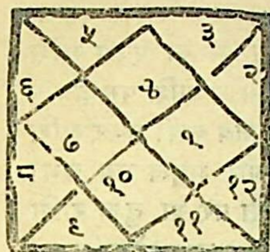
कु० नं० ४५

पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व दिनों में, व मासों, यह सभी ग्रह प्रायः इस २ प्रकार आते हैं, तब राज योग का मुख्य समय समझा जाता है अर्थात् वृहस्पति जब २ मेष राशी में हों या कर्क राशी में हों या सिंह राशी में हों और मङ्गल जब २ मेष राशी में या कन्या राशी में या मकर राशी में या तुला राशि में हो और शनी जब २ मकर राशि में या धन राशी में या वृषभ राशि में या वृश्चिक राशि में या कन्या राशी में हों और राहू जब २ कन्या राशी में या मिथुन राशि में या वृषभ राशी हों और केतू जब २ कन्या राशि में या धन राशि में या वृषभ राशि में हों और सूर्य जब २ मेष राशि में या वृषभ राशि में या सिंह राशि में या कन्या राशि में या मीन राशी में या कर्क राशि में या वृश्चिक राशी में हों और शुक्र, जब २ मेष में राशि या मीन राशी में या वृषभ राशि में या तुला राशि में या मकर राशी या कर्क राशि में या वृश्चिक राशि में, या सिंह राशी में हों, और बुध जब-जब मिथुन राशि पर या कन्या राशि पर या वृषभ राशि पर हों और चन्द्रमा जब २ कर्क राशि पर या सिंह राशि पर या तुला राशि पर या मीन राशि पर या वृषभ राशि पर या मकर राशि पर या कन्या राशि पर या सबसे प्रमुख मेष राशी पर हों अतः यह सारे ही ग्रहऊपर लिखी राशियों में से, कहीं न कहीं हर एक ग्रह अवश्य हीं होना चहिये, अतः जिन २ वर्षों में यह सभी ग्रह इस २ प्रकार उपरोक्त राशियों में हीं आते रहते हैं, और कोई भी ग्रह जब इन उपरोक्त राशियों से, बाहर नहीं होता है, तब उस २ समयों में कर्क लग्न वाले मनुष्यों को, अपने अपने वित्त के अनुसार राजयोग प्राप्त होता है किन्तु यह बात ध्यान रखने की हैं कि यदि जन्म के समय में भी यही ग्रह उपरोक्त राशियों में से ही, किसी न किसी राशि के ही होकर जन्म कुण्डली में भी बैठे होंगे, तो फिर वह मनुष्य प्रायः सारे जीवन भर ही अमीरी के ढङ्ग से जीवन व्यतीत करता है ।

कुं० नं० ४६

पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में मंगल, जब २ कभी वृश्चिक राशि में मेष राशि में, या वृषभ राशि में या सिंह राशि में, या मीन राशी में या मकर राशी में या तुला राशी में या कन्या राशि में, जब २ कभी आवेंगे और या वृहस्पति, जब २ कभी वृश्चिक राशि में या मीन राशि में या कर्क राशि में जब-जब आवेंगे और या शुक्र जब २ कभी वृश्चिक राशि पर आवेंगे तब तब संतान पक्ष में या विद्या बुद्धि के पक्ष में उन्नति व सुख प्राप्त होता है और इसके विपरीत यदि, मङ्गल, धन राशि में, या कुम्भ राशि में, या मिथुन राशि में या कर्क राशि में जब २ कभी आवेंगे और या बुध जब २ कभी वृश्चिक राशि में, या वृष राशि में आवेंगे और या चन्द्रमा जब २ कभी, वृश्चिक राशि में या वृषभ राशि में आवेंगे, और या शनी जब २ कभी, कन्या राशि में या वृश्चिक राशि में या कुम्भ राशि में या वृषभ राशि में जब २ आवेंगे और या राहू या केतू कोई भी जब २ कभी वृश्चिक राशि में व वृषभ राशि में, आवेंगे तब तब संतान पक्ष में व विद्या बुद्धी के पक्ष में, हानिकारक या चिन्ताकारक योग पैदा करते हैं, और जिस २ मनुष्य की जन्म कुण्डली में, जन्म के समय में भी यदि यह ग्रह, ऊपर वाली राशियों के अनुसार ही जन्म कुण्डली में भी बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही, संतान पक्ष में व विद्या बुद्धि के पक्ष में, ऊपर लिखे अनुसार ही अधिकांश रूप में फल देते रहते हैं। इसके अतिरिक्त, कोई भी ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह अपनी शक्ति बल के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है। क्योंकि यह ग्रह निर्बल समझा जाता है।

कुं० नं० ४७



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में शनी मकर राशि पर व कुम्भ राशि पर व मीन राशि पर व वृषभ राशि पर व कर्क राशि व सिंह राशि पर व कन्या राशि पर व तुला राशि पर व वृश्चिक राशि पर व कुम्भ राशि पर जब २ कभी आवेंगे और या शुक्र जब २ कभी कुम्भ राशी पर या सिंह राशी पर आवेंगे और मंगल जब २ कभी कुम्भ राशि पर या वृश्चिक राशी पर आवेंगे या वृहस्पति जब २ कभी तुला राशी या कुम्भ राशी पर आवेंगे तब २ आयू व उदर व पुरातत्व संबंधी एवं उत्तम दिनचर्या सम्बन्धी मामलों पर उन्नति और लाभ का योग प्राप्त होता रहता है। किन्तु यदि इसके विपरीत शनी जब २ कभी मेष राशी पर या मिथुन राशि पर आवेंगे और बुध जब २ कभी कुम्भ राशी पर आवेंगे तब २ जीवन की दिनचर्या पुरातत्व एवं उदर व आयू स्थान की स्थिरता, इन चारों प्रकरणों के सम्बन्ध में चिन्ताकारक योग पैदा करते रहते हैं। इसके अतिरिक्त यदि यही ग्रह योगों में से कोई भी ग्रह जन्म के समय में यदि जन्म कुण्डली में भी उपरोक्त राशियों के अनुसार ही जो २ ग्रह बैठे होंगे, तो वह ग्रह ऊपर लिखे हुए फलादेश के अनुसार ही प्रायः सारे जीवन भर ही फल देते रहते हैं, किन्तु यदि जो कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २६ अंश से अधिक होगा या २ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपना पूरा २ फल जीवन में प्रदान नहीं कर सकता है।

कु० नं० ४८

पंचांग के अन्दर जिन वर्षों में व मासों में शनी मकर राशी पर या कर्क राशी पर या वृश्चिक राशि या तुला राशि पर या वृषभ राशि पर या कन्या राशि पर या मीन राशि पर जब २ कभी आवेंगे और या शुक्र जब कभी मकर राशि या कर्क राशि पर आवेंगे और मङ्गल जब कभी मकर राशि या मिथुन राशि पर या तुला राशि पर आवेंगे और चन्द्रमा जब २ कभी मकर राशि पर या कर्क राशि पर आवेंगे और सूर्य जब २ कभी मकर राशि पर या कर्क राशि पर आवेंगे तब तब स्त्री व दैनिक रोजगार के स्थान में उन्नति व लाभ और सुख की प्राप्ती होती रहती है किन्तु इसके विपरीत यदि जिन २ वर्षों व मासों में शनी कुम्भ राशि पर या मिथुन राशि पर या सिंह राशि पर या धन राशि पर जब २ कभी आवेंगे और बुध जब कभी मकर राशि पर या कर्क राशि पर आवेंगे और वृहस्पति जब २ कभी मकर राशि पर या कर्क राशि पर या वृषभ राशि पर या कन्या राशि पर जब २ आवेंगे और राहू या केतू जब २ कभी मकर राशि पर व कर्क राशि पर जब २ कभी आवेंगे तब २ स्त्री व दैनिक रोजगार के स्थान में विघ्न बाधा वपरेशानी व हानि आदि कुछ न कुछ गड़बड़ी करते रहते हैं। इसके अतिरिक्ति यदि जन्म के समय में जो २ कोई ग्रह ऊपर लिखी राशियों के अनुसार ही जन्म कुण्डली में भी बैठा होगा तो वह ग्रह ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही सारे जीवन भर प्रायः फल देता रहता है और जो २ कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण प्रायः हमेशा ही पूरा २ फल नहीं दे सकेगा। नोट—यदि शनी जब २ कभी मेष राशि पर आवेंगे या जन्म कुण्डली में मेष राशि पर बैठे होंगे तो वह स्त्री व दैनिक रोजगार के सम्बन्ध में अधूरा लाभ देते हैं।

कुं० नं० ४६

५ ३ ६ ४ २ ७ १ ८ १० १२ ९ ११

पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में, बृहस्पति मीन राशि पर या कर्क राशि पर या वृश्चिक राशि पर या कन्या राशि पर जब-जब कभी आवेंगे और या मङ्गल जब २ कभी मीन राशि पर आवेंगे या शुक्र जब-जब कभी मीन राशि पर आवेंगे अथवा शुक्र कन्या राशि पर भी जब-जब आवेंगे—और चन्द्रमा जब-जब कभी मीन राशि पर आवेंगे और सूर्य जब-जब कभी मीन राशि पर आवेंगे तब-तब भाग्य और भक्ति तथा देवी शक्ति के गुणों की उन्नति व लाभ प्रदान करते हैं। किन्तु इसके विपरीत यदि बुध जब-जब कभी मीन राशि पर या कन्या राशि पर आवेंगे और या गुरू जब-जब कभी कुम्भ राशि पर या मिथुन राशि पर या मकर राशि पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब भाग्य, भक्ति, धर्म व ईश्वरीय शक्ति के सम्बन्धों में अनेक प्रकार की विघ्न-बाधा व विपरीत योगों की प्राप्ति होती रहती है, इसके अतिरिक्त यदि इसी प्रकार के ग्रह योग जन्म के समय जन्म कुण्डली में भी ऊपर लिखे अनुसार इन्हीं २ राशियों में जो-जो ग्रह बैठा होगा, वह ग्रह हमेशा ही प्रायः सारे जीवन भर उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल देता रहता है, और जो कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या जो कोई ग्रह २६ अंश से अधिक होगा या जो कोई ग्रह २ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण कभी भी अपनी शक्ति के अनुसार पूरा-पूरा फल प्रदान नहीं कर सकता है।

नोट—इस कर्क लग्न वाले व्यक्तियों को धर्म के सम्बन्ध में कुछ न कुछ कमजोरी-शास्त्र मर्यादा के अनुसार किसी अंशों में बनी रहेगी।

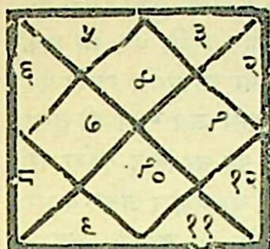
कर्क लग्न वालों को देह, ख्याति, सुन्दरता व आत्म-बल का फलादेश

कुं० ५०

५ ३
६ ४ २
७ १
८ १० १२
९ ११

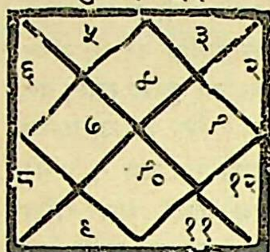
पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में व दिनों में चन्द्रमा कर्क राशि पर या कन्या राशि पर या तुला राशि पर या मकर राशि पर या वृषभ राशि पर जब २ कभी आवेंगे और या शुक्र जब-जब कभी कर्क राशि पर या मकर राशि पर आवेंगे और या बृहस्पति जब २ कभी कर्क राशि पर या मीन राशि पर या वृश्चिक राशि पर आवेंगे तब-तब देह को आराम और सुख शान्ति, सुन्दरता व आत्मबल एवं ख्याति प्रदान करते हैं। किन्तु इसके विपरीत जब २ कभी चन्द्रमा वृश्चिक राशि पर या धन राशि पर या मिथुन राशि पर या सिंह राशि पर जब २ आवेंगे और या शनी जब २ कभी कर्क राशि पर या तुला राशि पर या मकर राशि पर या वृषभ राशि पर जब २ आवेंगे और या बुध जब २ कभी कर्क राशि पर आवेंगे और या मङ्गल जब २ कभी कर्क राशि पर या मकर राशि पर या मेष राशि पर या धन राशि पर जब २ आवेंगे और या राहू व केतू कोई भी जब २ कर्क राशि पर व मकर राशि पर आवेंगे तब २ देह पक्ष को सुन्दरता व शांति को व आत्मबल को हानि पहुँचाते हैं। इसके अलावा यदि जन्म के समय में इन्हीं ग्रहों में से कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर ऊपर लिखी राशियों के अनुसार कोई बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे अनुसार फल प्रदान करता रहेगा, किन्तु यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या कोई भी ग्रह २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपना पूरा २ फल पूरी शक्ति से नहीं दे सकेगा।

कुं० नं० ५१



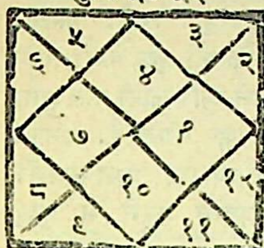
पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में व दिनों में वृहस्पति, धन राशि पर या मीन राशि पर या मेष राशि पर या वृषभ राशि पर या कर्क राशि पर या सिंह राशि पर या कन्या राशि पर या वृश्चिक राशि पर जब २ कभी आवेंगे या केतू जब-जब कभी धन राशि पर आवेंगे और या मङ्गल जब-जब कभी धन राशि पर या कन्या राशि पर या वृषभ राशि पर जब २ कभी आवेंगे और या सूर्य जब २ कभी धन राशि पर आवेंगे और या शनी जब २ कभी धन राशि पर या मीन राशि पर, तुला राशि पर जब-जब कभी आवेंगे तब-तब शत्रु व रोग तथा झगड़े-झंझटों के सम्बन्धों में विजय प्रदान करते हैं, किन्तु इसके विपरीत यदि चन्द्रमा जब २ कभी मिथुन राशि पर या धन राशि पर आवेंगे और या राहू जब कभी धन राशि पर आवेंगे और या बुध जब २ कभी मिथुन राशि पर या धन राशि पर आवेंगे और या वृहस्पति जब २ कभी मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या मिथुन राश पर जब २ आवेंगे तब २ शत्रु-रोग या झगड़े-झंझटों के सम्बन्ध में परेशानियां पैदा करते हैं। इसके अतिरिक्त यदि जन्म के समय में इन ऊपर वाले ग्रहों में से कोई भी ग्रह इन ऊपर वाली राशियों में जो २ कोई जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही अधिकांश रूप में फल देता रहता है, किन्तु यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या कोई भी ग्रह २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपना पूरा २ फल, पूरी २ शक्ति के अनुसार नहीं दे सकता है ।

कु० नं० ५२



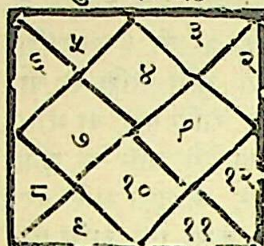
पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में व दिनों में, शुक्र जब २ कभी तुला राशि पर या मकर राशि पर या मेष राशि पर या कर्क राशि पर या मीन राशि पर या वृषभ राशि पर जब २ आवेंगे और या शनी जब २ कभी तुला राशि पर या मकर राशि पर या सिंह राशि पर जब २ कभी आवेंगे और या मङ्गल जब२ कभी तुला राशि पर आवेंगे और या चन्द्रमा जब २ कभी तुला राशि पर या मेष राशि पर आवेंगे और या बृहस्पति जब २ कभी तुला राशि पर या मेष राशि पर जब २ आवेंगे तब२ माता, भूमि मकान व सुख सम्बन्धी मामलों की उन्नति व लाभ का योग पैदा करते हैं, किन्तु यदि इसके विपरीत शुक्र जब २ कभी मिथुन राशि पर या कुम्भ राशि पर जब २ आवेंगे और सूर्य जब २ तुला राशि पर या मेष राशि पर जब २ आवेंगे और राहू या केतू जब २ कभी तुला राशि पर व मेष राशि पर आवेंगे तब २ माता भूमि सुख सम्बन्धी में कभी २ क्लेश का योग पैदा करते हैं। इसके अलावा यदि जन्म के समय में यह सभी ऊपर वाले ग्रहों में से कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर यदि किसी प्रकार की उपरोक्त राशियों में से जो २ बैठा होगा तो वह ग्रह ऊपर वाले फलादेश के अनुसार ही अधिकांश सारे जीवन भर ही प्रायः फल देता रहेगा और जो कोई ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या जो कोई ग्रह २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपना फल पूरी २ शक्ति के अनुसार कभी नहीं दे सकता है।

कुं० नं० ५२



पंचांग के अन्दर जिन-जिन वर्षों में व मासों में मंगल, मेष राशि पर या वृषभ राशि पर या कन्या राशि पर या तुला राशि पर या मकर राशि पर या सिंह राशि पर या मीन राशि पर जब २ कभी आवेंगे और या शुक्र जब २ कभी मेष राशि पर या तुला राशि पर आवेंगे या वृहस्पति जब कभी मेष राशि पर या सिंह राशि पर या तुला राशि पर या धन राशि पर जब २ आवेंगे या सूर्य जब २ कभी मेष राशि पर आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी मेष राशि पर या तुला राशि पर आवेंगे तब २ पिता स्थान व राज समाज कारबार व मान प्रतिष्ठा आदि की उन्नति व लाभ का योग पैदा करते हैं। किन्तु इसके विपरीत यदि मङ्गल जब २ कभी मिथुन राशि पर या धन राशि या कुम्भ राशि पर या कर्क राशि पर जब २ आवेंगे या बुध जब २ कभी मेष राशि पर या तुला राशि पर आवेंगे या शनी जब २ मेष राशि पर या तुला राशि पर या कुम्भ राशि पर या कर्क राशि पर जब २ आवेंगे या राहू या केतू जब २ कभी मेष राशि पर या तुला राशि पर आवेंगे तब २ पिता स्थान में व कारबार तथा मान-प्रतिष्ठा राज-समाज के स्थान में कमी व हानि व क्लेश का योग पैदा करते हैं, और यदि जन्म के समय में इन उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह इन ऊपर वाली राशियों में से किसी भी राशि पर यदि जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो वह ग्रह इसी प्रकार का फलादेश प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकांश रूप में देता रहता है और जो २ कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या जो २ कोई ग्रह २६ अंश से अधिक होगा या २६ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

कुं० नं० ५४

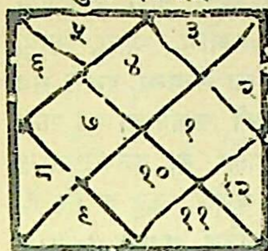


(गु०) इस कर्क लग्न वाले व्यक्तियों को भाग्य, धर्म, यश, शत्रु, झगड़े, झंझट, दैवी सफलता, ईश्वर भक्ति की कुछ कमी, रोग इन २ सब विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह बृहस्पति हैं। इनका रङ्ग पीला है, इनकी मणि पुखराज है, इनका स्वभाव प्रभावशाली दयालु है, यह उन्नति प्रदान करने में कुछ कुदरती शक्ति का प्रयोग व कुछ परिश्रम व कुछ भेद युक्तियों के प्रयोग, इन तीनों शक्तियों के द्वारा कार्य करके भाग्योन्नति करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियां ये हैं–१२–१–२–४–५–६–७–८–९ और नेष्ठ राशियां १०–११–३ यह ग्रह हैं।

(मं०) इस कर्क लग्न वाले व्यक्तियों को राज्य, व्यापार, मान प्रतिष्ठा, पिता, सन्तान, विद्या, बुद्धि उन्नति के मार्ग के कर्म, इन २ सब विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह मङ्गल हैं, इनका रङ्ग लाल है, इनकी मणि मूंगा है, इनका स्वभाव स्वाभिमानी गरम है, यह उन्नति प्रदान करने में बुद्धिबल और कर्मबल से कार्य करते हैं, इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं–१–२–५–६–१०–१२–८ और नेष्ठ राशियां ३–४–११–९ यह हैं।

(शु०) इस कर्क लग्न वाले व्यक्तियों को धन लाभ, आवश्यक पदार्थ लाभ, माता सुख की प्राप्ति, इन २ सब विषयों के प्रधान अधिकारी ग्रह शुक्र हैं, इनका रङ्ग सफेद है, इनकी मणि हीरा है, इनका स्वभाव शान्तियुक्त गम्भीर चतुर है, यह लाभोन्नति प्रदान करने में गहरी शांति और क्षमा के योग्य से कार्य करते हैं। इनका कुण्डली में बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं—२-४-७-८-१०-१२-१ और नेष्ठ राशियां यह हैं–३-६-९-११ और इनकी सामान्य राशि ५ है।

कुं० नं० ५५

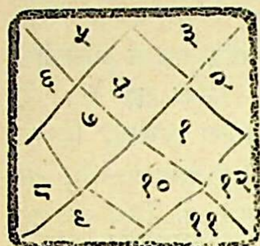


(बु०) इस कर्क लग्न वाले व्यक्तियों को खर्च, भाई-बहन, दूसरे स्थानों का सम्बन्ध, पुरुषार्थ इन २ सब विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह बुध हैं । इनका रङ्ग हरा है, इनकी मणि पन्ना है, इनका स्वभाव, हिम्मत और कमजोरी को लिये हुए बाल युक्त है, यह खर्च शक्ति में उन्नति करने के लिये बाहुबल की शक्ति तथा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में विवेक बल से कार्य करते हैं । इनकी कुण्डली में बैठने को श्रेष्ठ राशियां यह हैं—६-२-३ और नेष्ठ राशियाँ ९-११-१२ हैं और शेष सभी राशियों में यदि कहीं बैठेंगे तो खर्च की अधिकता के कारणों से जहां जिस घर में बैठेंगे उस घर को हानि पहुँचाते हैं।

(चं०) इस कर्क लग्न वाले व्यक्तियों को देह, आत्मबल, स्वरूप, मनोबल, ख्याति, शांति इन सब विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह चन्द्रमा हैं । इनका रङ्ग उज्ज्वल चमकीला है, इनकी मणि मोती है, इनका स्वभाव शांत, तत्वग्राही है, यह उन्नति के मार्ग में आत्मबल व मनोबल की शक्ति से कार्य करते हैं, इनकी कुण्डली में बैठने की उत्तम राशियां हैं—४-१-१२-२-७-६-५-१० और नेष्ठ राशियां यह ३-८-९-११ हैं।

(सू०) इस कर्क लग्न वाले व्यक्तियों को धन संग्रह की शक्ति, कौटुम्बिक शक्ति, तेज प्रदान की शक्ति, इन सब विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह सूर्य हैं। इनका रङ्ग सुनहला है, इनकी मणि माणिक है। इनका स्वभाव महान तेजस्वी व उग्र है, यह उन्नति के मार्ग में, जल, बल की शक्ति के अन्तर्गत प्रकाशवान शक्ति से कार्य करते हैं। इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियां यह हैं, ५-६-८-१-१०-२-४ और नेष्ठ राशियां यह हैं, ७-११-३ और सामान्य राशि ९ हैं।

कुं० ५६



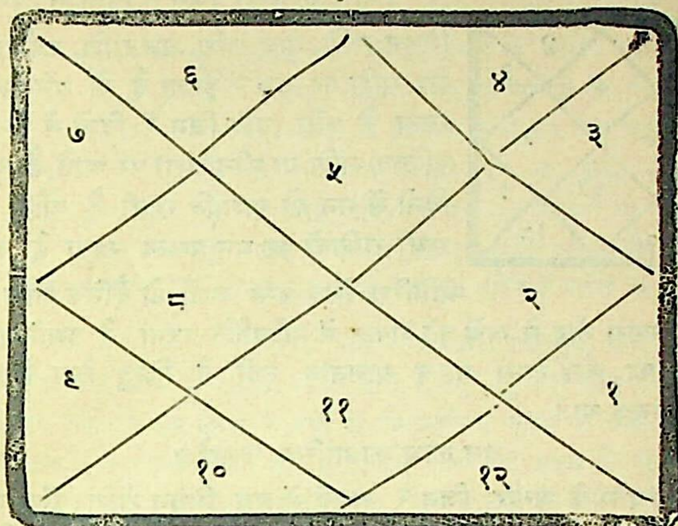
(श०) इस कर्क लग्न वाले व्यक्तियों को स्त्री, दैनिक रोजगार, भोग, आयु, मृत्यु, पुरातत्व, दिनचर्या, उदर का सम्बन्ध, इन २ सब विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शनी हैं, इनका रङ्ग नीला काला है, इनकी मणि नीलम है, इनका स्वभाव कठोर, कटु व दृढ़ है, यह उन्नति के मार्ग में कठिन महनत व दौड़ धूप और गूढ़ युक्तियों से काम करते हैं। इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं–१०–१२–२–४–६–७ ८–९ और नेष्ठ राशियां यह–३–१ हैं और सामान्य राशियां ११–५ हैं।

(रा०) इस कर्क लग्न वाले व्यक्तियों को कपट, झूंठ, कष्ट, चिन्ता इन सब विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह राहू हैं, इन का रङ्ग काला है, इनकी मणि गोमेध है, इनका स्वभाव छिपाव युक्त कटु है, यह उन्नति के मार्ग में पेचीदा चालों से कार्य करते हैं, इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं–६–२–३ और नेष्ट राशियां यह हैं–५–४–७–९–१०–११–१ और सामान्य १२–८ हैं। इनकी विशेषता यह है कि बुरे से बुरे समय में भी दिमाग की बहुत गुप्त व बहुत गम्भीर युक्ति से सहारा प्रदान करते हैं।

(के०) इस कर्क लग्न वाले व्यक्तियों को गुप्त धैर्य, गुप्त वीरत्व, चिन्ता इन विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह केतू हैं, इनका रङ्ग काला है, इनकी मणि लहसनियां है, इनका स्वभाव कठिन धैर्य धारण करने वाला है, यह उन्नति के मार्ग में महान गुप्त शक्ति बाहुबल के द्वारा कार्य करते हैं; इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ शक्तियां यह है–६–९–२ और नेष्ठ राशियां ४–५–७–३–१–११–१ हैं और सामान्य राशियां १२–८ हैं। इनकी विशेषता यह है कि बुरे से बुरे समय में भी गुप्त शक्ति, गुप्त दौड़-धूप से सहारा प्रदान करते रहते हैं।

सिंह लग्न फलादेश प्रारम्भ

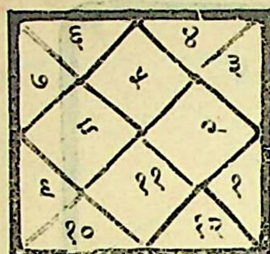






इस सिंह लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सुख और धन लाभ के सम्बन्ध में मुख्य ग्रह प्रायः बु० शु० मं० ही हैं और अधिकांश इन्हीं ग्रहों के रंग व मणियां धनोन्नति संबंधी सभी व्यापारादि कार्यों में लाभप्रद सिद्ध होंगे, किन्तु राशि और स्थानान्तर के भेद से प्रायः सभी ग्रह अच्छे और बुरे फल के सूचक बन जाते हैं जैसा कि आपको कुण्डली नं० ५७ से लेकर कुण्डली नं० ८५ तक में विचारहेतु इन सभी ग्रहों का भाग्य के हर एक विषय में भिन्न २ फलादेश महान सरल रूप से जानने को मिलेगा ।

कुं० नं० ५७

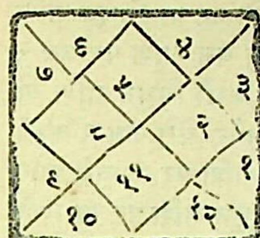


पंचांग के अन्दर जिन २ दिनों में चन्द्रमा मिथुन राशि, तुला राशि, धन राशि, कर्क राशि, मेष राशि पर जब २ आता है तो मन प्रसन्न रहता है और यदि जिन २ दिनों में चन्द्रमा वृश्चिक राशि या मीन राशी पर आते हैं उन २ दिनों में मन को अशांति रहती है और शेष सभी राशियों पर मन प्रसन्न रहता है इसके अतिरिक्त सिंह लग्न वालों को दैनिक लाभ का योग खास तौर से खर्चे की शकल में परिवर्तित रहता है इसलिये इस लेख का कोई खास महत्व माननीय नहीं है किन्तु लेख लिखना आवश्यक था।

धन लाभ का मासिक फलादेश

पंचांग के अन्दर जिन २ मासों में बुध मिथुन राशि, सिंह राशि कन्या राशि, धन राशि, कुम्भ राशि, मेष राशि, वृषभ राशि, वृश्चिक राशि, तुला राशि पर जब २ भी आवेंगे या जिन २ मासों में शुक्र मिथुन राशि, सिंह राशि, तुला राशि, वृश्चिक रासि, धन राशि, कुम्भ राशि, मेष राशि, वृषभ राशि पर जब २ भी आवेंगे और सूर्य मिथुन राशि, सिंह राशि, कन्या राशि, धन राशि, कुम्भ राशि, मेष राशि,वृषभ राशि पर जब २ भी आवेंगे और मङ्गल मिथुन राशि, सिंह राशि,कन्या राशी, तुला राशि, वृश्चिक राशि, धन राशि, मकर राशि कुम्भ राशि, मेष राशि, वृषभ राशि, पर जब २ भी आवेंगे, तब तब इन मासों में धन लाभ योग श्रेष्ठ रहता है। किन्तु इसके विपरीत यदि जिन २ मासों में बुध कर्क राशि, मकर राशि, मीन राशि पर जब २ भी आवेंगे और शुक्र जब २ भी कर्क राशि कन्या राशि मकर राशि मीन राशी पर जब २ भी आवेंगे या जिन २ दिनों में चन्द्रमा कन्या राशी, मेष राशि, वृषभ वृश्चिक राशि, मकर राशि, मीन राशि पर आवेंगे तब तब इन मासों और दिनों में धन लाभ की कमी या हानि का योग पैदा करते हैं।

कुं० नं० ५८



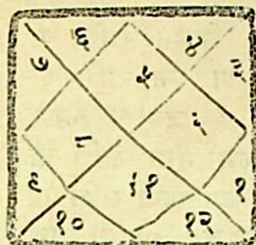
पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में केतू तुला, धन, मकर, इनमें से किसी राशि पर हो या राहू मिथुन राशि पर आवेंगे या शनी जिन जिन वर्षों में मिथुन राशि पर या कुम्भ राशि पर या कन्या राशी पर या तुला राशि पर या सिंह राशि पर जब २ आवेंगे या वृहस्पति जिन २ वर्षों में मिथुन राशि पर या सिंह राशि या तुला राशि पर या वृश्चिक राशि पर या धन राशि पर जब २ आवेंगे, तब-तब इन वर्षों में उन्नति और लाभ के साधन प्राप्त होते हैं। किन्तु यह बात विचार में अवश्य रखें कि इन लाभ के वर्षों में उन मासिक लाभ के ग्रहों का योग भी जब २ अनुकूल होगा, तब २ ही इन वर्षों के लाभ के सुन्दर ढङ्ग प्राप्त होते रहेंगे। किन्तु इसके विपरीत जिन २ वर्षों में केतू मिथुन राशी पर या सिंह राशी या कन्या राशी पर या मेष राशी पर या वृषभ राशि पर जब २ आवेंगे या राहू धन राशि पर या मीन राशि पर या कन्या राशि पर जब २ आवेंगे या शनी जिन २ वर्षों में मेष राशि पर या कर्क राशि पर या मीन राशी पर जब २ आवेंगे या जिन २ वर्षों में वृहस्पति मकर राशि पर या कर्क राशि पर या कन्या राशी पर या वृषभ राशि पर जब आवेंगे, तब २ इन वर्षों में कुछ अशांति व कुछ हानिकारक योग पैदा होता रहता है। इसी प्रकार यह ध्यान देने योग्य बात है कि जन्म के समय जिन मनुष्यों की जन्म कुण्डली में भी यदि ऊपर लिखे अनुसार जो २ कोई ग्रह इसी प्रकार की राशियों में बैठा होगा, तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे अनुसार ही फल देता रहेगा, इसके अतिरिक्त जो २ कोई ग्रह जिस किसी समय में या जन्म कुण्डली में सूर्य से अस्त होगा या जो कोई ग्रह २६ अंश से कम होगा, तो वह ग्रह अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल नहीं दे सकता है, क्योंकि वह ग्रह निर्बल होता है।

कु० नं० ५६



पंचांग के अन्दर जिन-जिन वर्षों में व मासों में शनि वृषभ राशि पर या मिथुन राशि पर या तुला राशि पर या धन राशि पर जब २ आवेंगे और राहू जब २ कभी मिथुन राशि या मकर राशि पर आवेंगे और केतू जब २ कभी धन राशि पर या मकर राशि पर आवेंगे और वृहस्पति जब २ कभी मिथुन राशि पर या सिंह राशि पर या वृश्चिक राशि पर या धन राशि पर जब-जब आवेंगे और सूर्य जब २ कभी सिंह राशि या मेष राशि या मिथुन राशि पर या वृषभ राशि पर या वृश्चिक राशि पर जब २ कभी आवेंगे और मङ्गल जब २ कभी मेष राशि पर या वृषभ राशि पर या मिथुन राशि पर या सिंह राशि पर या कन्या राशि पर या तुला राशि पर या वृश्चिक राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर जब २ आवेंगे और बुध जब कभी मिथुन राशि पर या सिंह राशि पर या कन्या राशि पर या वृश्चिक राशि पर या धन राशि पर या कुम्भ राशि पर या मेष राशि पर या वृषभ राशि पर या तुला राशि पर जब २ आवेंगे और शुक्र जब २ कभी वृषभ राशि पर या मिथुन राशि पर या सिंह राशि पर या वृश्चिक राशि पर या कुम्भ राशि पर या मेष राशि पर या तुला राशि पर जब २ आवेंगे और चन्द्रमा जब २ कभी मिथुन राशि पर या तुला राशि पर या कुम्भ राशि पर या कर्क राशि पर जब जब कभी आवेंगे अर्थात् यह उपरोक्त सभी ग्रह एक ही समय में इन २ ऊपर वाली राशियों में ही कहीं न कहीं अवश्य होने चाहिए, तब-तब ही मनुष्य का राजयोग उस समयों में समझना चाहिये इसके अतिरिक्त जन्म के समय में जिन मनुष्यों को जन्म कुण्डली के अन्दर यदि उपरोक्त ग्रह उपरोक्त राशियों के अनुसार ही जो २ कोई बैठे होंगे तो वह श्रेष्ठ फलदाता प्रायः सारे जीवन के लिये समझे जावेंगे, किन्तु जो ग्रह सूर्य से अस्त होंगे या शून्य अंश होंगे तो वह निर्बल समझे जायँगे।

कु० नं० ६०



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में वृहस्पात धन राशी, मेष राशी, सिंह राशी मिथुन राशी पर जब २ कभी आवेंगे, या मङ्गल जब २ कभी धन राशि, कन्या राशी, वृषभ राशी मिथुन राशी पर जब २ आवेंगे या शुक्र जब २ कभी धन राशी, मिथुन राशी पर आवेंगे या सूर्य जब २ कभी धन राशी, मिथुन राशी पर आवेंगे वा बुध जब २ कभी धन राशी मिथुन राशी पर आवेंगे या केतू जब २ कभी धन राशी पर आवेंगे, तब २ विद्या, बुद्धि व संतान पक्ष में उन्नति व सुख के कारण उत्पन्न होते हैं और इसके विपरीत यदि वृहस्पति मकर राशी, मीन राशी, कर्क राशी, कन्या राशी पर जब २ कभी आवेंगे या चन्द्रमा जब जब कभी धन राशी, मिथुन राशी पर आवेंगे या शनी जब कभी धन राशी, मीन राशी, तुला राशी, मिथुन राशी पर जब २ कभी आवेंगे या राहू जब २ कभी धन राशी पर आवेंगे, तब २ विद्या व संतान पक्ष के विषय में अशांती या कुछ कमजोरी का योग पैदा करते हैं और वृहस्पति उपरोक्त राशियों से बची हुई राशियों में, जब २ आवेंगे तब तब सामान्य फल प्राप्त करेंगे और यदि जन्म के समय में जो २ कोई ग्रह इस प्रकार की उपरोक्त राशियों में से, जिस किसी भी राशी का जो कोई ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो वह ग्रह विद्या और संतान पक्ष के विषय में उपरोक्त फल के अनुसार ही प्रायः सारे जीवन भर ही फल प्रदान करता रहेगा, किन्तु जिसकी कुण्डली में या पंचांग गति के अन्दर जो कोई भी ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या जो कोई ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपना फल पूरी पूरी शक्ति के अनुसार नहीं दे सकेगा।

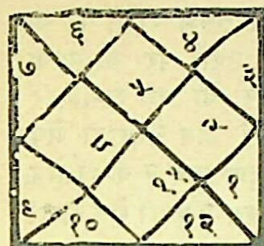
सिंह लग्न वालों को—आयू व उदर और पुरातत्व संबन्धी फलादेश

कुं० नं० ६१

६ ४
७ ५ ३
८
९ ११ १
१० १२

पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में, वृहस्पति, मीन राशि या मिथुन राशि या सिंह राशि वृश्चिक राशि या धन राशि या मेष राशि या कन्या राशि पर जब २ कभी आवेंगे या मङ्गल जब २ कभी मीन राशि या सिंह राशि या धन राशि या कन्या राशि पर जब २ कभी आवेंगे या शुक्र जब २ कभी मीन राशि पर आवेंगे या सूर्य जब कभी कन्या राशि पर आवेंगे तब तब आयु, व उदर और पुरातत्व सम्बन्धी विषयों में लाभकारी व उन्नतिदायक फल प्राप्त करते हैं किन्तु इसके विपरीत यदि वृहस्पति, मकर राशि पर जब २ आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी मीन राशी पर आवेंगे या बुध जब २ कभी मीन राशि पर या कन्या राशि पर आवेंगे या राहू या केतू जब २ कभी मीन और कन्या राशि पर आवेंगे तब २ आयू व उदर और पुरातत्व सम्बन्धों में परेशानी का योग पैदा करते हैं और यदि वृहस्पति जब २ कभी, वृषभ राशि या कर्क राशि या तुला राशि या कुम्भ राशि पर जब २ आवेंगे तब २ इस प्रकर्ण में सामान्य फल देवेंगे, और इसी प्रकार के ग्रह यदि जन्म के समय ऊपर लिखे अनुसार जिस प्रकार की राशियों में जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही उपरोक्त प्रकार का फल सिंह लग्न वाले व्यक्तियों को देते रहेंगे, किन्तु यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो चाहे वह जन्म कुण्डली में हो, चाहे पंचाग गोचर में हो किन्तु निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा पूरा फल नहीं दे सकता।

कुं० नं० ६२



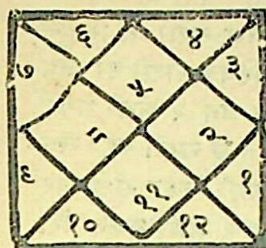
पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में शनी कुम्भ राशी पर या वृषभ राशी पर या मिथुन राशी पर या सिंह राशी पर या तुला राशि पर या वृश्चिक राशी पर या धन राशी पर या धन राशि पर जब २ कभी आयेंगे या शुक्र जब २ कभी कुम्भ राशी पर या सिंह राशी पर आयेंगे या मङ्गल जब-जब कभी कुम्भ राशि पर या वृश्चिक राशि पर या सिंह राशि पर जब २ आयेंगे, या बुध जब २ कभी कुम्भ राशि पर या सिंह राशि पर आवेंगे या वृहस्पति जब २ कभी मिथुन राशी पर या तुला राशि पर जब २ आवेंगे तब २ स्त्री व दैनिक रोजगार के सम्बन्ध में लाभ की सूरतें पैदा करेंगे किन्तु इसके विपरीत यदि शनी मकर राशि पर या मीन राशि पर या मेष राशि पर या कर्क राशि पर या किसी अंशों में कन्यां राशी पर जब २ आवेंगे या वृहस्पति जब २ कुम्भ राशि पर आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी कुम्भ राशि पर व सिंह राशि पर आयेंगे तब-तब स्त्री व दैनिक रोजगार के स्थान पर अशांति व कुछ हानियों के योग पैदा करते हैं। इसी प्रकार यदि जन्म के समय में इन सभी उपरोक्त ग्रहों में से जो कोई भी ग्रह इन उपरोक्त राशियों के असनुार जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही इसी ऊपर लिखे अनुसार ही फल प्रदान करते रहेंगे और यदि जो कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली में या पंचांग की गोचर प्रणाली में सूर्य से अस्त होगा या २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति का पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

सिंह लग्न वालों को धर्म, भक्ति, व दैवी शक्ती के योगों को फलादेश

कुं० नं० ६३

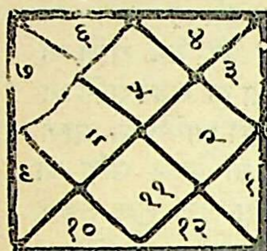
पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में मङ्गल मेष राशी पर या वृषभ राशी पर या मिथुन राशी पर या सिंह राशी पर या कन्या राशी पर या तुला राशी पर या धन राशी पर जब २ कभी आवेंगे या सूर्य जब २ कभी मेष राशी पर आवेंगे या शुक्र जब २ कभी मेष राशी पर आवेंगे या बुध जब २ कभी मेष राशी पर आवेंगे या किसी अंशों में मङ्गल जब २ कभी वृश्चिक राशी पर या मकर राशी पर आवेंगे तब २ भाग्य और धर्म व दैवी सफलताओं की शक्ति अनुकूल प्राप्त होती है और इसके विपरीत यदि मङ्गल जब २ कभी मीन राशी पर या कर्क राशी पर जब जब आवेंगे या शनी जब २ कभी मेष राशी पर या तुला राशी पर या कर्क राशी पर जब २ आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी मेष राशी पर या तुला राशी पर आवेंगे या राहू या केतू जब २ कभी मेष राशी पर या तुला राशी पर आवेंगे तब २ धर्म भाग्य और दैवी सफलता अर्थात् भक्ति भावना इन सब विषयों में कमी व कुछ अशांती पैदा करते हैं और इन्हीं ऊपर वाले सब ग्रहों में से और कोई भी ग्रह यदि जन्म के समय में जन्म कुण्डली के अन्दर इसी २ प्रकार की राशियों में से जो २ कोई भी बैठे होंगे, वह सभी ग्रह प्राय: सारे जीवन भर अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहेंगे किन्तु यदि जन्म कुण्डली में या पंचांग गोचर प्रणाली में जो कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या जो कोई ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या जो कोई ग्रह १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह अपना पूरा २ फल पूरी शक्ति के अनुसार नहीं दे सकेगा क्योंकि वह निर्बल होते हैं और बृहस्पति का फल इस उपरोक्त विषयों में सामान्य रहेगा ।

कुं० नं० ६४



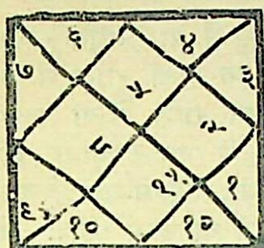
पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में सूर्य, सिंह राशि वृश्चिक राशि या धन राशि या कुम्भ राशि या मेष राशि या वृषभ राशि या मिथुन राशि या मकर राशि या मिथुन राशि पर जब २ कभी आवेंगे या मङ्गल जब २ कभी सिंह राशि या वृषभ राशि या मकर राशि या कुम्भ राशि पर, शुक्र जब २ कभी सिंह राशि या कुम्भ राशि पर आवेंगे या बुध जब २ कभी सिंह राशि या कुम्भ राशि पर जब २ आवेंगे तब २ देह और आत्मबल व सुन्दरता के सम्बन्ध में, उन्नति और लाभ का योग पैदा करते हैं। और यदि इनके विपरीत सूर्य जब २ कभी कर्क राशि या तुला राशि या मीन राशी या कन्या राशि में कुछ अंशों में मकर राशि पर जब २ आवेंगे या शनी जब २ कभी सिंह राशि या मिथुन राशि या वृश्चिक राशि या कुम्भ राशि पर जब २ आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी सिंह राशि या कुम्भ राशि पर जब २ आवेंगे, राहू या केतू जब २ कभी सिंह राशि या कुम्भ राशी पर दोनों में से कहीं भी आवेंगे तब तब देह और आत्मबल व सुन्दरता के विषय में कमी व कमजोरी व अशांती का योग पैदा करते हैं। और इन्हीं ऊपर वाले ग्रहों में से यदि जन्म के समय में जन्म कुण्डली के अन्दर इसी २ प्रकार की राशियों में से कोई ग्रह आकर बैठेगा तो वह ग्रह प्राय: अधिकांश रूप में सारे जीवन भर ऊपर लिखे फल के अनुसार ही फल देता रहता है। किन्तु जब कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली में या पंचांग की गोचर प्रणाली के अन्दर यदि सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल नहीं दे सकता है वृहस्पति का फल भाव में सामान्य होने के कारण नहीं लिखा है।

कुं० नं० ६५



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में, शनी,मकर राशि या वृषभ राशी या मिथुन राशी या तुला राशी या वृश्चिक राशी पर जब जब कभी आवेंगे या मङ्गल जब २ कभी मकर राशी या मिथुन राशी या तुला राशी पर जब २ आवेंगे या सूर्य जब २ कभी मकर राशी पर आवेंगे या राहू या केतू जब २ कभी मकरराशि या कर्क राशी पर जब २ आयेंगे तब २ शत्रु पक्ष झगड़े झंझट रोगादिक पक्ष में विजय और लाभ के योग पैदा करते हैं। और यदि शनी जब २ कभी कुम्भ राशी या सिंह राशी या धन राशी या कन्या राशी पर जब २ आयेंगे तब २ शत्रु पक्ष में रोगादिक झगड़े झंझटों के सम्बन्ध में कुछ दिक्कतों के साथ कामयाबी की सूरतें पैदा करते हैं और इसके विपरीत यदि शनी जब कभी मीन राशी या मेष राशी या कर्क राशी पर जब २ आवेंगे या वृहस्पति जब जब कभी मकर राशी या कर्क राशी पर वृषभ राशी या कन्या राशी पर जब जब आवेंगे या बुध जब २ कभी मकर राशी या कर्क राशीं पर आवेंगे या चन्द्रमा जब कभी मकर राशी पर आवेंगे तब-तब शत्रु, झगड़े झंझट रोगादि के विषय में, परेशानी व अशाँती के कारण पैदा होते हैं। और इसी प्रकार के ग्रहों में से जो-जो कोई भी ग्रह, जन्म के समय यदि इन्हीं २ राशियों में से किसी भी राशि का होकर जो कोई ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठेगा तो वह सारे जीवन भर ही अधिकांश रूप में उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करता रहेगा और जो कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली या पंचाँग की गोचर प्रणाली के अन्दर यदि सूर्य से अस्त होगा या कोई ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकेगा।

कुं० नं० ६६



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्ष में मंगल वृश्चिक राशी में या मेष राशी में या वृषभ राशी में या सिंह राशी में या मिथुन राशि में जब २ कभी आवेंगे या शुक्र जब २ कभी, वृश्चिक राशी में या वृषभ राशी में आयेंगे या सूर्य जब २ कभी वृश्चिक राशी में या वृषभ राशी में आयेंगे या बुध जब २ कभी वृश्चिक राशी में या वृषभ राशी में आयेंगे तब २ मकान भूमि व माता सुख शाँती आदि के विषय में लाभप्रद व उन्नतिदायक सुखद सिद्ध होते हैं। किन्तु इसके विपरीत यदि मङ्गल जब २ मीन राशी पर या कर्क राशी पर जब २ कभी आयेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी वृश्चिक राशी पर या वृषभ राशी पर आयेंगे या शनी जब २ कभी वृश्चिक राशी पर या कुम्भ राशी पर या कन्या राशी पर या वृषभ राशी पर आयेंगे या वृहस्पति जब २ कभी वृश्चिक राशी पर या कर्क राशी पर या मीन राशी पर जब२ आवेंगे या राहू या केतू जब २ कभी वृश्चिक राशि पर या वृषभ राशी पर आयेंगे ,तब २ माता व मातृ स्थान व सुख शाँती के सम्बन्धों में अशाँती व कमी का योग पैदा करते हैं और यदि मंगल जब २ कभी कन्या राशि पर या तुला राशी पर या धन राशी पर या मकर राशी पर या कुम्भ राशी पर जब २ आयेंगे तब २ माता व सुख शांती और मकानादि के सम्बन्ध में कुछ सामान्य लाभदायक होते हैं। और इन सभी राशियों में से किसी भी राशी का कोई ग्रह यदि जन्म के समयमें जन्म कुण्डली के अन्दर ऊपर लिखे अनुसार जो कोई ग्रह बैठा होगा,तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल करेगा। और जो कोई भी ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या तो कोई ग्रह २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल नहीं दे सकेगा।

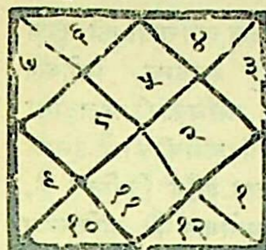
सिंह लग्न वालों को, मान, प्रतिष्ठा, पिता बड़ा कारबार राज समाजआदि का फलादेश

कु० नं० ६७

६ ४ ५ ७ ३ ८ २ ९ १ ११ १० १२

पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में शुक्र वृषभ राशि में या मिथुन राशी में या सिंह राशि में या तुला राशि में या वृश्चिक राशि में या धन राशि में या कुम्भ राशि में या मेष राशि में जब २ आवेंगे या मङ्गल जब २ कभी वृषभ राशि में या वृश्चिक राशि में या तुला राशि में या कुम्भ राशि में जब २ आवेंगे या बुध जब २ कभी वृषभ राशि में या वृश्चिक राशि में आवेंगे या सूर्य जब २ कभी वृषभ राशि में या वृश्चिक राशि में आयेंगे या शनी जब २ कभी वृषभ राशी में या सिंह राशि में आवेंगे तब-तब मान प्रतिष्ठा कार व्यापार-पिता राज समाज आदि सम्बन्धों में लाभकारी व उन्नतिदायक योग पैदा करते हैं। और इसके विपरीत यदि शुक्र जब २ कभी कर्क राशि में या कन्या राशि में या मकर राशि में या मीन राशी में जब आयेंगे या वृहस्पति जब २ वृषभ राशि में या कन्या राशि में या मकर राशि में जब २ आयेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी वृषभ राशि में आयेंगे या राहू या केतू जब २ कभी वृषभ राशि में व वृश्चिक राशि में आवेंगे तब तब उन्नति के मार्ग में व पिता सम्बन्ध में व मान प्रतिष्ठा के विषयों में हानिकारक व अशांतिदायक योग पैदा करते हैं और यदि इन्हीं २ उपरोक्त राशियों वाले ग्रहों में से जो २ कोई ग्रह जन्म के समय यदि जन्म कुण्डली में, उपरोक्त लिखे हुये स्थानों में से जिस किसी भी स्थानों में बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकांश रूप में ऊपर लिखे हुये फलादेश के अनुसार ही फल देता रहेगा किन्तु जन्म कुण्डली में या पंचांग की गोचर प्रणाली के अन्दर जो कोई भी ग्रह सूर्य अस्त होगा या जो कोई भी ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण से अपनी शक्ति के अनुसार पूरा-पूरा फल प्रदान नहीं कर सकता है।

कुं० नं० ६८

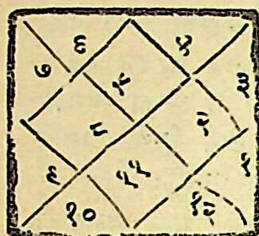


(मं०) सिंह लग्न वाले व्यक्तियों को भाग्य धर्म, ईश्वर भक्ति, यश दैवी सफलता, माता, भूमि, मकानादि सुख परलोक इन्यादि २ विषयों के प्रधान अधिकारी ग्रह मङ्गल हैं, इनका रङ्ग लाल है, इनकी मणी मूँगा है, इनका स्वभाव न्यायोक्त गरम और शांत प्रिय है यह उन्नति प्रदान करने में दैवी योग से शांती पूर्वक कार्य करके सफलता प्रदान करते हैं इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियाँ यह हैं–१–२–३–५–६–७–८–६–१० –११ और ४–२ नेष्ठ राशि हैं।

(शु०) सिंह लग्न वाले व्यक्तियों को राज्य पिता, कारबार कर्म मान प्रतिष्ठा, भाई बहन, पराक्रम, लेखन शक्ति इत्यादि २ विषयों में प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शुक्र हैं, इनका रङ्ग सफेद है इनकी मणी हीरा है इनका स्वाभाव बड़ा कलाधारी कर्मठ है यह उन्नति प्रदान कर में बाहुबल की शक्ति अर्थात् अपने हाथों की शक्ति से रचनात्मक कार्य करते हैं इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियाँ यह हैं— २–३–५–७–८–११–१–६ और नेष्ठ राशियां ४–६–१०–१२ यह हैं।

(बु०) सिंह लग्न वाले व्यक्तियों को धनलाभ, धनसंग्रह आवश्यक पदार्थों का लाभ, कुटुम्ब शक्ति, धनोपार्जन की विवेक शक्ति, इत्यादि २ विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह बुध हैं, इनका रङ्ग हरा है, इनकी मणी पन्ना है, इनका स्वभाव कोमल विवेकी स्वार्थ युक्त है यह उन्नति प्रदान करने में विवेकी शक्ति से कार्य करते हैं उनका कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियां यह हैं ३–५–६–८–६–११-१-२-७ और नेष्ठ राशियां ४–१०–१२ हैं। इनकी विशेषता यह है कि बुरे से बुरे से बुरे समय में भी विवेक की शक्ती से धन की कार्य पूर्ती प्रदान कर देते हैं।

कुं० नं० ६६

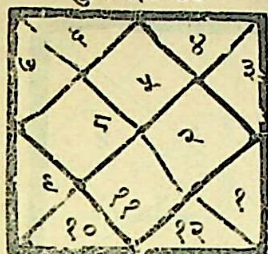


(च) सिंह लग्न वाले व्यक्तियों को खर्च की शक्ति, वाहरी स्थानों का सम्बन्ध, मनोवल इत्यादि२ विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह चन्द्रमा हैं इनका रङ्ग गौरचमकीला है इनका मणी मोती है, इनका स्वभाव शाँत चिन्तित है, यह उन्नतिप्रदान करने में मनोबल की शक्तितथा वाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कार्य करते हैं इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियाँ यह हैं ४-७-३ और नेष्ट राशियाँ ६-८-१०-१२ हैं।

(सू०) सिंह लग्न वाले व्यक्तियों को देह आत्म-बल स्वरूप तेज इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह सूर्य हैं। इनका रंग सुनहला लाल है,इनकी मणी माणिक है इनका स्वभाव महान गरम ज्ञान युक्त है। वह उन्नति प्रदान करने में देह व आत्मवल की शक्ति से काय करते हैं। इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह-५-८-९-१-२-३-११हैं और नेष्ट राशियाँ यह-४-१२-७ हैं और सामान्य राशियाँ यह-६-१० हैं।

(गु) सिंह लग्न वाले व्यक्तियों को विद्या, सन्तान, वाणी, आयु मृत्यु पुरातत्व, जीवन की दिनचर्या हृदय का गूढ ज्ञान इत्यादि २ विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह वृहस्पति हैं इनका रंग पीला है,इनकी मणी पुखराज है,इनका स्वभाव वुजुर्गी युक्त लौकिक ज्ञान की गहराई का है यह उन्नति प्रदान करने में वुद्धी के गहरे विचारों से कार्य करते है। इनका कुण्डली के अन्दर वैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह-९-३ ८--१-५ हैं और नेष्ट राशि यह-१०हैं और सामान्य राशियाँ ११-१२ २--४-६ हैं। इनकी विशेषता यह है कि वुरे से वुरे समयमें भी जीवन निर्वाह करने की साधन शक्ति की पूर्ती वुद्धी योग से करते हैं।

कुं० नं० ७०



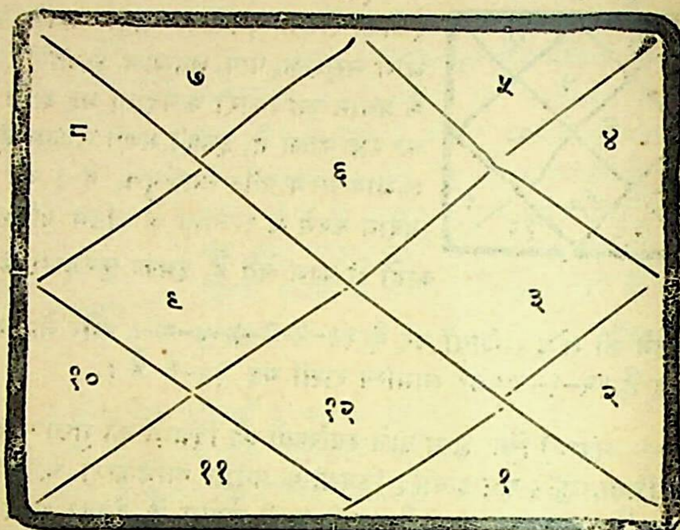
(श०) सिंह लग्न वाले व्यक्तियों को स्त्री, दैनिक, रोजगार, रोग, शत्रु, झगड़े, झंझट, भोग ससुराल, पाप, ननसाल, इत्यादि २ विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शनी हैं इन का रङ्ग काला है, इनकी मणी नीलम है, इनके स्वभाव गरम और स्वार्थयुक्त है । यह उन्नति प्रदान करने में रोजाना के कठिन परिश्रम युक्त कार्यों से काम लेते हैं, इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह है ११-२-३-५-७-८-६ और नेष्ठ राशियाँ यह हैं १२-१-४ और सामान्य राशी यह १०-६ हैं ।

(रा०) सिंह लग्न वाले व्यक्तियों को दिमाग की गुप्त चालाकियों व चिंता, झूंठ कष्ट इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह राहू हैं इनका रङ्ग काला है इनकी मणी गोमेध है इनका स्वभ व गुप्त युक्ति से अधिक लाभ करने का है यह उन्नति प्रदान करने में गुप्त तरकीबों में कार्य करते हैं इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं ३-७-१० और नेष्ठ राशियाँ यह हैं ५-६-८-१२-६-१ और सामान्य राशी ११-२ हैं ।

(के०) सिंह लग्न वाले व्यक्तियों के गुप्त धैर्य, गुप्त वीरत्व, चिंता कष्ट इन सब विषयों के प्रधान अधिकारी ग्रह केतू हैं इनका रङ्ग काला है इनकी मिणियाँ लहसनियां है इनका स्वभाव कष्ट युक्त गुप्त धैर्य वाला है यह उन्नति प्रदान करने में कष्ट साध्य कम से निरंतर लगाकर कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशिया यह हैं ६-७-१० और नेष्ठ राशिया यह हैं ६-१६-५-१-४ और सामान्य राशिया यह हैं ११-८-३ इनकी विशेषता यह है कि यह बुरे से बुरे समय में भी आन्तरिक धैर्य और आन्तरिक वीरत्व से काम लेकर सहारा देते हैं ।

कन्या लग्न फलादेश प्रारम्भ

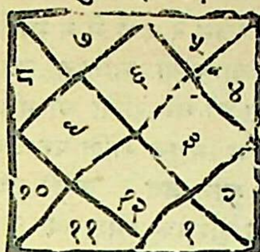






इस कन्या लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सुख और धन लाभ के सम्बन्ध में मुख्य ग्रह प्रायः सू० शु० बु० चं० ही हैं और अधिकांश इन्हीं ग्रहों के रंग व मणियां धनोन्नति संबंधी सभी व्यापारादि कार्यों में लाभप्रद सिद्ध होंगे, किन्तु राशि और स्थानान्तर के भेद से प्रायः सभी ग्रह अच्छे और बुरे फल के सूचक बन जाते हैं जैसा कि आपको कुण्डली नं० ७१ से लेकर कुण्डली नं० ८४ तक में विचारहेतु इन सभी ग्रहों का भाग्य के हर एक विषय में भिन्न २ फलादेश महान् सरल रूप से जानने को मिलेगा।

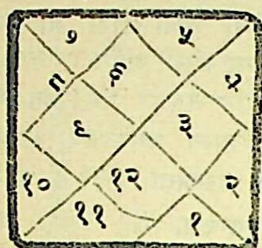
कुं० नं० ७१



इस कन्या लग्न में जन्म लेने वालों को जिस २ दिनों में पंचांग के अन्दर चन्द्रमा कर्क राशि या कन्या राशि या तुला राशि या धन राशि या मकर राशि या मीन राशि या वृषभ राशि या मिथुन राशि पर जब २ कभी आवेंगे तब-तब धन लाभ एवं अन्य आवश्यक लाभ करते हैं और मन को प्रसन्नता रहती है और इसके विपरीत यदि चन्द्रमा सिंह राशि या वृश्चिक राशि या कुम्भ राशि या मेष राशि पर जब २ कभी आयेंगे तब २ धन लाभ और आवश्यक पदार्थों की प्राप्ति में कुछ न कुछ कमी व मन को अशांति प्रदान करते हैं और यदि इसी २ प्रकार की राशियों में चन्द्रमा जन्म कुण्डली में भी ऊपर लिखे अनुसार कहीं बैठा होगा तो वह प्राय: अधिकांश रूप से सारे जीवन भर ही उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल देता रहेगा। **(धन लाभ का मासिक फलादेश)**

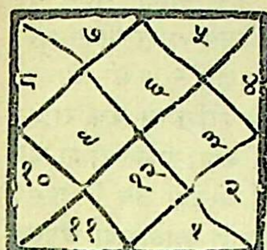
कन्या लग्न वालों को पंचांग के अन्दर जिन २ मासों में शुक्र वृषभ राशि या मिथुन राशि या कर्क राशि या तुला राशि या वृश्चिक राशि या धन राशि या मकर राशि या मीन राशि पर जब २ भी आवेंगे या बुध जब २ कभी वृषभ राशि में या मिथुन राशि में या कर्क राशि में या कन्या राशि में या तुला राशि में या वृश्चिक राशि में या धन राशि में या मकर राशि में जब २ आयेंगे या सूर्य जब २ कभी कर्क राशि में या सिंह राशि में या वृश्चिक राशि में आयेंगे या मङ्गल जब २ कभी मेष राशि में या वृश्चिक राशि में या कन्या राशि में जब २ आवेंगे तब तब इन मासों में लाभप्रद उत्तम समय व्यतीत होगा और इसके विपरीत यदि शुक्र जब २ कभी सिंह राशि या कन्या राशि या कुम्भ राशि या मेष राशि पर जब २ आयेंगे या बुध जब २ कभी सिंह राशि या कुम्भ राशि या मीन राशि या मेष राशि पर जब कभी आयेंगे या मङ्गल जब जब कभी कर्क राशि या सिंह राशि या तुला राशि पर जब २ आयेंगे या सूर्य जब २ कभी तुला राशि पर आयेंगे तब-तब इन मासों में लाभ की हानि व कुछ कमी का योग पैदा करते हैं।

कु० नं० ७२



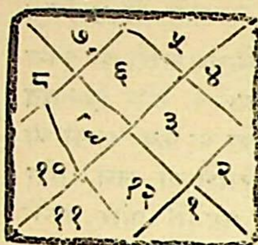
पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में बृहस्पति, कर्क राशि या कन्या राशि या तुला राशि या वृश्चिक राशि या धन राशि या मीन राशि या वृषभ राशि या मिथुन राशि पर जब जब कभी आवेंगे या शनि जब २ कभी कर्क राशि या तुला राशि या वृश्चिक राशि या धन राशि या मकर राशि या वृषभ राशि पर जब २ भी आवेंगे या राहू जब २ कभी कर्क राशि में या वृश्चिक राशि या कुम्भ राशि या मिथुन राशि में जब २ आयेंगे या केतू जब २ कभी कर्क राशि या वृश्चिक राशि या कुम्भ राशि या धन राशि में जब कभी आवेंगे तब २ इन वर्षों में धन लाभ व उन्नति के साधन प्राप्त होते हैं किन्तु इस उन्नति वाले वर्षों में ज मासिक धन लाभ के ग्रह योग हैं वह भी जब २ अनुकूल आते हैं तब २ इन उन्नति के वर्षों में अच्छा धन लाभ योग प्राप्त होता रहता है और इसके विपरीत यदि बृहस्पति जब २ कभी सिंह राशि या मकर राशि या मेष राशि में जब २ आवेंगे या शनि जब २ कभी सिंह राशि या मेष राशि या मीन राशि में जब २ आवेंगे या राहू जब २ कभी तुला राशि या धन राशि या मेष राशि या मीन राशि में जब २ आवेंगे या केतू जब २ कभी तुला राशि या मिथुन राशि या मेष राशि या मीन राशि में जब २ कभी आवेंगे तब-तब उन वर्षों में हानिकारक प्रतिकूल, अशांतप्रद फल प्राप्त होता रहता है, और जन्म के समय यदि इसी प्रकार की राशियों मेंसे पर लिखे अनुसार जो कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकांश रूप में ऊपर लिखे अनुसार ही फल प्रदान करता रहता है, किन्तु जो कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण जन्म कुण्डली में या वार्षिक धन लाभ के विचार में उत्तम फल नहीं दे सकता है ।

कु० नं० ७३



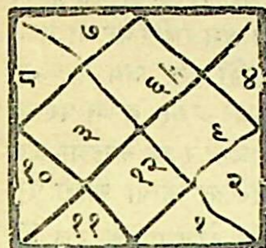
पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व जिन मासों में व दिनों में बुध मिथुन राशी या वृषभ राशी में जब २ कभी आवेंगे और वृहस्पति जब-जब कभी मिथुन राशि या कर्क राशी या कन्या राशी या वृश्चिक राशि या धन राशि या मीन राशि में जब २ आवेंगे और शनी जब २ कभी कर्क राशि या तुला राशी या वृषभ राशि या मकर राशि या वृश्चिक राशि में जब २ आवेंगे और शुक्र जब २ कभी वृषभ राशि या मिथुन राशि या कर्क राशि या तुला राशि या वृश्चिक राशि या धन राशि या मीन राशि या मकर राशि में जब २ आवेंगे और मङ्गल जब २ कभी कन्या राशि या मकर राशि या मेष राशि या वृश्चिक राशि में जब २ आवेंगे और सूर्य जब २ कभी सिंह राशि या मेष राशि या वृश्चिक राशि में जब २ आवेंगे और चन्द्रमा जब २ कभी कर्क राशि या तुला राशि या धन राशि या मीन राशि या वृषभ राशि या मिथुन राशि या कन्या राशि या मकर राशि में जब आवेंगे, और राहू जब २ कभी मिथुन राशि या कर्क राशि या वृश्चिक राशि या कुम्भ राशि में जब २ आवेंगे और केतू जब २ कभी धन राशि या कर्क राशि या वृश्चिक राशि या कुम्भ राशि में जब-जब आवेंगे अर्थात् इन ऊपर लिखे हुए सभी ग्रहों में से हर एक ग्रह इन्हीं २ उपरोक्त राशियों में से ही किसी न किसी राशियों में ही जब २ यह सभी ग्रह, एक साथ जिन वर्षों में व मासों में आवेंगे, तब २ ही कन्या लग्न वाले प्राणियों का भाग्य विविध प्रकार से उदय होकर राजयोग प्राप्त होता रहता है। यदि कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह निर्बल समझा जायगा।

कुं० नं० ७४



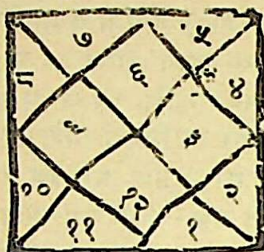
पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में शनी मकर राशि या कर्क राशि या कन्या राशि या तुला राशि या वृश्चिक राशि या मिथुन राशि या वृषभ राशि पर जब २ कभी आवेंगे या शुक्र जब २ कभी मकर राशि या कर्क राशि पर आवेंगे या बुध जब २ कभी मकर राशि या कर्क राशि पर आवेंगे या मङ्गल जब २ कभी तुला राशि या मिथुन राशि पर आवेंगे या चंद्रमा जब २ कभी मकर राशि या कर्क राशि पर आवेंगे तब २ संतान पक्ष को व विद्या स्थान को उन्नति व लाभ, सुख का योग पैदा है और इसके विपरीत यदि शनी, कुम्भ राशि या मेष राशि या सिंह राशि में जब-जब कभी आवेंगे या सूर्य जब २ कभी मकर राशि या कर्क राशि में आवेंगे या राहू या केतू जब २ कभी मकर राशि व कर्क राशि पर आवेंगे या वृहस्पति जब २ मकर राशि या कर्क राशि या कन्या राशि या वृषभ राशि पर आवेंगे तब २ विद्या व सन्तान पक्ष को कुछ हानिकारक या परेशानी कारक योग पैदा होता है और शेष ग्रह जो शेष स्थानों में आवेंगे वह सामान्य फल प्रदान करते हैं, इसके अतिरिक्त ऊपर लिखी स्थिति के अनुसार जो ग्रह जन्म के समय इन्हीं २ राशियों में जो २ कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो वह ग्रह अपना फल ऊपर लिखे अनुसार ही प्रायः सारे जीवन भर अधिकांश रूप में विद्या और सन्तान पक्ष में देता रहेगा और यदि कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली में या पंचांग गोचर प्रणाली में सूर्य से अस्त होगा या जो कोई भी ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या जो कोई ग्रह १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपना पूरा-पूरा फल अपनी शक्ति के अनुसार नहीं दे सकेगा।

कुं० नं० ७५



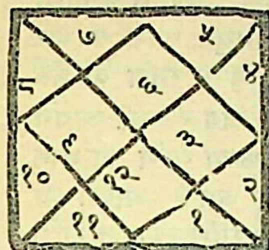
पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में मङ्गल मेष राशि पर या कन्या राशि पर या वृश्चिक राशि पर या मकर राशि पर या धन राशि पर या तुला राशि पर या मिथुन राशि पर या वृषभ राशि पर या मीन राशि पर जब २ कभी आयेंगे या बृहस्पति जब २ कभी मेष राशि पर या धन राशि पर या तुला राशि पर आयेंगे या शुक्र जब २ कभी मेष राशि या तुला राशि पर आयेंगे या बुध जब २ कभी मेष राशि पर या तुला राशि पर जब २ आयेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी मेष राशि पर या तुला राशि पर आयेंगे तब-तब आयु एवं उदर तुरातत्व सम्बन्धों में लाभकारी सुखदायक योग उत्पन्न करते हैं और इसके विपरीत यदि मङ्गल सिंह राशि में या कर्क राशि में या कुम्भ राशि में जब २ कभी आयेंगे या शनी जब २ कभी मेष राशि पर या कर्क राशि पर या कुम्भ राशि पर जब २ आयेंगे या राहू या केतू जब २ कभी मेष राशि पर या तुला राशि पर जब २ आवेंगे तब २ आयु, उदर पुरातत्व सम्बन्धों में चिंताकारक कष्टप्रद योग उत्पन्न करते हैं, और यदि जन्म के समय इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी इन्हीं उपरोक्त राशियों में से जिस २ किसी भी राशियों का होकर जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फल के अनुसार ही फल देता रहेगा और जन्म कुण्डली में या पंचांग गोचर प्रणाली में यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी पूरी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल नहीं दे सकेगा।

कु० नं० ७६



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में वृहस्पति, कर्क राशि पर या कन्या राशि पर या वृश्चिक राशि पर या धन राशि पर या मीन राशि पर या मिथुन राशि पर जब २ कभी आयेंगे या शुक्र जब कभी मीन राशि पर या कन्या राशि पर जब २ आयेंगे या चन्द्रमा जब जब कभी, मीन राशि पर या कन्या राशि पर आयेंगे, तब २ स्त्री व दैनिक रोजगार के पक्ष में, उन्नति व सुख लाभ का योग पैदा करते हैं और इसके विपरीत यदि, वृहस्पति जब २ कभी, मेष राशि पर या सिंह राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि या तुला राशि पर जब २ कभी आयेंगे या मङ्गल जब-जब कभी मीन राशि पर या धन राशि पर या कन्या राशि पर या सिंह राशि पर जब २ कभी आयेंगे या सूर्य, जब २ कभी मीन राशि पर या कन्या राशि पर आवेंगे या बुध जब २ कभी, मीन राशि पर या कन्या राशि पर आवेंगे या बुध जब २ कभी, मीन राशि पर या कन्या राशि पर जब २ आयेंगे या शनि जब २ कभी, मीन राशि पर या मकर राशि पर कन्या राशि पर या मिथुन राशि पर जब-जब कभी आयेंगे या राहू या केतू जब-जब कभी मीन राशि पर या कन्या राशि पर आयेंगे तब-तब स्त्री व दैनिक रोजगार के स्थान में परेशान व कष्ट और हानि के योग पैदा करते हैं और यदि यही उपरोक्त ग्रहों में से कोई ग्रह, जन्म कुण्डली के अन्दर इन ऊपर वाली राशियों में से जो २ कोई ग्रह जन्म के समय बैठा होगा तो वह प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकाश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल रहेगा और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या कोई भी ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो चाहे जन्म कुण्डली से हो चाहे पंचांग गोचर में हो, किन्तु वह निर्बल होने के कारण, अपनी शक्ति के अनुसार पूरा फल नहीं दे सकेगा ।

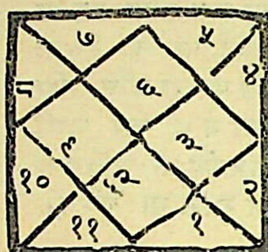
कुं० नं० ७७



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में मासों में शुक्र वृषभ राशि पर या कर्क राशि पर या वृश्चिक राशि या मकर राशि पर या मिथुन राशि पर या तुला राशि पर या मीन राशि पर जब २ कभी आवेंगे या बुध जब कभी वृषभ राशि पर या वृश्चिक राशि पर आयेंगेया बृहस्पति जब २ कभी वृषभ राशि या वृश्चिक राशि पर या कन्या राशि पर जब २ आयेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी वृषभ राशि या वृश्चिक राशि पर आयेंगे या शनि जब २ कभी वृषभ राशि पर आयेंगे, तब-तब भाग्य भक्ति-धर्म आदि दैवी शक्ति के गुणों की वृद्धि उत्पन्न करते हैं और इसके विपरीत यदि शुक्र जब २ कभी सिंह राशि पर या कन्या राशि पर या कुम्भ राशि पर या मेष राशि पर जब २ आयेंगे या सूर्य जब २ कभी वृषभ राशि या वृश्चिक राशि पर आयेंगे या मङ्गल जव २ कभी वृषभ राशि पर या तुला राशि पर पर या वृषभ राशि पर या कुम्भ राशि पर जब२ आयेंगे या राहू या केतू जब २ कभी वृषभ या वृश्चिक राशि पर आयंगे तब२ धर्म भाग्य ईश्वर भक्ति आदि के विषयों में कुछ हानिकारक व अशाँत प्रद योग पैदा होते हैं और इन्ही उपरोक्त ग्रहों में से कोई भी यदि जन्म के समय इसी २ प्रकार की उपरोक्त राशियों के अनुसार जो २ कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा, तो वह ग्रह ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही प्रायः अधिकाँश रूप में सारे जीवन भर ही फल देता रहता है और जम्म कुण्डली में या पंचाँग गोचर के अन्दर यदि जब २ कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या जो कोई ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या जो कोई ग्रह १ अंश से कम होगा,तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी पूरी २ शक्ति के अनुसार पूरा २ फल नहीं दे सकेगा।

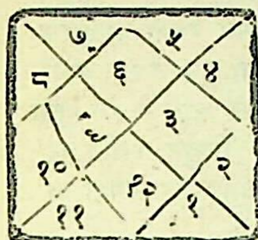
 कन्या लग्न वालों को देह, सुन्दरता, आत्मबल, ख्याति आदि का फलादेश

कुं० नं० ७८



पंचाग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में बुध कन्या राशि या मिथुन राशि या धन राशि या मकर राशि या वृषभ राशि या कर्क राशि या वृश्चिक राशि पर जब २ कभी आयेंगे या वृहस्पति जब २ कभी कन्या राशि या मीन राशि या वृषभ राशि पर जब २ आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी कन्या राशि या मीन राशि पर आयेंगे तब-तब देह की सुन्दरता व आत्म-बल की वृद्धि व ख्याति आदि प्राप्त करने का योग पैदा होता है और इसके विपरीत यदि बुध जब २ कभी सिंह राशि या कुम्भ राशि या मीन राशि या मेष राशि पर आयेंगे या सूर्य जब २ कभी कन्या राशि या मीन राशि पर आयेंगे या शुक्र जब २ कभी कन्या राशि पर आयेंगे या शनि जब २ कभी कन्या राशि या मीन राशि या कर्क राशि या धन राशि पर जब २ आयेंगे या मङ्गल जब २ कभी मिथुन राशि या मीन राशि या कुम्भ राशि या कन्या राशि पर जब २ आयेंगे या राहू या केतू जब-जब कभी कन्या राशि या मीन राशि पर आयेंगे, तब-तब देह की सुन्दरता में व आत्म-बल ख्याति आदि में कमी पैदा करते हैं। किन्तु कन्या या मकर का मङ्गल, ख्याति के विषय में सहायक रहता है, और इसी २ प्रकार के ग्रह योगों में से यदि जन्म के समय में उपरोक्त लिखे अनुसार जो २ कोई ग्रह ऊपर लिखी राशियों के अन्तर्गत जन्म कुण्डली में बैठे होंगे तो वह प्रायः सारे जीवन भर अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल देते रहते हैं, और जो कोई ग्रह जन्म कुण्डली में या पंचांग गोचर प्रणाली में सूर्य से अस्त होगा या जो २ कोई ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

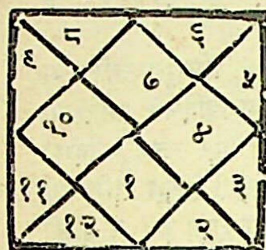
कु० नं० ७९



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में शनी कुम्भ राशि या मिथुन राशि या कर्क राशि या वृषभ राशि या वृश्चिक राशि या धन राशि या तुला राशि पर जब २ कभी आयेंगे या मंगल जब २ कभी कुम्भ राशि या वृश्चिक राशि पर आयेंगे या शुक्र जब २ कभी कुम्भ राशि पर आवेंगे या राहू या केतू जब २ कुम्भ राशि या सिंह राशि पर आवेंगे या सूर्य जब २ कभी कुम्भ राशि पर आवेंगे तब-तब शत्रु पक्ष में विजय और रोग झगड़े-झंझट आदि पक्षों में शाँती मुक्ति प्रदान करते हैं—और इसके विपरीत यदि शनि,मेष राशि या सिंह राशि या कन्या राशि या मकर राशी या मीन राशि पर जब जब २ आवेंगे और चन्द्रमा या बुध जब कभी कुम्भ राशि या सिंह राशि पर आवेंगे तब २ शत्रु रोगादिक झगड़े झंझटों की तरफ से कुछ चिन्ता व अशाँती का भोग उत्पन्न करते है किन्तु यह बात ध्यान रहे कि शत्रु स्थान व रोग झगड़े झंझटों की मुक्ति के अनुकूल समय के भी कुछ कठिनाइयों के अनुभव होते हैं क्योंकि इस स्थान के स्वामियों का व सहयोगियों का प्राकृतिक स्वभाव ही विषाद है और जन्म के समय यदि इन्हीं ग्रहों में से जो कोई भी ग्रह इन्हीं २ उपरोक्त राशियों के अन्तर्गत, जन्म कुण्डली में बैठा होगा तो, वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकाँश रूप में ऊपर लिखे अनुसार फलादेश के मुताबिक फल प्रदान करता रहेगा किन्तु जन्म कुण्डली में या पंचाँग की गोचर प्रणाली में जो २ कोई ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश स कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार अपना पूरा पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है ।

 कन्या लग्न वालों को, माता, भूमि, सुखशाँती मकानादि का फलादेश

कुं० नं० ८०



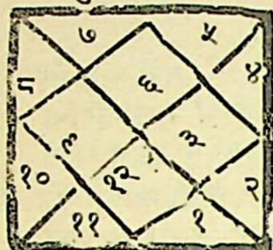
पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में वृहस्पति धन राशि या मीन राशि,या मिथुन राशि या कर्क राशि या कन्या राशि या वृषभ राशि पर जब २ आयेंगे या बुध जब २ कभी धन राशि या मिथुन राशि पर आयेंगे या शुक्र जब २ कभी धन राशि या मिथुन राशि पर आयेंगे या चन्द्रमा जब २कभी धन राशि या मिथुन राशि पर आयेंगे या केतू जब २ कभी धन राशि पर आयेंगे तब २ माता, मकानादि सुख शाँती, प्राप्तकरने के कारण पैदा होते रहते हैं, और इसके विपरीत यदि वृहस्पति जब २ कभी मकर राशि या कुम्भ राशि या मेष राशी या सिंह राशी या तुला राशी पर जब २ कभी आयेंगे या सूर्य जब २ कभी धन राशी या मिथुनराशी पर आयेंगे या मंगल जब २ कभी धन राशी या मिथुन राशी या कंया राशी या वृषभ राशी पर जब २ आयेंगे या राहू जब २ कभी धनराशी पर आयेंगे तबर माता भूमि मकानादि सुख शाँती के सम्बन्धों में कमी और अशान्ती का योग पैदा करते हैं और जन्म के समय यदि इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से कोई भी ग्रह उपरोक्त राशियों के अन्तर्गत जो २ कोई भी ग्रह,जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो वह ग्रह उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही प्रायः सारे जीवन भर अधिकाँश रूप में फल देता रहेगा। और जन्म कुण्डली में अथवा पंचाँग गोचर प्रणालीमें जो२कोई भी ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या जो कोई ग्रह २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल नहीं दे सकेगा और धन राशी का शनी जब २ कभी आवेगा या धन राशी पर शनी जन्म कुण्डली में बैठा होगा तो माता भूमि मकानादि के सम्बन्धों में एक अजीब गरीब उतार चढाव के योगों की प्राप्ती होती रहेगी।

कु० नं० ८१

पंचाग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में बुध मिथुन राशी पर या कन्या राशी पर या धन राशी पर या कर्क राशी पर या वृषभ राशी पर या तुला राशी पर जब २ कभी आयेंगे या वृहस्पति जब २ कभी मिथुन राशी या तुला राशी पर या धन राशी पर जब२ कभी आयेंगे या शुक्र जब २ कभी मिथुन राशी पर या धन राशी पर आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभ मिथुन राशी पर या धन राशी पर जब जब आयेंगे या राहू जब २ मिथुन राशी पर आयेंगे अथवा कुछ अंशों तक बुध भी जब २ मकर राशी पर व वृश्चिक राशी पर आयेंगे तब २ मान प्रतिष्ठा, राज समाज, कारबार, पिता आदि के विषयों में उन्नति एवं लाभ सुख का योग प्राप्त करते हैं और इसके विपरीत यदि बुध जब २ कभी सिंहराशी पर या कुम्भ राशी पर या मीनराशी पर या मेष राशी पर जब २ आयेंगे अथवा सूर्य जब कभी मिथुन राशी पर या धनराशी पर जब २ आवेंगे अथवा मङ्गल जब २ कभी मिथुन राशी पर या मीन राशी पर या धन राशी पर जब २ आयेंगे या शनी जब २ कभी मे। राशी पर या मिथुन राशी पर या कन्या राशी पर जब आयेंगे अथवा केतू जब कभी मिथुन राशी पर आयेंगे तब २ पिता, राज समाज प्रतिष्ठा कारबार आदि के विषयो में कुछ कमजोरी या कष्ट एवं अशाँती का योग उत्पन्न करते हैं और जन्म के समय यदि इसी प्रकार की राशियों में से ऊपर लिखे अनुसार जो कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो वह प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकाँश रूप में ऊपर लिखे अनुसार ही फल प्रदान करता रहता है। किन्तु जो कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल नही दे सकेगा।

 कन्या लग्न वालों को, रेस आदि सभी व्यापार कर्म के लिये लाभकारी रंग, मणियाँ-एवं ग्रहों के गुण दोषादि का फलादेश

कुं० नं० ८२

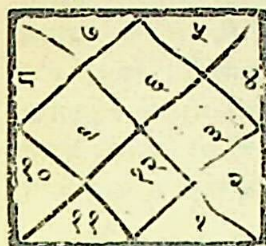


(शु०) कन्या लग्न वाले व्यक्तियों को भाग्य, धर्म, यश, धनकोष, कुटुम्ब, स्वार्थ, परमार्थ, चातुर्य, इत्यादि २ विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शुक्र हैं। इनका रंग गौर है। इनकी मणि हीरा है, इनका स्वभाव, धर्म स्वार्थ व कला से युक्त है। यह उन्नति प्रदान करने में दैवी और धर्म बल की शक्ति से कार्य करते हैं इनका जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं-२-३-४-७-८-६ १०-१२ और नेष्ठ राशियाँ ५-६-११-१ यह हैं इनकी विशेषता यह है कि, बुरे बुरे समय में भी भाग्य की बिछी हुई शक्तियों से धन की सहा-यता कुछ न कुछ करते रहते हैं।

(बु०) कन्या लग्न वाले व्यक्तियों को राज्य, समाज, पिता, देह स्वरूप, आत्मबल, कर्म, मान, प्रतिष्ठा, व्यौपार, वैभव इत्यदि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह बुध हैं इनका रंग हरा है इनकी मणि पन्ना है इनका स्वभाव कोमल और स्वाभिमानी है उन्नति प्रदान करने में महान विवेक की कर्म शक्ति से कार्य करते है इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं ३-४—६-७—६—१०-८ और नेष्ठ राशियाँ यह ५—११—१२—१ हैं।

(चं०) कन्या लग्न वाले व्यक्तियों को धन लाभ एवं अन्य वस्तुओं का लाभ करने के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह चन्द्रमा हैं इनका रंग उज्ज्वल गौर है इनकी मणि मोती है इनका स्वभाव शीतल और स्वार्थयुक्त है यह उन्नति प्रदान करने में मनोबल की प्रधान शक्ति से कार्य करते हैं इनका जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं ४-६-७-६-१०-१२—२—३ और नेष्ठ राशियाँ यह हैं ५—८ ११—१ और इनकी विशेषता यह है कि यह बुरे से बुरे समय में भी मन के विचारों की शक्ति के द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति किसी न किसी प्रकार कर ही देते ह।

कुं० नं० ८३

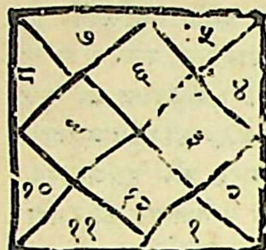


(सू०) कन्या लग्न वाले व्यक्तियों को खर्च तथा बाहरी अन्य स्थानों की सम्पर्क शक्ति इन दोनों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह सूर्य हैं। इनका रंग लालपीत है,इनकी मणिमाणिक है, इनका स्वभाव बहुत गरम और हानिकारक है, यह उन्नति प्रदान करने में तेजबल की राशि से दूसरे स्थान के सम्बन्धित संपर्क से कार्यकरते इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां ५-२-११-१-४ हैं और नेष्ट राशियां ७-३-२-१० १२ हैं इनकी विशेषता यह है कि बुरे से बुरे समय में भी अपने प्रभाव की शक्ति से खर्च संचालन की पूर्ति कुछ न कुछ कर ही देते हैं।

(मं०) कन्या लग्न वाले व्यक्तियों को बाहुबल पुरुषार्थ, भाई-बहन आयु,मृत्यु, पुरातत्व, उदर इत्यादि सभी प्रकार की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह मङ्गल हैं, इनका रङ्ग लाल है, इनकी मणी मूंगा है, इनका स्वभाव गरम कष्टप्रद है यह उन्नति प्रदान करने में बड़ी भारी मेहनत से कार्य करते हैं इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियां यह हैं ८, ११, १, और नेष्ट राशियां यह हैं ७,४, १२, ६ और सामान्य राशियाँ यह हैं ६,१०, ३,२, ५ इनकी विशेषता यह है कि यह बुरे से बुरे समय में भी अपनी मेहनत की शक्ति से जीवन का निर्वाह किसी न किसी प्रकार करा ही देते हैं।

(वृ०) कन्या लग्न वाले व्यक्तियों को माता, भूमि, मकान, जायदाद, सुख, स्त्री गृहस्थ, दैनिक रोजगार, भोग इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह वृहस्पति हैं, इनका रङ्ग पीला है इनकी मणी पुखराज है इनका स्वभाव बड़प्पन युक्त शाँत प्रिय है यह उन्नति प्रदान करने में हृदय कर्म की शक्ती से शाँतयुक्त होकर कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियाँ यह हैं ४,६,६,८, १२ ३ और नेष्ट राशियाँ यह हैं ११, १, ५ १०, ७ हैं।

कुं० नं० ८४



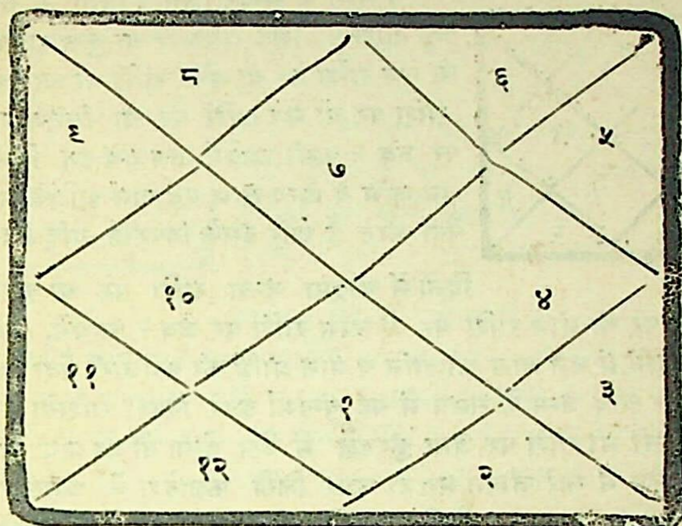
(श०) कन्या लग्न वालों को विद्या संतान वाणी, शत्रु, रोग, झगड़े, झंझट, ननसाल, दिमागी थकान इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शनी हैं। इनका रंग काला नीला है, इनकी मणी नीलम है, इनका स्वभाव कठोर पेचीदा है, यह उन्नति प्रदान करने में बुद्धी की कठिन युक्तियों से कार्य करते हैं। इनका जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं १०–४·७–८–६–२–६ और नेष्ट राशियाँ यह हैं १-५ और सामान्य राशियां यह ६–११–१२ हैं।

(रा०) कन्या लग्न वाले व्यक्तियों को दिमाग की गुप्त चालें व चिन्ता, झूठ कष्ट इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह राहू हैं इनका रंग काला है इनकी-मणी गोमेध है, इनका स्वभाव कटु हैं यह उन्नति प्रदान करने में दिमाग की गुप्त शक्ति से कार्य करते हैं। इनका जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं ३,४,८,११ और नेष्ठ राशियाँ यह हैं ७, ६, १२, १ और सामान्य राशियाँ यह हैं ६–१०–२–५।

(के०)कन्या लग्न वाले व्यक्तियों को बाहुवल की गुप्त शक्ती गुप्त धैर्य, चिन्ता, मुसीबत के बाद आनन्द कटुता अन्त में विजय, इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह केतू हैं इनका रंग काला है इनकी मणी लहसनियाँ है इनका स्वभाव कठोर है, यह उन्नति प्रदान में महान कठिनाइयां के कार्य से काम करते हैं इनकी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह ४–८–६–११ हैं और नेष्ठ राशियाँ यह हैं ७–१–३–६–१२ और सामान्य राशियाँ यह १०–२–५ हैं और इनकी विशेषता यह है कि यह बुरे से बुरे समय में भी आन्तरिक धैर्य की शक्ति से पुनः सफलता की प्राप्ती कुछ न कुछ करके ही मानते हैं।

तुला लग्न फलादेश प्रारम्भ

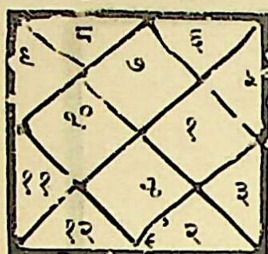






इस तुला लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सुख और धन लाभ के सम्बन्ध में मुख्य ग्रह प्रायः सू० सू० म० चं० ही हैं और अधिकांश इन्हीं ग्रहों के रंग व मणियां धनोन्नति संबंधी सभी व्यापारादि कार्यों में लाभप्रद सिद्ध होंगे, किन्तु राशि और स्थानान्तर के भेद से प्रायः सभी ग्रह अच्छे और बुरे फल के सूचक बन जाते हैं जैसा कि आपको कुण्डली नं० ८५ से लेकर कुण्डली नं० ९८ तक में विचारहेतु इन सभी ग्रहों का भाग्य के हर एक विषय में भिन्न २ फलादेश महान् सरल रूप से जानने को मिलेगा।

कुं० नं० ८५



पंचाँग के अन्दर जिन २ दिनों में चंद्रमा कर्क राशि पर सिंह राशि पर या तुला राशि पर या धन राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या मेष राशि पर या मिथुन राशि पर जब २ कभी आवेंगे, तब तब इन दिनों में धन लाभ व अन्य लाभ एवं मान प्राप्तिके साधन पैदा करते हैं और इसके विपरीत यदि जिन २ दिनों में चन्द्रमा कन्या राशि पर या वृश्चिक राशि पर या मीन राशि पर या वृषभ राशि पर जब २ आयेंगे, तब २ उन दिनों में धन लाभ की हानि व मान प्राप्ति की कमजोरी पैदा करते हैं और यदि जन्म के समय में यह चन्द्रमा ऊपर लिखी राशियों में से ही किसी भी राशि पर जन्म कुण्डल में बैठा होगा तो वह प्रायः अधिकाँश रूप में सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करता रहता है,किंतु अमावस के आस-पास न होना चाहिये।

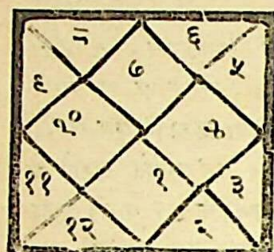
॥ धन लाभ का मासिक फलादेश ॥

पंचाँग के अन्दर जिन २ मासों में—सूर्य का मङ्गल सिंह राशि पर या वृश्चिक राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या मेषराशि पर या मिथुन राशि पर आवेंगे अथवा मङ्गल तुला राशि पर आवेंगेया सूर्य कर्क राशि पर आवेंगे अथवा शुक्र या बुध व चन्द्र जब २ कभी सिंह राशि पर आवेंगे तब २ उन मासों में धन का लाभ पैदा करते हैं और इसके विपरीत यदि कोई भी ग्रह जब २ कभी कन्या राशि पर या मीन राशि पर या वृषभ राशि पर आवेंगे तो उन मासों में धन की कमी या हानि का योग बनता है और जन्म के समय जो २ कोई भी ग्रह यदि ऊपर लिखी राशियों में से किसी भी राशि पर जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार फल देता रहेगा किन्तु जो कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगातो उसका फल शुभ कारक नहीं बनता है।

कुं० नं० ८६

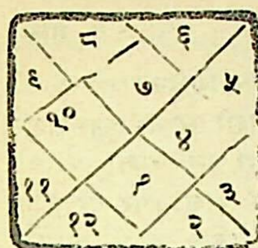
पंचाग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में वृहस्पति, कर्क राशी या सिंह राशी या वृश्चिक राशी या धन राशि या कुम्भ राशी या मीन राशी या मेष राशी पर अथवा कुछ मिथुन राशी और तुला राशी पर जब २ इन सभी राशीयों पर कहीं भी आयेंगे या शनी जब २ कभी तुला राशी या वृश्चिक राशी या मकर राशी या मिथुन राशी या कर्क राशी पर सिंह राशी या धन राशी पर जब २ कभी आयेंगे या राहू जब २ कभी मिथुन राशी या सिंह राशी या मीन राशी पर जब २ आवेंगे और या केतू जब २ कभी धन राशी या सिह राशी या मीन राशी पर जब २ कभी आयेंगे तब २ इन २ वर्षों में समय लाभप्रद रहेगा, किन्तु इन २ वर्षों में भी वह मास उत्तम रहेंगे जिनमें कि इस बराबर पहिले पेज वालेफारमूले के अनुसार मासिक ग्रह भी अनुकूल चल रहे हों, और वार्षिक लाभ योग के विपरीत यदि जिन २ वर्षों में शनी, कन्या राशी या मेष राशी या वृषभ राशी पर जब २ कभी आवेंगे या वृहस्पति जब २ कभी कन्या राशी मकर राशी या वृषभ राशी पर जब २ कभी आयेंगे, या राहू जब २ कभी,धन राशी या मेष राशी या वृश्चिक राशी या वृषभ राशी या तुला राशी या कर्क राशी पर जब २ आयेंगे या केतू जब २ कभी मिथुन राशी या कर्क राशी या वृश्चिक राशी या मेष राशी या वृषभ राशी या मकर राशी पर जब २ कभी आयेंगे तब २ वह वर्ष निषेध समझे जाते हैं किन्तु उन वर्षों में भी खास तौर से वह मास निषेध होते हैं जिनमें मासिक ग्रह भी खोटे हो जाते हैं यहीं सब उपरोक्त ग्रहों में से कोई भी जन्म के समय यदि जन्म कुण्डली में भी जो २ कोई भी ऊपर लिखी राशियों के अनुसार कहीं बैठा होगा तो वह प्रायः अधिकांश रूप में सारे जीवन भर ही उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल देता रहेगा।

कुं० नं० ८७



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्ष में व जिन २ मासों में वृहस्पति, कर्क राशी या वृश्चिक राशी या मीन राशी या धन राशी या सिंह राशी या मेष राशी पर जब २ कभी आयेंगे और शनी जब २ कभी मकर राशी या सिंह राशी या वृश्चिक राशी या धन राशी या तुला राशी या कर्क राशी या मिथुन राशी पर जब २ आयेंगे और राहू जब २ किसी मिथुन राशी या सिंह राशी पर या मीन राशी पर जब २ आवेंगे और केतू जब २ कभी धन राशी या सिंह राशी या मीन राशी पर जब २ आवेंगे और मङ्गल जब-जब कभी तुला राशी या सिंह राशी या मकर राशी या मेष राशी पर जब आवेंगे और सूर्य जब २ कभी कर्क राशी या सिंह राशी या वृश्चिक राशी या धन राशी या मेष राशी या मिथुन राशी पर जब आवेंगे और बुध जब कभी मिथुन राशी या सिंह राशी या तुला राशी या धन राशी या मकर राशी या कुम्भ राशी या मेष राशी या वृश्चिक राशी पर जब २ आयेंगे, और शुक्र जब २ कभी तुला राशी या धन राशी या मकर राशी या कुम्भ राशी या मेष राशी या मिथुन राशी या कर्क राशी या सिंह राशी पर जब २ आयेंगे और चन्द्रमा जब २ कभी कर्क राशी या सिंह राशी या तुला राशी या धन राशी या मकर राशी या कुम्भ राशी या मेष राशी या मिथुन राशी पर जब २ आवेंगे अर्थात् यह सभी नव ग्रह ऊपर लिखी हुई राशियों में से ही, किसी न किसी राशी पर हों तो, जब २ यह नवग्रह एक ही समय में उपरोक्त राशियों में आवेंगे, और जितने २ समय तक यह रहा करेंगे तब २ वह समय राज-योग का माना जायगा और यदि जन्म के समय में यह नवग्रहों में से अधिकतर इसी उपरोक्त राशियों में से ही जितने २ ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठ जायेंगे तो वह प्रायः अधिकांश रूप में सारे जीवन भर राजयोग कारक फल देते रहेंगे।

कुं० नं० ८८

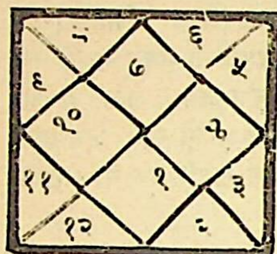


पंचाग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में खास तौर से मुख्य ग्रह शनी, कुम्भ राशी या मिथुन राशी या कर्क राशी या सिंह राशी या तुला राशी या धन राशी या मकर राशीं पर जब २ कभी आयेंगे या बुध जब २ कभी कुम्भ राशी या सिंह राशी पर आवेंगे सूर्य जब-जब कभी कुम्भ राशी या सिंह राशी पर या मङ्गल

जब २ कभी वृश्चिक राशी या सिंह राशी पर आवेंगे या शुक्र जब २ कभी कुम्भ राशी या सिंह राशी पर आयेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी कुम्भ राशी या सिंह राशी पर आयेंगे तबरसंतान पक्ष को विद्या वाणी के सम्बन्ध को शुभ फलदायक रहते हैं। किन्तु इसमें उपरोक्त लिखे अनुसार शनी किसी न किसी राशी पर अवश्य होने चाहिये, और इसके विपरीत यदि शनी, जब २ कभी मीन राशी या मेष राशी या वृषभ राशी या कन्या राशी पर जबर आवेंगे या राहू या केतू जब २ कभी कुम्भ राशी पर दोनों में से कोई आयेंगे तब तब २ विद्या व संतान पक्ष को व वाणी की सुन्दरताको नुकसान देय फल देतेहैं यदि जन्म के समय इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह, इन्हीं उपरोक्त राशियों के अन्तर्गत यदि जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर अधिकांश रूप में ऊपर लिखे हुए फलादेश के अनुसार ही फल देते रहेंगे किन्तु जो कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या जो कोई भी ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण जन्म कुण्डली के अन्दर अच्छे घर में बैठकर भी शुभ फल प्रदान करने की शक्ति नहीं कर पाता है, और पंचाँग गोचर से भी जो ग्रह सूर्य से अस्त होगा वह उत्तम फल प्रदान नहीं कर पाता है।

 तुला लग्न वालों को, आयु व उदर और पुरातत्व सम्बन्धित योगों का फलादेश

कु० नं० ८६



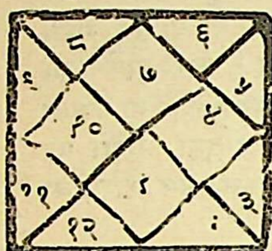
पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में शुक्र वृषभ राशी पर या मिथुन राशी पर या कर्क राशी पर या सिंह राशी पर या तुला राशी पर वृश्चिक राशी पर या धन राशी पर या मकर राशी पर या कुम्भ राशी पर या मीन राशी पर या मेष राशी जब २ कभी आयेंगे या शनी जब २ कभी वृषभ राशी पर या सिंह राशी पर या वृश्चिक राशि पर या मीन राशी पर जब २ आयेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी वृषभ राशो पर वृश्चिक राशी पर आयेंगे या मङ्गल जब २ कभी तुला राशी पर या वृश्चिक राशी पर या कुम्भ राशी पर या वृषभ राशी पर आयेंगे या सूर्य जब २ कभी वृषभ राशी पर या वृस्चिक राशो पर आयेंगे या बुध जब २ कभी वृशभ राशी पर या वृस्चिक राशी पर आयेंगे या वृहस्पति जब २ कभीं वृषभ राशी पर आयेंगे तब-तब आयु एवं उदर और पुरातत्व सम्बन्धों में कुछ सहायक शक्ति व उन्नति प्राप्त करते हैं और इसके विपरीत यदि शुक्र जब २ कभी कन्या राशि पर आयेंगे राहू वृषभ राशी पर आयेंगे या केतू जब २ कमी वृषभ राशी पर आयेंगे तब २ आयु, उदर पुरातत्व संबंधों में कुछ परेशानी का योग पैदा करते हैं किन्तु इस लग्न में मङ्गल वृहस्पति, बुध यह तीनों ग्रह जब भी वृषभ राशी पर आकर पुरातत्व उदर और आयु के सम्बन्ध में शुभ करते हैं तो कुछ अड़चने भी पैदा करते हैं और यही सब उपरोक्त ग्रह जन्म के समय यदि इन्हों उपरोक्त राशियों में से जिस २ किसी भी राशी पर जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह अधिकांश रूप में प्रायः सारे जीवन भर ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल देते रहेंगे यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा' तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी पूरी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल नहीं दे सकेगा ।

कु० न० ६०

पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में मङ्गल मेष राशी पर या मिथुन राशी पर या सिंह राशी पर या तुला राशी पर या धन राशी पर या मकर राशी पर जब २ कभी आवेंगे या सूर्य जब२ कभी मेष राशी पर आवेंगे या चंद्रमा जब २ कभी मेष राशी या तुला राशी पर आवेंगे या वृहस्पति जब २ कभी मेष राशी या सिंह राशी या तुला राशी या धन राशी पर जब २ आयेंगे तब २ स्त्री व दैनिक रोजगार के स्थान में शक्ति व उन्नति पैदा करते हैं और मङ्गल जब कभी कन्या राशी या वृश्चिक राशी या कुम्भ राशी पर जब २ आयेंगे या शुक्र जब २ कभी मेष राशी या तुला राशी पर आवेंगे या शनी जब २ कभी कुम्भ राशी या तुला राशी या कर्क राशी पर आवेंगे तब २ स्त्री व दैनिक रोजगार के स्थान में कुछ सामान्य फल करते हैं और इसके विपरीत यदि मङ्गल जब २ कभी वृषभ राशी या मीन राशि पर आवेंगे या राहू या केतू जब २ कभी मेष राशी या तुला राशी पर आयेंगे या शनी जब २ कभी मेष राशी पर आयेंगे तब २ स्त्री व दैनिक रोजगार के स्थान में कुछ कमी व कष्ट का योग पैदा करते हैं, और जन्म के समय यदि इन्ही उपरोक्त ग्रहों में से जो-जो कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहेंगे और जो कोई ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या२६अंश से अधिक होगाया१ अंश से कम होगा, तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल नहीं दे सकेगा चाहे वह ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा हो और चाहे वह ग्रह पंचाँग गोचर प्रणाली वाला हो।

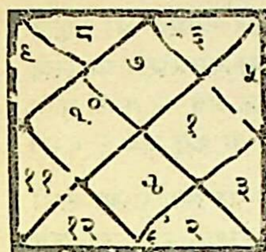
 तुला लग्न वालों को, भाग्य, धर्म, भक्ति, दैवी सफलता आदि का फलादेश

कु० नं० ६१



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में बुध मिथुन राशी या कर्क राशी या सिंह राशी या तुला राशी या वृश्चिक राशी या मेष राशी या मकर राशी या कुम्भ राशी या धन राशी पर जब २ कभी आयेंगे या सूर्य जब २ कभी मिथुन राशी या धन राशी पर जब आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी मिथुन राशी या धन राशी पर आयेंगे या शनी जब २ कभी मिथुन राशी पर या धन राशी पर जब २ आयेंगे या मङ्गल जब २ कभी मिथन राशी पर या मीन राशी पर या वृश्चिक राशी पर जब २ आयेंगे या वृहस्पति जब २ कभी तुला राशी पर या कुम्भ राशी पर या मिथुन राशी पर जब २ आयेंगे या राहू जब २ कभी मिथुन राशी पर आयेंगे, तब २ भाग्य की वृद्धी व धर्म और ईश्वर में श्रद्धा उत्पन्न होती है और यदि इसके विपरीत बुध जब २ कभी मीन राशी में या वृषभ राशी में आवेंगे या केतु जब २ कभी मिथुन राशी में आवेंगे तब २ भाग्य और धर्म में कमजोरी पैदा करते हैं और यदि बुध जब २ कभी कन्या राशी में आवेंगे, तो भाग्य और धर्म को सामान्य शक्ति देते है, और इसी प्रकार जन्म के समय यदि इन उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह इन्ही उपरोक्त २ राशियों के अन्तर्गत, जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में सारे जीवन भर ही उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहेंगे और जो कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

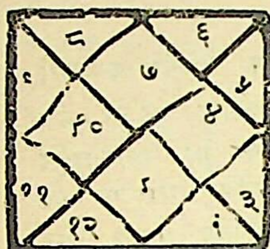
कु० नं० ६२



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में शुक्र जब२ कभी, तुला राशि पर या धन राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या मीन राशि पर या मेष राशि पर या मिथुन राशि पर या कर्क राशि पर या सिंह राशि पर जब २ कभी आवेंगे या बुध जब २ कभी तुला राशि पर या मेष राशि पर जब २ आवेंगे या शनी,तुला राशि पर या सिंह राशि पर या मकर राशि पर जब २ कभी आयेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी तुला राशि पर या मेष राशि पर जब २ आयेंगे या बृहस्पति जब जब कभी कुम्भराशि पर या मिथुन राशि पर जब २ आयेंगे तब-तब देह की सुन्दरता ख्याति व आत्मबल के लिये उन्नति प्रदान करते हैं और इसके विपरीत यदि शुक्र जब जब कभी वृषभ राशि व कन्या राशी पर जब २ आवेंगे या सूर्य जब २ कभी तुला राशि पर या मेष राशि पर जब २ आयेंगे या मङ्गल जब २ कभी तुला राशी पर या कर्क राशि पर या मीन राशि पर या मेत्र राशि पर जब जब आयेंगे या राहू या केतू कोई भी जब २ कभी तुला राशि पर व मेष राशि पर आवेंगे तब देह की सुन्दरता व आत्मवल की शक्ति में कमी व कमजोरी पैदा करते हैं। और यदि जन्म के समय में इन उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो वह ग्रह प्राय:अधिकांश रूप में सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे अनुसार फलादेश के मुताबिक ही फल प्रदान करता रहेगा यदि कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

 तुला लग्न वालों को, रोग शत्रु व झगड़े झंझट एवं ननसाल का फलादेश

कु० न० ६३



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में वृहस्पति,धन राशी या मीन राशी या कर्कराशी या सिंह राशी पर जब २ कभी आवेंगे या सूर्य जब २ कभी मीन राशी पर आवेंगे या मङ्गल जब २ कभी मीन राशी या धन राशी या सिंह राशी पर आयेंगे या शुक्र जब २ कभी मीन राशी पर आवेंगे या राहू या केतू जब २ कभी मीन राशी व कन्या राशी पर आवेंगे या शनी जब २ कभी मीन राशी या मकर राशी या मिथुन राशी पर जब-जब आयेंगे तब तब रोग व शत्रु पक्ष में येवं झगड़े झंझटों में विजय प्रदान करते हैं और ननसाल पक्ष में कुछ प्रभाव पैदा करते हैं और इसके विपरीत यदि वृहस्पति जब२ कभी वृषभ राशी या कन्या राशी या मकर राशी पर जब २ आयेंगे तब २ रोग या शत्रु पक्ष या झगड़े-झंझटों की ओर से व ननसाल पक्ष की ओर से अशांतप्रद वातावरण पैदा करते हैं और यदि चन्द्रमा जब २ कभी मीन राशी पर आवेंगे या वृहस्पति जब२ कभी मिथुन राशी या तुला राशी या कुम्भ राशी या मेष राशी पर जब २ आवेंगे तब २ रोग शत्रु झगड़े झंझट, व ननसाल पक्ष की ओर सामान्य रूप से फल प्रदान करते हैं और जन्म के समय यदि इन्ही बपरोक्त ग्रहों में से जो कोई भी ग्रह, ऊपर लिखी राशियों में से ही किसी राशी पर यदि जन्म कुण्डली में बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेशके अनुसार ही सारे जीवन भर फल प्रदान करते रहते हैं और जो कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा पूरा फल प्रदान नहीं कर सकते हैं।

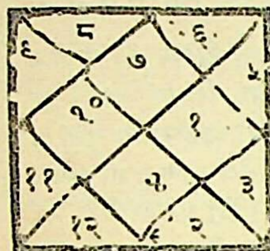
तुला लग्न वालों को—माता, भूमि मकान, सुख शाँती आदि का फलादेश

कुं० नं० ६४

पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में शनी, मकर राशि या कर्क राशी या वृश्चिक राशी या सिंह राशी या मिथुन राशी पर आयेंगे या मङ्गल जब २कभी मकरराशि य तुला राशि या मिथुनराशिपर आयेंगे याचन्द्रमा जब २ कभी मकर राशि या कर्कराशि पर आयेंगे या शुक्र जब २ कभी मकर राशि या कर्क राशि पर आयेंगे या सूर्य जब २ मकर राशि या कर्क राशि पर आयेंगे तब माता, भूमि मकानादि एवं सुख शान्ती,के सम्बन्ध में सफलता एवं सुख प्रदान करते हैं और इसके विपरीत यदि शनी, मीन राशि या वृषभ राशि या मेष राशि या कन्या राशि पर जब २ कभी आवेंगे या वृहस्पति जब २ मकर राशि या कर्क राशि या वृषभ राशि या कन्या राशि पर जब २ आयेंगे या राहू या केतू कोई भी तब तब कभी मकरराशि या कर्कराशि पर जब २ आयेंगे तब२ सुख शाँती व मातृ स्थान व मकान भूमि आदि के सम्बन्धों में क्लेश व कमी का योग पैदा करते हैं और जन्म के समय यह उपरोक्त सभी ग्रह, यदि इन्ही उपरोक्त २ राशियों के अन्तर्गत ही यदि जन्म कुण्डलीमें जो२कोई बैठे होंगे तो वह ग्रह अधिकाँश रूपमें प्राय सारे जीवन भर ही उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल देते रहते हैं और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो यह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा पूरा फल प्रदान नहीं कर सकता है।

तुला लग्न वालों को–राज-काज, बड़ा व्यापार, मान प्रतिष्ठा आदि का फलादेश

कुं० नं० ६५



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में वृहस्पति, जब २ कर्क राशी या वृश्चिक राशि या मीन राशि पर आयेंगे या शनी जब २ कभी कर्क राशि पर आयेंगे या सूर्य जब २ कभी कर्क राशि पर आयेंगे या बुध जब २ कभी कर्क राशि पर आयेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी कर्क राशि पर आयेंगे या चन्द्रमा तुला राशि या मकर राशि या सिंह राशी पर आयेंगे या शुक्रजब २ कभी कर्क राशि पर आयेंगे, तब मान प्रतिष्ठा, राज काज, ऊंचा व्यापार व पिता सम्बन्ध में उन्नति व सुख प्राप्ति के साधन प्रदान करते हैं और इसके विपरीत यदि चन्द्रमा जब जब कभी, कन्या राशि या वृश्चिक राशि यामीन राशि पर आयेंगे या मङ्गल जब २ कभी कर्क राशि या धनराशि पर आयेंगे या राहू या केतू कोई भी जब २ कभी कर्क राशी आयेंगे तब पिता, मान, प्रतिष्ठा ऊंचा, कारबार, समाज, राज के सम्बन्धों में कुछ हानि युक्त कमी का का योग पैदा करते हैं। और चन्द्रमा जब कभी धन राशि या कुम्भ राशी या वृषभ राशि या मिथुन राशि या मेष राशि पर आयेंगे या मंगल मेष राशि पर आयेंगे तो इस प्रकरण में सामान्य फल प्रदान करते हैं और जन्म के समय यदि इन्हा सब उपरोक्त ग्रहों में से कोई भी ग्रह इन्हां उपरोक्त २ राशियों के अन्तर्गत जन्म कुण्डली में जो २ कोई भी बैठा होगा, तो वह ग्रह अधिकांश रूप में प्रायः सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करता रहेगा किन्तु यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २६ अंश से अधिक होगा या ९ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण, अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ शुभ फल नहीं दे सकेगा।

कुं० नं०

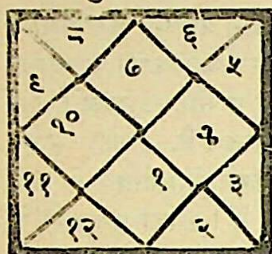
८	६	
९	७	५
१०		४
११	१	३
१२		२

तुला लग्न वाले व्यक्तियों को पिता, राज समाज ऊंचा व्यापार मान प्रतिष्ठा, कर्म आदि विषयों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह चन्द्रमा हैं, इनका रंग गौर उज्ज्वल है, इन का स्वभाव शाँत प्रिय शीतल है, इनकी मणी मोती है, उन्नति प्रदान करने में, मनोबल के कर्म की शक्ति से कार्य करते हैं। इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं-४-५-७ १०-१-६-११ और नेष्ठ राशयां निम्न प्रकार की हैं और सामान्य राशियां यह ६-२ हैं।

(सू०) तुला लग्न वाले व्यक्तियों को आमदनी, आवश्यक पदार्थों की प्राप्ती, तेज इत्यादि विषयों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फल दाता सूर्य हैं। इनका रंग लाल है इनका स्वभाव बहुत गरम है, इनकी मणी माणिक है, यह उन्नति प्रदान करने में प्रभाव की शक्ति से कार्य करते हैं, इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं ५, ८, ६ १०-११-१-३-४ और नेष्ठ राशियां यह हैं-६-२-२ और सामान्य राशि १२ है।

(शु०) तुला लग्न वालों को देह, आत्मबल, सुन्दरता, आयु, मृत्यु, पुरातत्व, उदर जीवन की दिनचर्या इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शुक्र हैं, इनका रंग सफेद है, इनका स्वभाव महान् चतुर है, इनकी मणी हीरा है, यह उन्नति प्रदान करने में आत्मबल की शक्ति के कार्य करते हैं। इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं ७-६-१०-११- -३-४-५ और नेष्ठ राशि यह ६—है और सामान्य राशि यह—८-१२-२ है इनकी विशेषता यह है कि बुरे से बुरे समय में भी आत्मबल की शक्ति के द्वारा जीवन निर्वाह की कार्य पूर्ति तो कर ही देते हैं।

कुं० नं० ६७

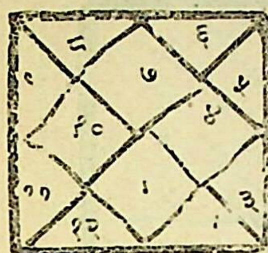


(बु०) तुला लग्न वालों को भाग्य, धर्म, भक्ति, खर्च, बाहरी स्थानों का सम्बन्ध, इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी हैं फलदाता ग्रह बुद्ध हैं। इनका रङ्ग हरा है, इनका स्वभाव बड़ा नरम और महान विवेकीहै। इनकी मणि पन्ना है, यह धर्म और भाग्य तथा खर्च की शक्ति से कार्य करते हैं इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं३-४-५-८-६-१०-११-१- और नेष्ट राशियाँ यह हैं-१२-२ और सामान्य राशि ६ है।

(मं) तुला लग्न वाले व्यक्तियोंको धन का कोष कुटुम्ब स्त्री दैनिक रोजगार इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह मङ्गल है इनका रङ्ग लाल है इनका स्वभाव गरम है इनकी मणी मूंगा है यह उन्नति प्रदान करने में दैनिक कर्मके परिश्रम योग से कार्य करतेहैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह ७-८-६-१०-१-३-५ हैं और नेष्ठ राशियाँ यह ४-६-२-१२है और सामान्य राशियाँ यह ११हैं

(वृ०) तुला लग्न वाले व्यक्तियों को भाई, बहन, पराक्रम, रोग झगड़े-झंझट, शत्रु, ननसाल, बाहुबल के परिश्रमी विशेष कार्य इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह वृहस्पति हैं इनका स्वभाव बड़प्पन युक्त बहादुराना तेज है इनका रँग पीला है इनकी मणी पुखराज है यह उन्नति प्रदान करने में बाहुबल और हृदयबल की परिश्रम शक्ति से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह ६-१२-५-१-४-८ हैं और नेष्ठ राशियाँ यह १०-२-६ है और सामान्य राशी यह ७-११-३ हैं इनकी विशेषता यह है कि बुरे से बुरे समय में भी महनत की शक्ति के द्वारा प्रभाव की रक्षा किसी न किसी प्रकार कर ही देते हैं।

कु० न० ६८



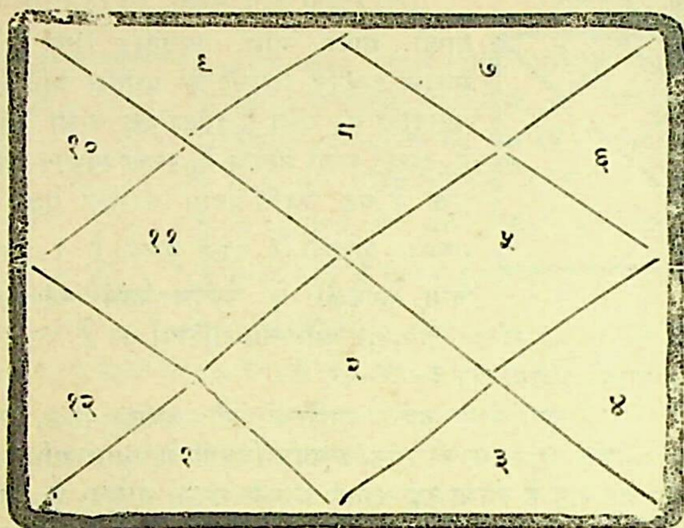
(श०) तुला लग्न वालों को विद्या सन्तान वाणी, माता, भूमि, जायदाद सुख शांती मकान, इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शनी हैं इनका रङ्ग काला नीला है, इनकी मणी नीलम है, इनका स्वभाव शाँती युक्त है यह उन्नति प्रदान करने में बुद्धी की गम्भीर युक्तियों से कार्य करते हैं। इनकी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं ७,८,९,१०,११,३,४,५ और नेष्ट राशियाँ यह हैं १२–१–६ और सामान्य राशियां यह ६–११–१२ हैं।

(रा०) तुला लग्न वाले व्यक्तियों को कपट, झूंठ, कष्ट, चिन्ता, अनाधिकार लाभ की सूझ, इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह राहू है इनका रङ्ग काला इनकी मणी गोमेध है, इनका स्वभाव गहरे स्वार्थ सिद्धी करने का है यह उन्नति प्रदान करने में अति कठिन कार्य की पूर्ति करने का मार्ग, आन्तरिक बुद्धि के योग में, पकड़ कर अग्रसर होते हैं इनकी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह ३–५–१२ हैं और नेष्ट राशियाँ यह हैं २–८–४–१ और सामान्य राशियां यह ७–१०–११–६ हैं।

(के०) तुला लग्न वाले व्यक्तियां को गुप्त धैर्य, गुप्त वीरत्व, चिंता छिपाव इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह केतू हैं इनका स्वभाव कठिन कार्यों की पूर्ति करने के हेतु गरम हैं इनका रंग काला है इनकी मणि लहसनियां है, यह उन्नति प्रदान करने में महान कठिनाइयों के कार्य से काम करते हैं इनकी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह ६–१२–५ हैं और नेष्ठ राशियाँ यह हैं८—१–२–४ और सामान्य राशियां यह७–१०–११–३–६ हैं इनकी विशेषता यह है बुरे से बुरे समय में भी बाहुबल और हृदयबल का आन्तरिक शक्तीके द्वारा मुसीबतों में से अच्छाइयां निकाल लेते हैं।

वृश्चिक लग्न फलादेश प्रारम्भ

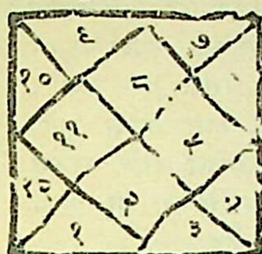






इस तुला लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सुख और धन लाभ के सम्बन्ध में मुख्य ग्रह प्रायः चं० सू० बु० गु० ही हैं और अधिकांश इन्हीं ग्रहों के रंग व मणियां धनोन्नति संबंधी सभी व्यापारादि कार्यों में लाभप्रद सिद्ध होंगे, किन्तु राशि और स्थानान्तर के भेद से प्रायः सभी ग्रह अच्छे और बुरे फल के सूचक बन जाते हैं जैसा कि आपको कुण्डली नं० ९९ से लेकर कुण्डली नं० ११२ तक में विचारहेतु इन सभी ग्रहों का भाग्य के हर एक विषय में भिन्न २ फलादेश महान् सरल रूप से जानने को मिलेगा ।

कुं० नं० ६६

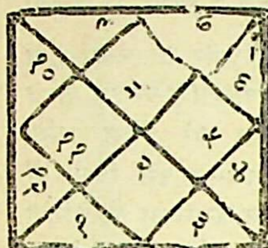


पंचाँग के अन्दर जिन २ दिनों में चंद्रमा कर्क राशि पर या सिंह राशि पर या कन्याराशि पर या धनराशि पर या मकरराशि पर या कुम्भ राशि पर या मीन राशि पर या वृषभ राशि पर जब २ कभी आवेंगे, तब-तब इन दिनों में धन लाभ की प्राप्ती व मन प्रसन्नता के कारण पैदा करते हैं, और इसके विपरीत यदि चंद्रमा जब २ कभी तुलाराशि पर या मेष राशि पर या वृश्चिक राशि पर या मिथुन राशि पर जब २ आवेंगे, तब-तब मन को अशाँती व हानि के कारण पैदा करते हैं। और यदि जन्म के समय में यह चन्द्रमा ऊपर लिखी राशियों में से ही किसी भी राशि पर यदि जन्म कुण्डली में बैठा होगा तो वह प्रायः अधिकांश रूप में सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश अनुसार ही फल प्रदान करता रहता है।

॥ धन लाभ का मासिक फलादेश ॥

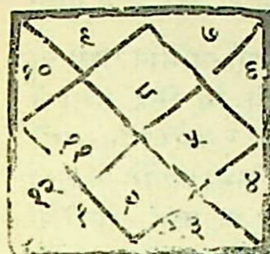
पंचांग के अन्दर जिन २ मासों में सूर्य जब २ कभी सिंहराशि पर या कन्याराशि पर या वृश्चिकराशि पर या धन राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भराशि पर या मीनराशि पर या मेषराशि पर या वृषभराशि पर या कर्कराशि पर जब २ कभी आयेंगे या बुध जब २ या सिंह राशि पर या कन्याराशि पर या वृश्चिक राशि पर या धनराशि या मकर राशि पर या कुम्भ राशि या वृषभ राशि पर या कर्क राशि पर या सिंहराशि जब २ कभी आवेंगे और मंगल जब २ कभी कन्या राशि पर या मकर राशि पर या सिंह राशि पर या कुम्भ राशि पर वृश्चिक राशि पर या वृषभ राशि पर या मीन राशि पर जब २ आवेंगे तब २ इन महीनों में धन लाभ का योग उत्तम रहता है और इसके विपरीत यदि सूर्य जब २ कभी तुला राशि पर या मिथुन राशि पर आवेंगे या बुध जब कभी तुला राशि पर या मेषराशि पर या मिथुन राशि पर या मीन राशि पर जब २ आवेंगे या मंगल जब २ कभी तुला राशि या कर्कराशि पर जब २ आयेंगे तब२ धन लाभ के सम्बन्ध में परेशानी का योग पैदा करते हैं

कुं० नं० १००



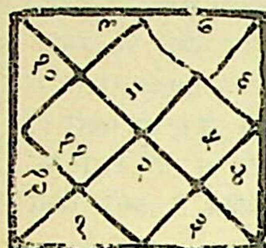
पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में वृहस्पति सिंह राशि पर या कन्या राशि पर या धनराशि पर या वृषभ राशि पर या कर्क राशि पर या मीन राशि पर या वृश्चिक राशि पर जब २ आयेंगे और शनी जब २ कभी कन्या राशि पर या वृश्चिक राशि पर या धन राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या वृषभ राशि पर या कर्क राशि पर जब २ कभी आयेंगे या राहू जब२कभी कन्या राशि पर या मकर राशि पर या मिथुन राशि पर या मेष राशि पर जब २ आयेंगे या केतू जब २ कभी कन्या राशि पर या धन राशि पर या मकरराशि पर या मेष राशि पर जब २ आयेंगे तब २ इन वर्षों में धन लाभ का योग उत्तम रहता है। किन्तु इन लाभकारी वर्षों में यदि मासिक ग्रह भी लाभकारी जब २ आते हैं तब-तब अधिक लाभ होता है और इसके बिपरीत यदि वृहस्पति जब २ कभी तुला राशि पर या मकर राशि पर या मिथुन राशि पर जब २ कभी आवेंगे और शनी जब २ कभी तुला राशी पर या मेष राशि या मिथुन राशि पर जब २ आयेंगे और या राहू जब२ कभी धन राशि पर या सिंह राशि पर जब २ आयेंगे, या केतू जब कभी मिथुन राशि पर या सिंह राशि पर जब २ आयेंगे तब २ इन वर्षों में लाभ सम्बन्धी मामलों में परेशानी का योग पैदा करते हैं, किन्तु जब २ मासिक ग्रह भी हानिकारक आजाते हैं तब तब इन वर्षों में खास तौर से हानिकारक योग पैदा होते हैं और जन्म के समय यदि इन उपरोक्त ग्रहों में से जो जो कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर इन्हीं उपरोक्त राशियां के अनुसार कोई भी बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः अधिकाँश रूप में,सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल देता रहता है और जो कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होता है या २६ अंश से अधिक होता है या १ अंश से कम होता है तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी पूरी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता।

कुं० नं० १०१



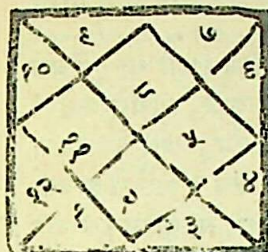
पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में वृहस्पति सिंह राशी या धन राशी या वृश्चिक राशी या कर्क राशी या मीन राशी पर जब २ आयेंगे और शनी, जब २ कभी मकर राशी या कुम्भ राशी या कन्या राशी या वृषभ राशी या वृश्चिक राशी या धन राशी या कर्क राशी पर जब २ आयेंगे और राहू जब २ कभी कन्या राशी या मकर राशी या तुला राशी या मेष राशी या मिथुन राशी या मीन राशी पर जब २ आयेंगे और केतू जब-जब कभी कन्या राशी या मकर राशी या धन राशी या मेष राशी या तुला राशी पर जब २ आयेंगे और मङ्गल जब २ कभी वृश्चिक राशी या मकर राशी या सिंह राशी या कन्या राशी या कुम्भ राशी या मीन राशी या वृषभ राशी पर जब २ आयेंगे और सूर्य जब २ कभी सिंह राशी या वृश्चिक राशी या कन्या राशी या कर्क राशी या कुम्भ राशी या मीन राशी या मेष राशी या धन राशी या वृषभ राशी या मकर राशी पर जब २ आयेंगे और बुध जब २ कभी कन्या राशी या वृश्चिक राशी या मकर राशी या कुम्भ राशी या धन राशी या कर्क राशी या वृषभ राशी या मिथुन राशी पर जब २ आयेंगे और शुक्र जब कभी तुला राशी या मकर राशी या वृषभ राशी या मीन राशी या कर्क राशी पर जब २ आयेंगे और चन्द्रमा जब २ कभी कर्क राशी या सिंह राशी या कन्या राशी या धन राशी या मकर राशी या कुम्भ राशी या मीन राशी या वृषभ राशी पर जब २ आयेंगे, अर्थात् यह सभी ग्रह ऊपर लिखी हुई राशियों के अन्तर्गत ही जिन २ वर्षों में या मासों में जितनी-जितनी बार जीवन में एक ही साथ आया करेंगे व २ ही राजयोग भाग्योदय कारक इज्जत आबरू की उन्नति के अवसर प्राप्त हुआ करते हैं।

कुं० नं० १०२



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में वृहस्पति, वृश्चिक राशी या मीन राशी या कर्क राशी या कन्या राशी या सिंह राशी में जब २ आयेंगे या सूर्य जब २ कभी मीन राशी या कन्या राशी मे जब २ कभी आयेंगे या शनी जब २ कभी मीन राशी या मकर राशी या कन्या राशी में जब २ आवेंगे या चन्द्रमा जब २ कभी मीन राशी या कन्या राशी में जब २ आयेंगे या मङ्गल जब २ कभी सिंह राशी या कन्या राशी या धन राशी या मीन राशी में जब २ आवेंगे या शुक्र जब २ कभी मीन राशी में आवेंगे तब २ विद्या व सन्तान पत्त और वाणी की शक्ति में उन्नति प्रदान करते हैं किन्तु इसके विपरीत यदि वृहस्पति जब २ कभी मेष राशी या मिथुन राशि या तुला राशी या मकर राशी में जब २ आयेंगे या बुध जब २ कभी मीन राशी या कन्या राशी में जब २ आयेंगे, तब-तब संतान पत्त को एवं विद्या या वाणी की शक्ती को कमजोर करके अशांती उत्पन्न करते हैं, और जन्म के समय यदि इन्हीं सब ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर यदि इन्ही उपरोक्त राशियों में से जिस किसी भी राशी में बैठे होंगे तो वह ग्रह प्राय: अधिकांश रूप में सारे जीवन भर ही उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल देते रहते हैं किन्तु यदि कोई भी ग्रह जो सूर्य से अस्त होता है या २९ अंश से अधिक होता है या १ अंश से कम होता है तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल नहीं देता है और वृहस्पति जब २ कभी धन राशी या कुम्भ राशी या वृषभ राशी पर होते हैं तो विद्या व संतान पत्त में साधारण फल देते हैं।

कुं० नं० १०२



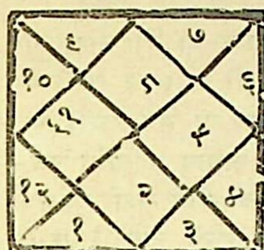
पंचांग के अन्दर जिन वर्षों व मासों में बुध मिथुन राशी पर या कर्क राशी पर या कन्या राशी पर या वृश्चिक राशी पर या धन राशी पर या मकर राशी पर या कुम्भ राशी पर या वृषभ राशी पर जब २ आवेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी मिथुन राशी पर या कुम्भ राशी पर या तुला राशी पर या धन राशी पर आवेंगे अथवा शनी जब २ कभी मिथुन राशि या कन्या राशी पर या मेष राशी पर जब २ कभी आवेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी मिथुन राशी पर या धन राशी पर आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी मिथुन राशी पर या धन राशी पर आयंगे अथवा राहू जब २ कभी मिथुन राशी पर आवेंगे अथवा मङ्गल जब २ कभी मीन राशी पर या वृश्चिक राशी पर या सिंह राशी पर आवेंगे, तब-तब आयु की वृद्धी तथा पुरातत्व का लाभ और पेट की बीमारियों को आराम तथा दिनचर्या में रौनक पैदा करते हैं और इसके विपरीत यदि बुध जब २ कभी तुला राशी पर या मीन राशी पर या मेष राशी पर जब२आवेंगे और अथवा शुक्र जब२कभी मिथुन राशी या धन राशी पर जब २ आवेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी मिथु नराशी या धन राशी पर जब २ आवेंगे अथवा केतू जब २ कभी मिथुन राशी पर आवेंगे, तब २ आयु व उदर और पुरातत्व एवं दिनचर्या आदि सभी के सम्बन्धों में कुछ हानिकारक व परेशानियों के कार्य पैदा करते हैं और यदि जन्म के समय में इन उपरोक्त सभी ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह यदि जन्म कुण्डली के अन्दर इन्हीं उपरोक्त राशियों में से किसी भी राशी में कोई ग्रह बैठा होगा, तो वह प्रायः अधिकांश सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल देता रहेगा और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा, तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल नहीं दे सकेगा।

कु० नं० १०४

पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में शनी, वृषभ राशी या मीन राशी या वृश्चिक राशी या सिंह राशी पर जब २ आयेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी वृषभ राशी या कन्या राशी या वृश्चिक राशी पर जब २ आवेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी, वृषभ राशी या वृश्चिक राशी पर आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी,वृषभ राशी या वृश्चिक राशी पर आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी वृषभ राशी या वृश्चिक राशी पर जब२आयेंगे अथवा मङ्गल जब२ कभी कुम्भ राशी या वृश्चिक राशी या तुला राशी पर जब २ आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी वृषभ राशी या वृश्चिक राशी या मीन राशी या कुम्भ राशी या कर्क राशी या मकर राशी या सिंह राशी पर जब २ आयेंगे तब २ स्त्री व दैनिक रोजगार के लिये लाभप्रद सुखदायक रहेंगे किन्तु इसके विपरीत यदि राहू या केतू जब २ कभी वृषभ राशी या वृश्चिक राशी पर कोई भी आते हैं अथवा शुक्र जब २ कभी मेष राशी या मिथुन राशी या कन्या राशि या तुला राशि या धन राशि पर जब २ आयेंगे तब २ स्त्री पक्ष में व दैनिक रोजगार के पक्ष में कुछ कमी व अशांति का योग पैदा करते हैं और जन्म के समय यदि इन्हीं सब ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार ही यदि जन्म कुण्डली में बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करता रहता है, यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर पाता है ।

सहायता शक्ति का फलादेश

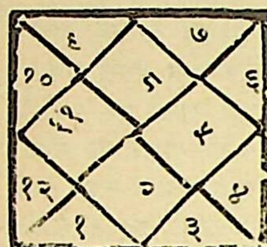
कु० नं० १०५



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में वृहस्पति कर्क राशी या वृश्चिक राशी या मीन राशी पर आवेंगे अथवा शनी जब २ कभी कर्क राशी या वृषभ राशी पर आवेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी कर्क राशी या मकर राशी पर आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी कर्क राशी पर आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी कर्क राशी या मकर राशी या सिंह राशी या कन्या राशी या धन राशी मीन राशी या वृषभ राशी पर जब २ कभी आवेंगे तब २ भाग्य और धर्म व ईश्वर-भक्ति व दैवीशक्ति की वृद्धी करते हैं तथा मन प्रसन्न रहता है और इसके विपरीत यदि शुक्र जब २ कभी कर्क राशी पर आयेंगे अथवा मङ्गल जब २ कभी कर्क राशी या मेष राशी या मकर राशी या धन राशी पर आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब-जब कभी तुला राशी या वृश्चिक राशी या मेष राशी या मिथुन राशी पर आयेंगे अथवा राहू या केतू कोई जब २ कभी कर्क राशी या मकर राशी पर आयेंगे, तब २ भाग्य, धर्म, ईश्वर भक्ति शक्ति तथा मन की प्रसन्नता, आदि विषयों मेंकमी व अशांती के कारण पैदा करते हैं और जन्म के समय यदि इन्हीं ग्रहों में से जो २ भी उपरोक्त राशियों के अनुसार कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली में बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहेंगे और जो कोई ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा, तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल नहीं दे सकता है।

 वृश्चिक लग्न वालों को, देह और सुन्दरता व आत्मबल ख्याति आदि फलादेश

कुं० नं० १०६

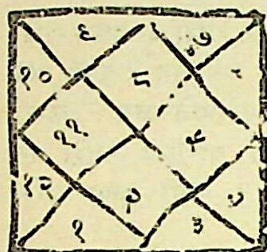


पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में मङ्गल वृश्चिक राशी या सिंह राशी या वृषभ राशी या कन्या राशी या मकर राशी या कुम्भ राशी या मीन राशी या मेष राशी पर जब-जब कभी आयेंगे अथवा वृहस्पति जब-जब कभी वृश्चिक राशी या मीन राशी या कर्क राशी में आवेंगे अथवा शनी जब २ कभी वृश्चिक राशी में आयेंगे अथवा सूर्य जब-जब कभी वृश्चिक राशी में आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी मिथुन राशी पर आयेंगे तब २ देह व ख्याति, सुन्दरता, आत्मबल मान इत्यादि विषयों की वृद्धी करते हैं, किन्तु इसके विपरीत यदि मङ्गल जब २ कभी मिथुन राशी या कर्क राशी या तुला राशी या धन राशी पर जब २ आवेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी वृश्चिक राशी पर आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी वृश्चिक राशी पर आयेंगे अथवा, राहू या केतू कोई भी जब कभी वृश्चिक राशी या वृषभ राशी पर आयेंगे तब २ देह पत्त एवं सुन्दरता, ख्याति मान, आत्मबल आदि के विषय में अवनति का कार्य करते हैं, और यदि जन्म के समय में इन उपरोक्त ग्रहों में से को भी ग्रह इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार यदि जन्म कुण्डली के अन्दर जो २ कोई भी बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्राय: सारे जीवन भर ही उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहते हैं और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल, लिखे अनुसार नहीं दे सकता है ।

कु० नं० १०७

पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों मङ्गल मेष राशि या सिंह राशि या कन्या राशी या वृश्चिक राशि या मकर राशि या वृषभ राशि पर जब २ आयेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी मेष राशि पर आवेंगे अथवा बृहस्पति जब २ कभी मेष राशि या धन राशि या सिंह राशि पर आवेंगे अथवा शनी जब २ कभी कुम्भ राशि या कर्क राशि या तुला राशि पर जब २ आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी मेष राशि पर आवेंगे अथवा राहू या केतू दोनों में से कोई भी जब २ कभी मेष राशि या तुला राशि पर आयेंगे, तब २ शत्रु, रोग, झगड़े झंझटों से मुक्ति पाने का योग प्राप्त होगा और निर्भयता प्राप्त होगी, किन्तु इसके विपरीत यदि मङ्गल जब २ कभी मिथुन राशि या कर्क राशि या धन राशि पर जब २ आवेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी मेष राशि पर आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी मेष राशि पर आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी मेष राशि पर आयेंगे तब २ कुछ झगड़े झंझट, रोग, शत्रु आदि की ओर से कुछ परेशानी प्राप्त करने झगड़े झंझट, रोग, आदि की ओर से कुछ परेशानी प्राप्त करने का योग बनता है और जन्म के समय यदि इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह, ऊपर लिखी राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली के अन्दर जो कोई ग्रह बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार फल प्रदान करते रहते हैं, और जो कोई ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकते हैं।

कुं० नं० १०८

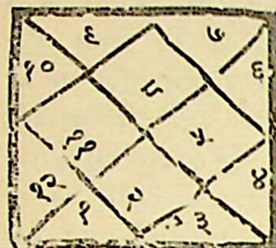


पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में शनी कुम्भ राशी या वृषभ राशी या धन राशी या कन्या राशी या कर्क राशी या सिंह राशी या वृश्चिक राशी या मकर राशी पर जब २ आयेंगे अथवा सूर्य जब कभी कुम्भ राशी या सिंह राशी पर आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कुम्भ राशी या सिंह राशी पर आयेंगे या गुरु जब २ सिंह राशी पर आवेंगे अथवा किसी अंशों में मङ्गल या गुरु भी जब २ कुम्भ राशी पर आवेंगे, तब-तब माता, भूमि, मकानादि, सुख प्राप्ती साधनों की वृद्धि करते हैं किन्तु इसके विपरीत यदि शनी, जब २ कभी मेष राशी या मिथुन राशी पर जब २ आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी कुम्भ राशी पर आवेंगे अथवा किसी अंशों में बुध जब कुम्भ राशी पर आयेंगे अथवा राहू या केतू दोनों में से कोई भी जब २ कुम्भ राशी या सिंह राशी पर आयेंगे, तब-तब माता, भूमि, मकानादि एवं सुख के साधनों की कमी प्राप्त होगी और जन्म के समय यदि इन्हीं सब ग्रहों में से ,जो २ कोई भी, इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही, अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करता रहेगा और यदि कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार अपना पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है ।

कुं० नं० १०६

पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में सूर्य सिंह राशि पर या कन्या राशि पर या वृश्चिक राशि पर या धन राशि पर या कुम्भ राशि पर या मीन राशि पर या कर्क राशि पर या मकर राशि पर या मेष राशि पर पर या वृषभ राशि पर जब २ आयेंगे अथवा बृहस्पति जब जब कभी सिंह राशि पर या धन राशि पर या कुम्भ राशि पर या मेष राशि जब २ आवेंगे अथवा मंगल जब २ कभी सिंह राशि पर या मकरराशि पर या वृषभ राशि पर जब २ आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी सिंह राशि या कुम्भ राशि पर आयेंगे तब २ मान, प्रतिष्ठा, राज, समाज पिता, बड़ा कारबार आदि सम्बन्धों की उन्नति प्रदान करते हैं, किन्तु इसके विपरीत यदि सूर्य जब कभी तुला राशि पर या मिथुन राशि पर जब २ आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी सिंह राशि या कुम्भ राशि पर आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी सिंहराशि पर आयेंगे अथवा राहू या केतू दोनों में से कोई भी जब कभी सिंह राशि पर या कुम्भ राशि पर आवेंगे तब तब पिता, राज समाज, बड़ा कारबार, मान प्रतिष्ठा आदि के विषय में हानिकारक या कष्टप्रद कार्य करते हैं और जन्म के समय यदि इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार यदि जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो यह प्राय: अधिकाँश रूप में सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करता रहता है। और यदि कोई भी ग्रह, सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

कुं० न० ११०

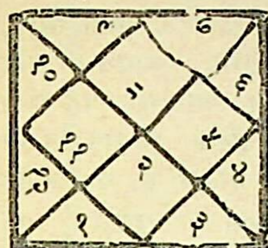


(चं०) वृश्चिक लग्न वाले व्यक्ति को भाग्य, धर्म, यश ईश्वर भक्ती, शाँती आदि विषयों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह चन्द्रमा हैं, इनका रंग गौर उज्जवल है इनका स्वभाव शांत, शीतल सुखद है इनकी मणी मोती है यह उन्नति प्रदान करने में मनोबल की सतोगुणी शक्ति से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियां यह हैं कर्क ४, ५, ६, १, १२, २ और नेष्ठ राशियाँ यह हैं ७, १, २ और सामन्य राशियां यह ८ हैं

(सू०) वृश्चिक लग्न वाले व्यक्तियों को—राज, व्यापार, पिता कीर्ति, वैभव, मान, प्रतिष्ठा, प्रभाव आति विषयों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह सूर्य हैं, इनका रंग लाल है, इनका स्वभाव महान् गर्म व प्रकाशदाता है, इनकी मणी माणिक है, यह उन्नति प्रदान करने में महान प्रभावशाली कर्म की शक्ति से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ, सिंह से लेकर ५-६ ८, ९-११, १२.१०.२.१ मेष तक है और मेष्ठ राशियां यह ७—३—तुला मिथुन हैं ।

(बु०) वृश्चिक लग्न वाले व्यक्तियों को धन, लाभ आवश्यक पदार्थों की प्राप्ती, आयु, मृत्यु, उदर का सम्बन्ध, विदेश इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह बुध हैं, इनका रंग हरा है, इनका स्वभाव नरम है इनकी मणी पन्ना है, यह उन्नति प्रदान करने में दूसरे स्थानों में सम्बन्धित विवेक शक्ति की दौड़ धूप के कार्यों से काम करते हैं इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियां यह हैं कन्या से लेकर ६. ८. ९. १०. ११. २. ३. ४, ५ सिंह तक और नेष्ठ राशियाँ यह ७. १२. १ तुला, मीन मेष हैं ।

कुं० नं० १११



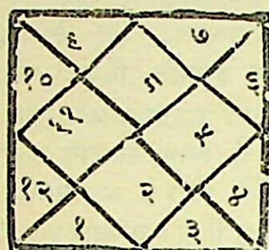
(शु०) वृश्चिक लग्न वाले व्यक्तियों को- खर्च, बाहरी स्थानों का सम्बन्ध, स्त्री, दैनिक रोजगार, भोग, ससुराल इत्यादि विषयों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शुक्र है, इनका रंग सफेद है, इनका स्वभाव कला युक्त कोमल है,इनकी मणी हीरा है, यह उन्नति प्रदान करने में,बाहरी स्थानों के सबन्धित संपर्क से रोजगार में उन्नति करने का कार्य करते हैं! इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह वृश्चिक से लेकर ८-१०-११-१२-२-४ कर्क तक के और नेष्ट राशियाँ यह ६-१-३-६ हैं और सामान्य राशियां यह ५-७ हैं।

(मं) वृश्चिक लग्न वाले व्यक्तियों को, देह आत्मबल, स्वरूप, ख्याति शत्रु, रोग झगड़े झंझट, पाप, ननसाल इत्यादि योगों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह मङ्गल हैं। इनका रंग लाल है,इनका स्वभाव अहभावीय गरम है, इनकी मणी मूंगा है, यह उन्नति प्रदान करने में देह के परिश्रम की शक्ति से कार्य करते हैं इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशिया यह वृश्चिक से लेकर ८-१०-११-१२ १-२-५-६ और नेष्ट राशियां यह हैं ७-३-४ और सामान्य राशि यह ६ हैं

(वृ०) वृश्चिक लग्न वाले व्यक्तियों को धन की संग्रह शक्ति, कुटुम्ब, विद्या, बुद्धि वाणी सन्तान आदि विषयों को शक्ति के प्रधान के अधिकारी फलदाता ग्रह वृहस्पति' इनकी रंग पीला है, इनका स्वभाव बड़प्पन युक्त आदर्श है, इनकी मणी पुखराज है यह उन्नति प्रदान करने में बुद्धिबल व धनबल की शक्ति से कार्य करते हैं। इनका कुण्डली के अंदर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं ८-१२-२-४-५-६ और नेष्ट राशियां यह हैं ७.१०.३ और सामान्य राशी यह ११.१.६ हैं।

 वृश्चिक लग्न वालों को—रेस आदि सभी व्यापार कर्मों के लिये लाभकारी रंग मणियां तथा ग्रहों के गुण दोषादि का फलादेश

कुं० नं० ११२

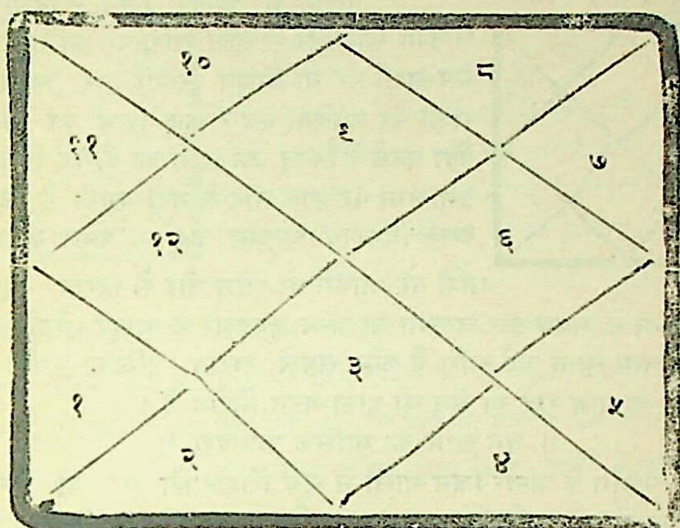


(श०) वृश्चिक लग्न वाले व्यक्तियों बाहुबल का कार्य भाई-बहन, माता, भूमि, मकानादि सुख, मातृभूमि, पुरुषार्थ इत्यादि विषयों की शक्ति के प्रधान अधिकारी ग्रह शनी हैं इनका रंग श्याम है, इनका स्वभाव कठोर कोमल है इनकी मणी नीलम है, यह उन्नति प्रदान में धैर्य, साहस व पुरुषार्थ की शक्ति के कार्य करते हैं। इनका जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं मकर से लेकर १०–११–२–४–६–८–९–१२ और नेष्ठ राशियाँ यह हैं १, ३ और सामान्य राशियां यह ५, ७ सिंह व तुला हैं।

(रा०) वृश्चिक लग्न वाले व्यक्तियों को, असत्य,छिपाव,चिंता, कष्ट, अनाधिकार लाभ के लिये विशेष प्रयत्न वाली गुप्त बुद्धी इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह राहू है इनका रंग काला है इनकी मणी गोमेध है, इनका स्वभाव स्वार्थी है यह उन्नति प्रदान करने में कष्टकारी मार्ग के द्वारा महान लाभ की प्राप्ती के लिये गुप्त सूक्ष्म की शक्ति से कार्य करते हैं इनका जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह १०, ६, १, ३ हैं और नेष्ठ राशियां यह हैं धन, सिंह ९, ५ और सामान्य राशियाँ यह ८, ११, १२, २, ४. ७ हैं।

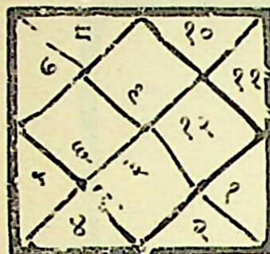
(के०) वृश्चिक लग्न वाले व्यक्तियों को–असत्य चिन्ता कष्ट, अनाधिकार लाभ के लिये विशेष प्रयत्न गुप्त बाहुबल की निष्ठुरता इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह केतू हैं इनका रंग काला है इनका स्वभाव कठोर हैं इनकी मणी लहसनियाँ है, यह उन्नति प्रदान करने में हृदय बल की गुप्त कठिन शक्ति से कार्य करते हैं इनकी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं धन से लेकर ९, १०, १, ६ और नेष्ठ राशियाँ यह ३, ५, ८ है और सामान्य राशियां यह १२, १२, २, ४, ६ तुला हैं।

धन लग्न फलादेश प्रारम्भ



इस धन लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सुख और धन लाभ के सम्बन्ध में मुख्य ग्रह प्रायः सू० बु० शु०श० ही हैं और अधिकांश इन्हीं ग्रहों के रंग व मणियां धनोन्नति संबंधी सभी व्यापारादि कार्यों में लाभप्रद सिद्ध होंगे, किन्तु राशि और स्थानान्तर के भेद से प्रायः सभी ग्रह अच्छे और बुरे फल के सूचक बन जाते हैं जैसा कि आपको कुण्डली नं० ११३ से लेकर कुण्डली नं० १२८ तक में विचारहेतु इन सभी ग्रहों का भाग्य के हर एक विषय में भिन्न २ फलादेश महान् सरल रूप से जानने को मिलेगा।

कुं० नं० ११३

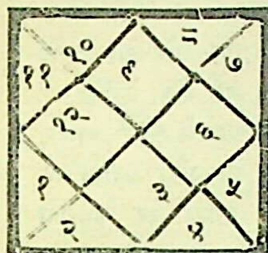


पंचाँग के अन्दर जिन २ दिनों में चन्द्रमा खासतौर से तुला राशि पर आवेगा या मेष राशी पर या मिथुन राशी पर या कर्क राशी पर आवेगा तब २ कुछ लाभ का योग पैदा करते हैं किन्तु धन लाभ का दैनिक विचार इस लग्न पर ठीक तौर से नहीं बनता है किन्तु इसके विपरीत चन्द्रमा जब २ कभी वृश्चिक राशि पर आवेंगे तो खाश तौर से खराब रहेगा और जन्म के समय इस चन्द्रमा का जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने का सबसे उत्तम स्थान कर्क राशि है और सबसे खराब वृश्चिक राशि है, चन्द्रमा के साथ राहू या केतू का होना बहुत निशेध है।

॥ धन लाभ का मासिक फलादेश ॥

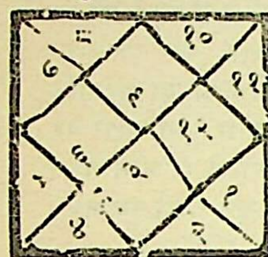
पंचाँग के अन्दर जिन मासों में सूर्य सिंह राशि पर या कन्या राशि पर या धन राशि पर या कुम्भ राशि पर या मीन राशि पर या मेष राशि पर या मिथुन राशि पर जब २ आवेंगे अथवा बुध जब २ कभी सिंह राशि पर या कन्या राशि पर या तुला राशि पर या धनराशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या मेष राशि पर या मिथुन राशि पर जब २ आवेंगे अथवा शुक्र जब २ कभा तुला राशी पर या धन राशि पर या मेष राशि पर या मेष राशि पर या कुम्भ राशी पर या मीन राशि पर या मेष राशि पर या मिथुन राशि पर या सिंह राशि पर जब आयेंगे तब २ इन मासों में सदैव लाभ होता रहेगा किन्तु इसके विपरीत यदि सूर्य जब २ कभी तुला राशि पर या वृश्चिक राशी पर या कर्क राशि पर जब २ कभी आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी वृश्चिक राशि पर या मीन राशि पर या वृषभ राशि पर या कर्क राशि पर जब २ आवेंगे या शुक्र जब २ कभी वृश्चिक राशि पर या वृषभ राशि पर या कर्क राशि पर या कन्या राशि पर जब आयेंगे तब २ उन उन महीनों में लाभ को कमजोरी रहेगी।

कुं० नं० ११४



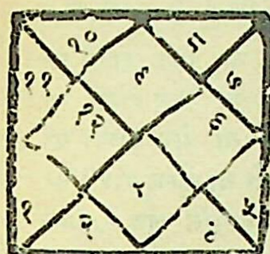
पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में शनी, मकर राशी पर या तुला राशी पर या धन राशी पर या कुम्भ राशी पर या कन्या राशी पर जब २ कभी आवेंगे अथवा बृहस्पति जब २ कभी सिंह राशी पर या कन्याराशी पर या धन राशी पर या कुम्भ राशी पर मीन राशी पर या मेष राशी पर या मिथुन राशी पर जब २ आवेंगे अथवा राहू जब २ कभी तुला राशी पर या कुम्भ राशी पर या वृषभ राशी पर या मिथुन राशी पर जब २ आयेंगे अथवा केतू जब २ कभी तुला राशी पर या कुम्भ राशी पर या वृषभ राशी पर या धन राशी पर जब २ आयेंगे, तब २ उन २ वर्षों में धनलाभ की प्राप्ती का योग उत्तम रहेगा किन्तु जिन २ वर्षों में, मासिक धनलाभ का योग भी साथ में उत्तम रहेगा, वही समय ज्यादा उत्तम रहेगा, और इसके विपरीत जिन २ वर्षों में, शनी कर्क राशी पर या वृश्चिक राशी पर मेष राशी पर या वृषभ राशी पर या मिथुन राशी पर होगा अथवा बृहस्पति जिन २ वर्षों में वृश्चिक राशी में या वृषभ राशी में या कर्क राशी में या मकर राशी में आवेंगे अथवा राहू जिन २ वर्षों में धन राशी पर या मकर राशी पर या कर्क राशी पर या मीन राशी पर जब २ आयेंगे अथवा केतू तो जब २ कभी मिथुन राशी पर या मकर राशी पर या कर्क राशी पर या मीन राशी पर आयेंगे तब २ उन वर्षों में धन की कुछ हानि व अशांती के कारण उत्पन्न होते रहेंगे, और यदि जन्म के समय में इन उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर, यदि इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार जो २ ग्रह बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल देते रहेंगे और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या सून्य अंश

कु० नं० ११५



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में बृहस्पति सिंह राशि पर या कन्या राशि पर या धन राशि पर या मेष राशि पर या मिथुन राशि पर जब २ आयेंगे और शनी, जब २ कभी तुला राशि पर या मकर राशि पर या सिंह राशि पर या कुम्भ राशि पर आयेंगे अथवा शनी यदि इन दो राशियों या मेष राशि या वृषभ राशि पर आकर कुछ २ ठीक रहते हैं राहू जब २ कभी मिथुन राशि पर या तुला राशि पर या वृषभ राशि पर आयेंगे और केतू जब २ धन राशि पर या कुम्भ राशि पर या वृषभ राशि या तुला राशि पर आवेंगे और मंगल जब २ कभी मेषराशि पर या वृश्चिक राशि पर या कुम्भ राशि पर या तुला राशि पर आयेंगे और बुध जब २ कभी कन्या राशि पर या तुला राशि पर या धनराशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ, और सूर्य जब २ कभी सिंह राशि पर या कन्या राशि पर या धन राशि पर या मीन राशि पर या मेष राशि पर या मिथुन राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ पर जब २ आयेंगे और शुक्र जब २ कभी तुला राशि पर या मकरराशि पर या कुम्भराशि पर या मीन राशि पर या मिथुन राशि पर या मेष राशि पर जब जब आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी कर्कराशि में या तुला राशि में या कुम्भराशि में या वृषभ राशि में जब २ आयेंगे अर्थात् यह सभी ग्रह ऊपर लिखे अनुसार किसी भी राशि में कोई ग्रह घूमता हुआ आवे किंतु जब जब एक साथ में यह सब ग्रह ऊपर लिखी राशियों के अन्तर्गत आया करेंगे, तब तब ही राजयोग, कारक उन्नतिदायक कार्य हुआ करेंगे किन्तु इनमें से कोई भी ग्रह यदि जन्म के समय में इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली में बैठा होगा तो वह प्रायः सारे जीवन भर ऊपर लिखे अनुसार, शुभ फल का दाता ही माना जाता है।

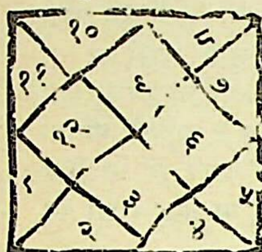
कुं० नं० ११६



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में मङ्गल मेष राशी पर या मिथुन राशी पर या कन्या राशी पर या तुला राशी पर या धन राशी पर या मकरराशी पर या कुम्भ राशी पर या मीन राशी पर जब २ आवेंगे, अथवा वृहस्पति जब २ कभी मेष राशी पर या सिंह राशी पर या धन राशी पर या तुला राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा, बुध जब २ कभी मेष राशी या तुला राशी पर आयेंगे, अथवा सूर्य जब २ कभी मेष राशी पर आवेंगे, अथवा शुक्र जब २ कभी मेष राशी पर या तुला राशी पर आवेंगे तब २ विद्या व संतान पक्ष के विषय में एवं मस्तिष्कोंकेविचारों के संबंध में उन्नति का सुखद कार्य पैदा करते हैं, और इसके विपरीत यदि मङ्गल जब २ कभी वृषभ राशी पर या कर्क राशी पर या वृश्चिक राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा शनी जब २ कभी मेष राशी में या कुम्भ राशी में या कर्क राशी में या तुला राशी में जब-जब आवेंगे, अथवा चन्द्रमा जब २ कभी मेष राशी में या तुला राशी में आवेंगे, अथवा राहू या केतू जब कभी कोई मेष राशी पर या तुला राशी पर आवेंगे तब २ विद्या व सन्तान पक्ष में एवं मस्तिष्क व वाणी के कार्यों में परेशानी का कार्य प्रदान करते हैं, और इन्हीं सब ग्रहों में से यदि जन्म के समय में जो २ कोई भी ग्रह उपरोक्त राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली के अन्दर यदि बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहते हैं। किन्तु यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या कोई ग्रह २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपना पूरा २ फल पूरी २ शक्ति के अनुसार नहीं दे सकते हैं।

धन लग्न वालों को–आयु पुरातत्व व दिनचर्या, उदर इत्यादि का फलादेश

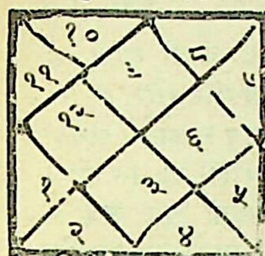
कु० नं० ११७



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व म सों में चन्द्रमा कर्क राशी या सिंह राशी या कन्या राशी या तुला राशी या धन राशी या मकर राशी या मीन राशी या मेष राशी या वृषभ राशी या मिथुन राशी या कुम्भ राशी पर जब २ आवेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी मीन राशी या मकर राशी या कर्क राशी पर जब २ आवेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी कर्क राशी या मकर राशी पर आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी कर्क राशी पर आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी कर्क राशी या मकर राशी पर आयेंगे तब २ आयु, दिनचर्या, पुरातत्व, पेट इत्यादि सम्बन्धों में सुखद कार्य करते हैं, किन्तु इसके विपरीत यदि चन्द्रमा जब २ कभी वृश्चिक राशी पर आयेंगे अथवा मङ्गल जब २ कभी कर्म राशी या मेष राशीं या मकर राशी या धन राशी पर जब आवेंगे अथवा राहू या केतू दोनों में से कोई भी, जब २ कभी कर्क राशी या मकर राशी पर आयेंगे तब आयु, पुरातत्व, दिनचर्या, पेट इत्यादि संबंधों में परेशानी का योग उत्पन्न करते हैं और जन्म के समय यदि इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह, इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार यदि जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में सारे जीवन भर ही उपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करता रहता है। और यदि कोई भी ग्रह, सूर्य से अस्त होगा, या २९ अंश से अधिक होगा, या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

नोट— इस धन लग्न वाले प्राणियों को चन्द्रमा, शुक्र, मङ्गल इन तीनों ग्रहों के द्वारा यदि अच्छे से अच्छा फल प्राप्ति का समय आता है, तब २ भी कुछ न कुछ परेशानी अवश्य करते हैं।

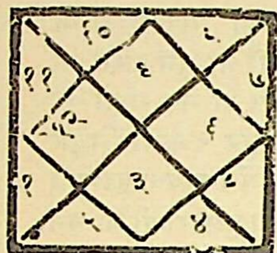
कु० नं० ११८



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में बुध मिथुन राशी या सिंह राशी या कन्या राशी या तुला राशी या धन राशी या मकर राशी या कुम्भ राशी या मेष राशी पर जब २ आवेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी मिथुन राशी या धन राशी पर आयेंगे अथवा बृहस्पति जब २ कभी मिथुन राशी या तुला राशी या धन राशी या कुम्भ राशी पर लब २ आयेंगे। अथवा शुक्र जब २ कभी मिथुन राशी या धन राशी पर आवेंगे अथवा शनी जब २ कभी मिथुन राशी या कन्या राशी या धन राशी या मेष राशी में जब २ आयेंगे अथवा राहू जब २ कभी मिथुन राशी पर आवेंगे तब २ के समयों में स्त्री व दैनिक रोजगार की वृद्धी व सुख, लाभ खूब प्राप्त होता है किन्तु इसके विपरीत यदि बुध जब २ कभी कर्क राशी या वृश्चिक राशी या मीन राशी या वृषभ राशी पर जब २ आयेंगे अथवा मङ्गल जब २ कभी मिथुन राशी या मीन राशी या वृश्चिक राशी या धन राशी पर जब २ आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी २ मिथुन राशी या धन राशी पर आयेंगे अथवा केतू जब कभी मिथुन राशी पर आयेंगे तब २ स्त्री व दैनिक रोजगार में हानि व परेशानी के योग उत्पन्न होते हैं और यदि जन्म के समय में इन्हीं सब ग्रहों में से जो २ कोई भी, इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करता रहेगा और यदि कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार अपना पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

 धन लग्न वालों को, भाग्य, धर्म, ईश्वर-भक्ति, दैवी शक्ति का फलादेश

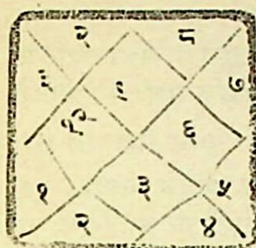
कुं० नं० ११६



पचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में सूर्य सिंह राशी या कन्या राशी या धन राशी या कुम्भ राशी या मीन राशी या मेष राशी या मिथुन राशी पर जब २ आवेंगे अथवा बृहस्पति जब २ कभी सिंह राशी या धन राशी या मेष राशी पर आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी सिंह राशी या कुम्भ राशी पर आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी सिंह राशी पर आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी सिंह राशी पर आवेंगे अथवा मङ्गल जब २ कभी मकर राशी पर आयेंगे, तब २ भाग्य और धर्म व ईश्वर भक्ति व दैवी शक्ति का चमत्कार प्राप्त करते हैं, और इसके विपरीत यदि सूर्य जब २ कभी बृश्चिक राशी या वृषभ राशि या कर्क राशी या तुला राशी पर आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी सिंह राशी या कुम्भ राशी पर आयेंगे अथवा मङ्गल जब २ कभी सिंह राशी या वृषभ राशी पर आयेंगे अथवा राहू या केतू कोई जब २ कभी सिंह राशी पर आयेंगे, जब २ भाग्य, धर्म, ईश्वर भक्ति, दैवी शक्ति, बरक्कत आदि विषयों में कमी व अशान्ती के कारण पैदा होते हैं, और यदि सूर्य जब-जब कभी मकर राशी पर आवेंगे तो सामान्य फल प्रदान करते हैं और यदि जन्म के समय इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार जो २ कोई भी ग्रह यदि जन्म कुण्डली में बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहेंगे, और जो कोई ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या २६ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा, तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल नहीं दे सकता है ।

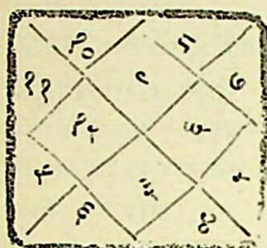
ख्याति, आदि का फलादेश

कु० नं० १२०



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्ष में व मासों में बृहस्पति जब २ कभी धन राशी या सिंह राशी या मेष राशी या मिथुन राशी या मीन राशी या कन्या राशी पर जब २ कभी आयेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी धन राशी पर आवेंगे अथवा बुध जब २ कभी धन राशी या मिथुन राशी पर आयेंगे अथवा शनी जब २ मिथुन धन राशी पर आयेंगे अथवा केतू जब २ कभी धन राशी पर आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी कर्क राशी या मकर राशी पर आयेंगे तब २ देह व ख्याति, सुन्दरता आत्मबल, इत्यादि के विषय में उन्नति प्रदान करते हैं, किन्तु इसके विपरीत यदि बृहस्पति जब २ कभी मकर राशी या वृषभ राशी या वृश्चिक राशी या कर्क राशी पर जब २ आवेंगे अथवा मङ्गल जब २ कभी धन राशी या वृषभ राशी या मिथुन राशी पर जब २ आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी धन राशी पर आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी २ धन राशी पर आयेंगे अथवा राहू जब २ कभी धन राशी पर आयेंगे तब २ देह, ख्याति, सुन्दरता, आत्मबल आदि के विषय में अशान्ति का योग पैदा करते हैं, और यदि जन्म के समय में इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से, इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार जो २ कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते हैं और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल, लिखे अनुसार नहीं दे सकता है।

कुं० नं० १२१



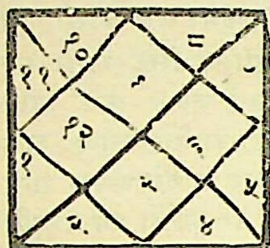
पंचांग के अन्दर जिन वर्षों व मासों में शुक्र जब २ कभी वृषभ राशी या तुला राशी या धन राशी या कुम्भ राशी या मीन राशी या कभी वृषभ राशी या वृश्चिक राशी पर आवेंगे अथवा शनी जब २ कभी वृषभ राशी या सिंह राशी या मीन राशी पर आवेंगे अथवा वृहस्पति जब२कभी मङ्गल राशी पर आवेंगे अथवा मंगल जब २ कभी कुम्भ राशि या वृषभ राशी या तुला राशी पर आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी वृषभ राशी पर आवेंगे अथवा राहू या केतू दोनों में से कोई भी जब २ कभी वृषभ राशी पर आयेंगे, तब २ शत्रु पक्ष में झगड़े झंझट, रोग आदि विषयों के सम्बन्ध में शान्ती, एवं विजय का योग पैदा करते हैं किन्तु इसके विपरीत यदि शुक्र जब २ कभी कर्क राशी या कन्या राशी या वृश्चिक राशी पर जब २ आवेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी वृषभ राशी पर आवेंगे तब २ शत्रु पक्ष व रोगादिक एवं झगड़े-झंझट, आदि के विषय में कुछ अशांती पैदा करते हैं और ऊपर जो वृषभ के मङ्गल को श्रेष्ठ लिखा है वह कुछ परेशानी के साथ शत्रु पक्ष में विजय करता है, और जन्म समय यदि इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी ऊपर लिखी राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली के अन्दर यदि जो कोई ग्रह बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार फल प्रदान करते रहते हैं, और जो कोई ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा-पूरा फल प्रदान नहीं कर सकते हैं।

कुं० नं० १२२

१०	८	
११	९	७
१२	६	
१	३	५
२		४

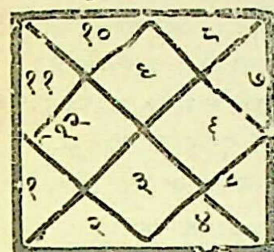
पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में बृहस्पति जब २ कभी मीन राशी या कन्या राशी या धन राशी या सिंह राशी पर जब २ आवेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी मीन राशी कन्या राशी पर आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी मन राशी पर आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी मीन राशी पर आवेंगे तब २ भूमि मकान, सुख, माता आदि के विषयों में उन्नति प्रदान करते हैं किन्तु इसके बिपरीत यदि बृहस्पति जब २ कभी वृषभ राशी या मकर राशी पर जब २ आयेंगे अथवा मङ्गल जब २ कमी मीन राशी या धन राशी या सिंह राशी या कन्या राशी पर आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी मीन राशी या कन्या राशी पर आयेंगे अथवा राहू या केतू जब २ कभी मीन राशी या कन्या राशी पर आवेंगे तव २ माता भूमि, मकानादि, सुख शांती के सम्बन्यों में हानिकारक योग पैदा करते हैं, और बृहस्पति जब २ कभी कर्क राशी या वृश्चिक राशि पर आवेंगे, तो उपरोक्त विषयों में कुछ अच्छा कुछ बुरा फल पैदा करते हैं, और जन्म के समय में यदि इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार इन्हीं ग्रहों में से जो २ कोई भी, जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करता रहेगा, और यदि कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या २९ अंश से अधिक होगा या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार अपना पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

कु० नं० १२३



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में बुध कन्या राशि या तुला राशी या धन राशी या मकर राशी या कुम्भ राशी या मेष राशी या मिथुन राशी या सिंह राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा बृहस्पति जब २ कभी कन्या या मीन राशी पर आवेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी कन्या राशी या मीन राशि पर जब २ आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी कन्या राशी या धन राशी पर जब २ आयेंगे तब २ पिता स्थान में व राज समाज, मान, प्रतिष्ठा, कारबार आदि के सम्बन्धों में उन्नति एवं लाभ की शक्ती प्रदान करते हैं किन्तु इसके विपरीत यदि बुध जब २ कभी वृश्चिक राशी या वृषभ राशी या कर्क राशी या मीन राशी में आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब जब कभी कन्या राशी या मीन राशी में आवेंगे, अथवा शुक्र जब २ कभी कन्या राशी या मीन राशी में आयेंगे अथवा किसी अंशों में मङ्गल भी जब २ कभी कन्या राशी या मिथुन राशी या मीन राशी या कुम्भ राशी में जब २ आयेंगे अथवा राहू या केतू दोनों में से कोई भी जब २ कभी कन्या राशी या मीन राशी में आयेंगे तब २ पिता, राज-समाज, मान, प्रतिष्ठा, कारबार आदि के विषयों में कुछ हानिकारक परेशानियाँ का सा योग पैदा करते हैं, और जन्म के समय यदि इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार जो ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठा होगा तो वह ग्रह प्राय: अधिकांश रूप में सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करता रहता है और यदि कोई भी ग्रह, सूर्य से अस्त होगा, या २९ अंश से अधिक होगा, या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

कुं० नं० १२४

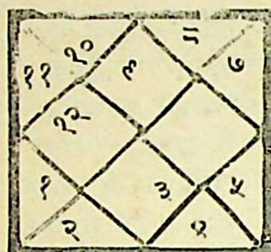


(सू०) धन लग्न वाले व्यक्तियों को-भाग्य, धर्म, यश. ईश्वर, भक्ती, दैवीबल, तेज इत्यादि शक्तियों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह सूर्य हैं, इनका रंग लाल है, इनका स्वभाव महान् गरम है, इनकी मणी माणिक है, यह उन्नति प्रदान करनेमें ईश्वरीय भक्ति एवं भाग्य बल की शक्ति से कार्य करते हैं इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां, यह हैं ५-६-६-२१-१२-१-६ और नेष्ट राशियाँ, यह हैं ८-७-४-२ और सामान्य राशि यह १० मकर हैं।

(बु०) धन लग्न वाले व्यक्तियों को-बड़ा कारबार, राज समाज, मान, प्रतिष्ठा, दैनिक रोजगार, स्त्री, भोग, वैभव, इत्यादि बिषयों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह बुध हैं, इनका रंग हरा है, इनका स्वभाव कोमल है इनकी मणी पन्ना है,यह उन्नति प्रदान करने में विवेक शक्ती सहित नित्य प्रति के कर्मयोग से कार्य करते हैं इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियां यह हैं ६-१०-११-१-३-५-६ ७ और नेष्ट राशियां यह ८-१२-२-४ हैं।

(शु०) धन लग्न वाले व्यक्तियों को धन लाभ, अनेक वस्तु लाभ शत्रु, रोग, झगड़े, झंझट, ननसाल पक्ष इत्यादि विषयों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शुक्र है, इनका रंग सफेद है इनका स्वभाव नरम है इनकी मणी हीरा है यह उन्नति प्रदान करने में बड़ी पेचीदा तरकीबोंसे व परिश्रम से कार्य करते हैं इसकी कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियाँ यह है ७-६-१०-११-१२-१-३ और नेष्ठ राशियां ८-४-६ और सामान्य राशियां यह ५ २ हैं।

कुं०नं० १२५

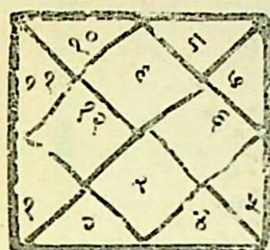


(बृ०) धन लग्न वाले व्यक्तियों को देह व सुंदरता, ख्याति, आत्मबल, सुख शान्ती माता, मकान जायदाद इत्यादि विषयों की शक्ति के प्रधान अधिकांश फलदाता ग्रह बृहस्पति हैं इनका रंग पीला है, इनका स्वभाव बड़प्पन युक्त दयालु है इनकी मणी पुखराज है, यह उन्नति प्रदान करने में, आत्मबल व शाँतीबल, हृदयबल, देहबल से कार्य करते हैं। इनकी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं ९–११–१२–१–३–५–६–७ और नेष्ट राशियां यह १०–२–४–८ हैं।

(श०) धन लग्न वाले व्यक्तियों को धन संग्रह की शक्ति, कुटुम्ब भाई-बहन, बाहुबल शक्ति इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शनी है, इनका रंग श्याम है इनकी मणी नीलम है, इनका स्वभाव कठोर है यह उन्नति प्रदान करने में बाहुबल की शक्ति से कार्य करते हैं इनकी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह ९–१०–११ –१२–६-७-३-५ हैं और सामान्य राशियाँ यह१—२–८ हैं और नेष्ट राशी यह ४ हैं इनकी विशेषता यह हैकि बुरे से बुरे समय में भी महनत शक्ति के द्वारा कुछ न कुछ धन प्राप्त कर ही लेते है।

(चं०) धन लग्न वाले व्यक्तियों को–आयु, मृत्यु, पुरातत्व, उदर का सम्बन्ध, दिनचर्या का ढंग इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह चन्द्रमा हैं इनका रंग उज्वल है इनका स्वभाव शीतल अग्नि स्वरूप है इनकी मणी मोती है, यह उन्नति प्रदान करने में मनोयोग की पुरातत्व सम्बन्धित कर्मयोग पद्धति से कार्य करते हैं और इनकी जन्म कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं ४–७-९ १०-११-१२-१–२-३–५-६ और नेष्ट राशियां यह ८ वृश्चिक है और इनकी विशेषता यह है कि यह बुरे से बुरे समय में भी मनोबल कीकर्म शक्ती से जीवन निर्वाह का साधन कुछ न कुछ कर ही लेते हैं।

कुं० नं० १२६

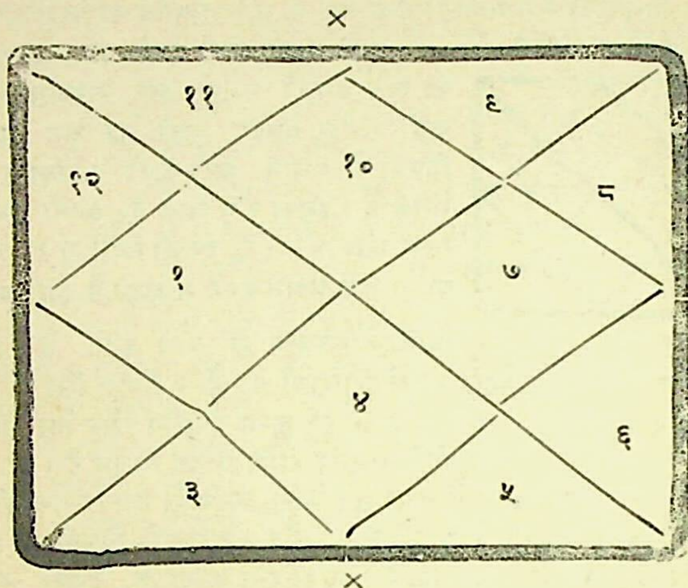


(मं०) धन लग्न वालों में जन्म लेने को खर्च बाहरी स्थानों का सम्बन्ध, विद्या बुद्धी संतान, वाणी, बुद्धी का धन इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह मंगल हैं। इनका रंग लाल है, इनका स्वभाव गरम और चंचल है, इनकी मणी मूंगा है। यह उन्नति प्रदान करने में बुद्धी के द्वारा बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से काय करते हैं। इनका कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठराशियाँ यह हैं–१ मेष ५ सिंह ६ कन्या ७ तुला ८ वृश्चिक ६ धन १० मकर ११ कुम्भ १२मीन और नेष्ट राशियां यह हैं ४ कर्क, २ वृषभ और सामान्य राशियाँ यह मिथुन है।

(रा०)धन लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को–दिमाग कीगुप्त चालें, चिन्ता अधिक लाभ की सूझ, झूंठ कष्ट,इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह राहू हैं। इनका रंग काला है, इनका स्वभाव कटु है,इनकी मणी गोमेध है। यह उन्नति प्रदान करने में गुप्त तरकीबों से कार्य करते हैं। इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं–३ मिथुन ७ तुला ११ कुम्भ २ वृषभ और नेष्ट राशियाँ यह हैं–६ धन १० मकर १२ मीन ४ कर्क और सामान्य राशियां यह सिंह १ मेष ८ वृश्चिक कन्या हैं।

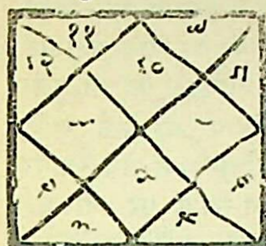
(के०) धन लग्न में जन्म लेने वालों को—गुप्त धैर्य,गुप्त चिन्ता गुप्त वीरत्व, कष्ट अधिक लाभ के लिये कठिन प्रयत्न इत्यादि योगों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह केतू हैं। इनका रंग काला है इनका स्वभाव अति कटु है,इनकी मणीलहसनियां है। यहउन्नति प्रदान करने में कष्ट साध्य कर्मयोग के द्वारा कार्य करते हैं, इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ हैं–७ तुला ६ धन ११ कुम्भ २ वृषभ और नेष्ट राशियां यह हैं–१० मकर १२ मीन ३ मिथुन ४ कर्क और सामान्य राशिया यह ५ सिंह ५ कन्या ८ वृश्चिक १ मेष हैं।

मकर लग्न फलादेश प्रारम्भ



इस मकर लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सुख और धन लाभ के सम्बन्ध में मुख्य ग्रह प्रायः मं०शु०श०बु०चं० ही हैं और अधिकांश इन्हीं ग्रहों के रंग व मणियां धनोन्नति संबंधी सभी व्यापारादि कार्यों में लाभप्रद सिद्ध होंगे, किन्तु राशि और स्थानान्तर के भेद से प्रायः सभी ग्रह अच्छे और बुरे फल के सूचक बन जाते हैं जैसा कि आपको कुण्डली नं० १२७ से लेकर कुण्डली नं० १४० तक में विचारहेतु इन सभी ग्रहों का भाग्य के हर एक विषय में भिन्न २ फलादेश महान् सरल रूप से जानने को मिलेगा ।

कु० नं० १२७

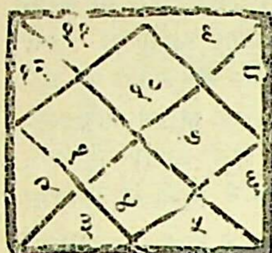


मकर लग्न वालों को पंचांग के अन्दर जिन जिन दिनों में चन्द्रमा, कर्क राशि या कन्या राशी या तुला राशि या मकर राशि या कुम्भ राशि या मीन राशि पर या मेष राशि पर जब २ आयेंगे, तब २ रोजगार की लाइन फायदेमंद रहेगी एवं वह दिन लाभ और खुशी के रहेंगे, किन्तु इसके बिपरीत जिन २ दिनों में चन्द्रमा सिंह राशि या वृश्चिक राशि या धन राशि या मिथुन राशि पर आयेंगे उन २ दिनों में लाभ की कमजोरी व मन की अशांति रहेगी, और जब २ चन्द्रमा वृषभ राशि पर आवेंगे तो मन की प्रसन्नता व लाभ की कमी पैदा करेंगे, और यदि जन्म के समय में इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार यदि चन्द्रमा जन्म कुण्डली में भी कहीं बैठा होगा तो वह प्राय सदैव ही उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करता रहेगा।

❀ धन लाभ का मासिक फलादेश ❀

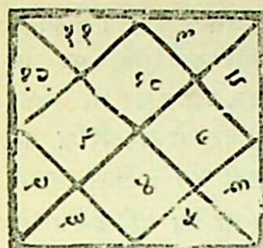
मकर लग्न वालों को पंचांग के अन्दर जिन २ मासों में शुक्र तुला राशि या वृश्चिक राशि या मकर राशि या कुम्भ राशि या मीन राशि या मेष राशि या वृषभ राशि या कर्क राशि पर जब २ आयेंगे अथवा बुध कन्या राशि या तुला राशि यावृश्चिक राशि या मकर राशि या कुम्भ राशि या मेष राशि या वृषभ राशि या कर्क राशि पर जब २ आयेंगे अथवा मंगल तुला राशि या वृश्चिक राशि मकर राशि या कुम्भ राशि या मीन राशि या मेष राशि, या वृषभ राशि याकन्या राशि पर जब २ आयेंगे तब २ उन महीनों में धन लाभ की उन्नति व आनन्द प्राप्त होगा और इसके विपरीत यदि जिन २ मासों में शुक्र धन राशि या मिथुन राशि या सिंह राशि या कन्या राशि पर जब २ आयेंगे अथवा बुध जिन २ महीनों में धन राशि या मीन राशि या मिथुन राशि या सिंह राशि पर आयेंगे या मंगल जिन महीनों में धन राशि या मिथुन राशि या कर्क राशि या सिंह राशि पर जब २ आवेंगे तब २ इन मासों में धन लाभ की कमी व अशांती के कारण पैदा होंगे।

कुं० नं० १२८



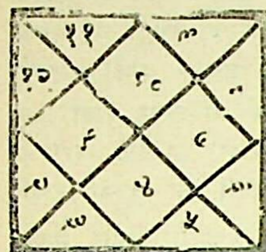
पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में शनी मकर राशि पर या कुम्भ राशी पर या मीनराशि पर या वृषभ राशि पर या कन्याराशि पर या तुला राशि पर या वृश्चिक राशि पर या कर्क राशि पर जब २ आयेंगे, अथवा वृहस्पति जब २ कभी वृश्चिक राशि पर या मीन राशि पर या कर्क राशि पर या मेष राशि या कन्या राशि पर जब २ आयेंगे, अथवा राहू जब २ कभी मिथुन राशि पर या वृश्चिक राशि पर या मीन राशि पर या वृषभ राशि पर या कन्या राशि पर आयेंगे अथवा केतू जब २ कभी धन राशि पर या वृश्चिक राशि पर या मीन राशि पर आयेंगे, तब २ इन वर्षों में धन की उन्नति होगी, किन्तु इन उन्नति वाले वर्षों में जब २ कभी धन लाभ के मासिक ग्रह भी अनुकूल होंगे, तब २ अधिक लाभ योग होता रहेगा और इसके विपरीत जिन २ वर्षों में शनी मिथुन राशि पर या सिंह राशि पर या मेष राशि पर या धन राशि पर जब २ कभी आयेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी मकर राशि में या कुम्भ राशि में या सिंह राशि में या वृषभ राशि में या तुला राशि में जिन २ वर्षों में आवेंगे अथवा राहू जिन २ वर्षों में धन राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या मेष राशि पर या कर्क राशि पर या सिंह राशि पर जब २ आयेंगे, अथवा जिन २ वर्षों में केतू मकर राशि पर या कुम्भ राशि पर या कुछ मिथुन राशि पर जब २ आयेंगे तब २ इन वर्षों में धन लाभ और सुख शांती की कमी रहेगी, किन्तु जब २ कभी धन लाभ के मासिक ग्रह भी विपरीत अवस्था में इन खोटे वर्षों में आयेंगे तब तब यह वर्ष अधिक अशांतप्रद कष्टदायक रहेंगे और इन ऊपर लिखे हुए ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर भी यदि इन्हीं ऊपरवाली राशियोंके अनुसार कोई ग्रह बैठा होगा तो वह ग्रहप्रायः अधिकांश सारे जीवन भर ऊपर लिखे फलादेशके अनुसार फल देता रहेगा।

कु० नं० १२८



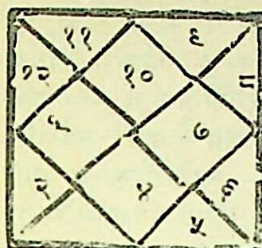
पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में शनि, मकर राशी व तुला राशी या वृश्चिक राशी या कर्क राशी या कन्या राशी या वृषभ राशी या कर्क राशी में जब २ कभी आयेंगे और शुक्र जिन २ महीनों में तुला राशी व मकर राशी व मेष राशी व कर्क राशी व वृश्चिक राशी व मीन राशी या कुम्भ राशी या वृषभ राशी पर जब २ आयेंगे और मङ्गल जब २ कभी मकर राशी या तुला राशी या वृश्चिक राशी या मेश राशी या मीन राशी या कन्या राशी या वृषभ राशी पर जब २ आयेंगे और बृहस्पति जब २ कभी मीन राशी पर या वृश्चिक राशी या कर्क राशी या मेष राशी या धन राशी पर जब २ अयेंगे और बुध जब २ कभी कन्या राशी या तुला राशी या वृश्चिक राशी या मकर राशी या कुम्भ राशी या मेष राशी या वृषभ राशी या कर्क राशी पर जब २ आयेंगे और सूर्य जिन २ महीनों में वृश्चिक राशी या मीन राशी या मेष राशी या मिथुन राशी या सिंह राशी पर जब २ आयेंगे और चन्द्रमा जब २ कभी कर्क राशी या कन्या राशी या तुला राशी या मकर राशी या मीन राशी या मेष राशी या वृषभ राशी पर जब २ आयेंगे और राहू जिन २ वर्षों में वृश्चिक राशी या मीन राशी या मिथुन राशी या वृषभ राशी या कन्या राशी पर जब २ आयेंगे और केतू जब २ कभी वृश्चिक राशी या धन राशी या मीन राशी या कन्या राशी या वृषभ राशी पर जब २ आयेंगे, अर्थात जिन २ वर्षों व मासों में यह सभी ग्रह ऊपर लिखे अनुसार राशियों में एक ही समय तक जब २ रहा करेंगे, तब २ राजयोग बुद्धीकारक प्रभावशाली समय प्राप्त होगा और इन नव ग्रहों में से जन्म के समय, जो २ कोई ग्रह यदि जन्म कुण्डली के अन्दर ऊपर लिखित राशियों के अनुसार बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही शुभ रहेंगे। और जो कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या सून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपना पूरा२फल नहीं देसकता।

कुं० नं० १३०



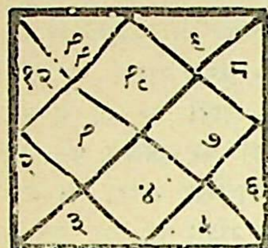
पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में शुक्र वृषभ राशि पर या कर्क राशि पर या तुला राशि पर या वृश्चिक राशि पर या मकर राशि पर या मीन राशि पर या मेष राशि पर जब २ आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी वृषभ राशि पर या मीन राशि पर या वृश्चिक राशि पर या सिंह राशि पर जब २ आयेंगे अथवा मंगल जब २ कभी वृषभ राशि पर या तुला राशि पर वृश्चिक राशि पर या कुम्भ राशि पर जब २ आयेंगे अथवा बुध जब जब कभी वृषभ राशि पर या वृश्चिक राशि पर आयेंगे, अथवा चन्द्रमा जब २ कभी वृषभ राशि पर या वृश्चिक राशि पर आयेंगे, अथवा वृहस्पति जब २ कभी कन्या राशि पर या वृश्चिक पर आयेंगे, तब २ उन वर्षों व मासों में विद्या एवं सन्तान पक्ष की उन्नति व सुख प्राप्त होता है और वाणी व विवेक की वृद्धि होती है। किन्तु इसके विपरीत यदि शुक्र, जब २ कभी मिथुन राशी में या सिंह राशि में या कन्याराशि में या धन राशि या कुम्भ राशि में जब २ आयेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी वृषभ राशि या वृश्चिक राशि में आयेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी वृषभ राशि में आयेंगे, अथवा राहू या केतू कोई भी जब २ वृषभ राशि में व वृश्चिक राशि में आयेंगे तब २ विद्या और सन्तान पक्ष को कुछ हानि व अशान्ती पैदा करते हैं और वाणी व विवेक को न्यूनता शक्ति देते है। और जन्म के समय यदि इन उपरोक्त ग्रहों में से कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार यदि बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्राय: अधिकांश सारे जीवन भर ही सन्तान और विद्या के पक्ष में अनुकूल फल देते रहेंगे और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा, तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी पूरी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है ।

कु० नं० १३१



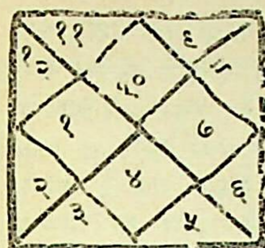
पंचाग के अन्दर जिन वर्षों में व मासों में सूर्य सिंह राशी पर या कन्या राशी पर या वृश्चिक राशी पर कुम्भ राशी पर या मीन राशी पर या कर्क राशी पर या वृषभ राशी पर या कर्क राशी पर जब २ आयेंगे अथवा मङ्गल जब २ कभी सिंह राशी पर या मकर राशी पर या वृषभ राशी पर या कुम्भ राशी पर आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी सिंह राशी पर या कुम्भ राशी पर आयें अथवा बुध जब कभी सिंह राशी पर या कुम्भ राशी पर आयेंगे, अथवा चन्द्रमा जब कभी सिंह राशी पर या कुम्भ राशी पर आवेंगे तब २ आयु एवं पुरातत्व सम्वध व पेट के सम्बन्धों में अच्छाई का शुभ योग पैदा करते हैं, और सूर्य का मकर राशी पर या मिथुन राशी पर आना भी किसी तरीकेसे इस प्रकर्ण में शुभ फल ही देता है और शनी का सिंह राशी पर आना भी इस प्रकर्ण में कुछ शुभ ही रहता है, और इसके विपरीत सूर्य जब २ कभी धन राशी पर या तुला राशी पर आते हैं, अथवा वृहस्पति जब २ कभी सिंह राशी पर आवेंगे अथवा राहु या केतू जब २ कभी कोई सिंह राशी पर या कुम्भ राशी पर आवेंगे तब २ इस प्रकर्ण में कुछ अशांती प्रद या कुछ हानिकारक योग पैदा करते हैं,और जन्म के समय में यदि इन्हीं राशियों के अनुसार इन्ही ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह प्राय: अधिकाँश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहेंगे,और जो कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होंगे या शून्य अंश होंगे तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकते हैं।

कु० नं० १३२



पंचाँग के अन्दर जिन वर्षों में व मासों में वृहस्पति कर्क राशि पर या मीन राशि पर या वृश्चिक राशि पर जब २ आयेंगे, अथवा शुक्र जब २ कभी कर्क राशि पर या मकरराशि पर आयेंगे,अथवा बुध जब २ कभी कर्कराशि पर या मकर राशि पर आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी कर्क राशि पर या वृषभ राशि पर आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी कर्कराशि में या कन्या राशि में या वृषभ राशि में या मकर राशि में या मीनराशि में या मेषराशि या वृषभ राशि में जब २ आयेंगे तब २ स्त्री व दैनिक रोजगार के पक्ष मे उन्नति, लाभ और सुख प्रदान करते हैं,किन्तु इसके विपरीत यदि चन्द्रमा जब २ कभी सिंह राशि में या वृश्चिक राशि में या धन राशि में या कुम्भ राशि में या मिथुन राशि में जब २ आयेंगे अथवा मंगल जब २ कभी कर्क राशि में मकर राशि में या धन राशि में या मेष राशि में आयेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी कर्क राशि या मकर राशि में आयेंगे, अथवा राहू या केतू कोई भी जब २ कभी कर्क राशी या मकरराशि में आयेंगे तब २ स्त्री व दैनिक रोजगार में अशांत व हानि के कारण उत्पन्न होते हैं,और वृहस्पति का ऊपर लिखे अनुसार उत्तम फल भी कुछ कमी लिये हुए होता है, और जन्म के समय में यदि इन ऊपर लिखे अनुसार राशियों सहित जो जो कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के बैठे होंगे तो वह प्रायः अधिकांश रूप में ही हमेशा ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहते हैं, और जो जो कोई भी ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश से अधिक या १ अंश से कम होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता ।

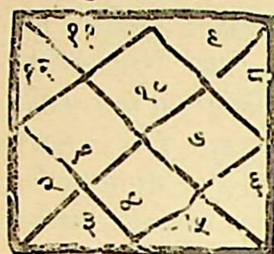
कु० नं० १६३



पंचाग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में बुध कन्या राशि पश या तुलाराशि पर या वृश्चिक राशि पर या मकर राशि पर या कुम्भराशि पर या मेषराशि पर या वृषभ राशि पर जब २आयेंगे अथवा मंगल जब २ कभी कन्याराशि पर या कुम्भराशि पर या मीनराशि पर या मिथुनराशि पर जब २ आयेंगे अथवा शनी जब कभी कन्या राशि पर या कर्क राशि पर या मीन राशि पर या धन राशि पर आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी कन्या राशि पर या मीन राशि पर जब २ आवेंगे अथवा किसी अंशों मे वृहस्पति भी कन्या राशि पर या वृषभ राशि पर या मीनराशि पर जब जब आयेंगे तब २ भाग्य, धर्म आदि दैवी शक्ति के विषय में उन्नति प्रदान करते हैं और इसके विपरीत यदि बुध जब २ कभी सिंह राशि पर या धन राशि पर या मिथुन राशि पर या मीन राशि पर आयेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी कन्या राशि पर या मीन राशि पर आयेंगे अथवा राहू या केतू जब कभी कन्या राशि पर या मीन राशि पर आयेंगे अथवा राहू या केतू जब २ कभी कन्या राशि पर या मीन राशि पर आयेंगे तब २ भाग्य धर्म भक्ति आदि के विषय में कमजोरी पैदा करते हैं, और यदि जन्म के समय में इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली में बैठा होगा, तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ऊपर लिये अनुसार, शुभ फल का दाता ही माना जाता है, और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

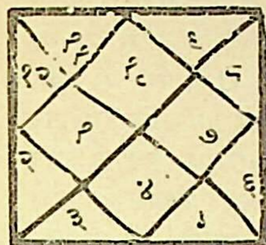
मकर लग्न वालों को, देह, आत्मबल, सुन्दरता, ख्याति, आदि का फलादेश

कु० नं० १२४



पंचांच के अन्दर जिन वर्षों में व मासों में शनी मकर राशी पर या वृश्चिक राशी पर या तुला राशी पर या मीन राशी पर या कर्क राशी परया कन्या राशी पर जबरकभी आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी मकर राशी या कर्क राशी पर आयेंगे अथवा मङ्गल जब २ कभी मकर राशी पर या तुला राशी पर या मिथुन राशी पर आयेंगे अथवा बुध जबरकभी मकर राशी पर या कर्क राशी पर आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी मकर राशी पर या कर्क राशी पर आयेंगे, तब २ देह की सुन्दरता,आत्मबल ख्याति आदि के सम्बन्ध में उन्नति प्राप्त करते हैं, और इसके विपपीत यदि शनी जब २ कभी सिंह राशी पर या धन राशी पर या मेष राशी या मिथुन राशी पर आवेंगे अथवा सूर्य जबर कभी मकर राशी पर या कर्क राशी पर आवेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी मकर राशी पर या वृषभ राशी पर या कन्या राशी पर या कर्क राशी पर आवेंगे अथवा राहू या केतू कोई भी जबर मकर राशी या कर्क राशी पर आयेंगे तब तब देह पक्ष की सुन्दरता, शांती, आत्मबल, ख्याति, आदि के विषय में हानि या कुछ कमी कष्ट का योग पैदा करते हैं, और जन्म के समय में यदि इस ऊपर लिखी राशियों के अनुसार जो २ कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्राय: अधिकांश रूप में सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल देते रहेंगे और यदि कोई भी ग्रह से अस्त होगा या शुन्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल लिखे अनुसार नहीं कर सकता है।

कुं० नं० १३५

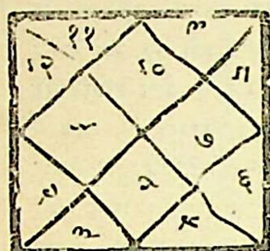


पंचाग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में बुध मिथुन राशी पर या कन्या राशी पर या तुला राशी पर या वृश्चिक राशी पर या मकर राशी पर या कुम्भ राशी पर या मेष राशी पर या कर्क राशी पर या वृषभ राशी पर जब २ आयेंगे अथवा मङ्गल जब२ कभी मिथुन राशी पर या मीन राशी पर या वृश्चिक राशी पर आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी कन्या राशी पर आयेंगे, अथवा सूर्य जब२ कभी मिथुन राशी पर या धन राशी पर अयेंगे, अथवा राहू जब २ कभी मिथुन राशी पर आयेंगे, तब २ शत्रु पक्ष में विजय प्राप्त करके, झगड़े झंझटों से निवृत पैदा करते हैं और शनी जब २ मिथुन राशी पर आते हैं,तब २ कुछ परेशानियों के अन्तर-गत मुसीबतों पर व शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते हैं, और इसके विपरीत यदि बुध जब २ कभी सिंह राशी पर या धन राशी पर या मीन राशी पर आयेंगे अथवा चंद्रमा जब २ कभी मिथुन राशी पर या धन राशी पर आयेंगे अथवा वृहस्पति जब२कभी धन राशी पर आयेंगे अथवा केतू जब २ कभी धन राशी पर आयेंगे,तब२ शत्रु पक्ष व झगड़े झंझटों, के संबंध में कुछ परेशानी करते हैं, और जन्म के समयमें यदि

इन ऊपर लिखित राशियों के अनुसार ही जो२ कोई ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्रायः अधिकाँश रूप में सदैव ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार जीवन में फल प्रदान करके रहेंगे,और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा फल प्रदान नहीं कर सकता है ।

मकर लग्न वालों को, माता पिता मकानादि सुख प्राप्ति का फलादेश

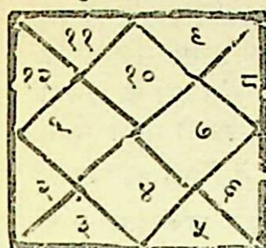
कु० नं० १३६



पंचाग में अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में मङ्गल मेष राशि पर या कन्या राशि पर या तुला राशि पर या वृश्चिक राशि पर या मकर राशि पर या मीन राशि पर था मकर राशिपर जब २ कभी आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी मेष राशि या तुला राशि पर आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी मेष राशि पर या तुला राशि पर आ येंगे अथवा बुध जब २ कभी मेष राशि पर या तुलाराशि परआयेंगे सूर्य जब२ कभी मेपराशि पर आवेंगे तब २ मकानादि, माता एवं सुख प्राप्ति के सम्बन्धों में उन्नति व सुख प्राप्त होता रहता है यदि इसके विपरीत जब २कभी मङ्गल मिथुनराशी या कर्क राशी पर या सिंह राशी पर या धन राशि पर या कुम्भ राशी पर जब २ आयेंगे अथवा शनी जब २कभी मेष राशी पर या कर्कराशी पर तुलाराशी पर या कुम्भराशी पर आयेंगे अथवा वृहस्पति जब२कभी मेष राशी पर या सिंह राशी पर या धन राशी पर या तुला राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा राहू या केतू कोई भी जब २ कभी मेष राशी पर या तुला राशी पर आयगे तब २ सुख शांती माता, मातृ-भूमि, मकानादि के सम्बन्ध में कभी या कष्ट का योग पैदा करते हैं, और जन्म के समय में यदि किन्ही ग्रहों में से कोई ग्रह यदि इन्हीं उपरोक्त राशियों के अन्तर्गत जन्म कुण्डली के अन्दर जो २ कोई ग्रह बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहेंगे, और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंशहोगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकते।

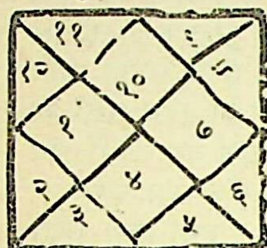
मानप्रतिष्ठ आदि का फलादेश

कुं० नं० १२७



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में शुक्र, तुला राशी पर या वृश्चिक राशी पर या मकर राशी पर या मेष राशी पर या मीन राशी पर या कर्क राशी पर या वृषभ राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा मङ्गल जब २कभी तुला राशी पर या मीन राशी पर या मेष राशी पर आयेंगे, अथवा शनी, जब २ कभी तुला राशी पर या मकर राशी पर आयेंगे, अथवा बुध जब जब कभी तुला राशी पर या मेष राशी पर आयेंगे, अथवा चन्द्रमा जब२ कभी तुला राशी पर या मेष राशी पर आयेंगे, अथवा कुछ अंशों में जब २ शनी भी सिंह राशी पर या मेष राशी पर आवेंगे, तब २ पिता, राजसमाज, मान कारबार, आदि के सम्बन्धों में उन्नति प्रदान करते हैं, और इसके विपरीत जब २ कभी शुक्र धन राशी पर या मिथुन राशी पर या सिंह राशी पर या कन्या राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा सूर्य जब २ कभी तुला राशी पर या मेष राशी पर आयेंगे अथवा बृहस्पति जब २ कभी तुला राशी पर या मिथुन राशी पर या कुम्भ 'राशी पर अवेंगे अथवा राहू या केतू दोनों में से कोई भी जब २ कभी तुला राशी पर व मेष राशी पर आयेंगे, तब२ पिता, राज समाज, करबार मान, प्रतिष्ठा, आदि सम्बन्धों में कमी या कष्ट का योग पैदा करते हैं। और जन्म के समय में यदि इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से, जो २ कोई भी उपरोक्त राशियों के अनुसार यदि जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्राय: सारे जीवन भर ही अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहते हैं, और यदि कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

कुं० नं० १३८



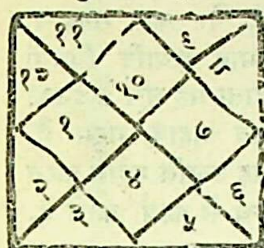
(बु) मकर लग्न वाले व्यक्तियों को भाग्य, धर्म, भक्ति दैवी शक्ति, शत्रु, रोग, झगड़े झंझट, पाप, ननसाल इत्यादि विषयों के फलदाता ग्रह बुध है इनका रंग हरा है, इनका स्वभाव कोमल और कटु है, इनकी मणी पन्ना है यह उन्नति प्रदान करने में छिपी हुई चतुराई एवं प्रकट सज्जनता की दैवी शक्ती से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं २–४–६–७–८–१०–११ और नेष्ट राशियां ३–५–६–१२ हैं।

(शु०) मकर लग्न वाले व्यक्तियों को–पिता, राज समाज, मान प्रतिष्ठा, कारवार, विद्या, संतान वाणी कला इत्यादि योगों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शुक्र है, इनका रंग सफेद है इनका स्वभाव नरम है, इनकी मणी हीरा है यह उन्नति प्रदान करने में बुद्धि बल की कर्म शक्ती से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की उत्तम राशियां यह हैं ७–८–१०–११–१२–१–२–४ और नेष्ट राशियाँ ९–३–५–६ हैं।

(मं०) मकर लग्न में जन्म लेने वाले–को–धन लाभ आवश्यक पदार्थों की प्राप्ती, माता, भूमि, सुख, मकान, जायदाद, खानदान, इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह मंगल है। इनका रंग लाल है, इनका स्वभाव गरम और गम्भीर है, इनकी मणी मूंगा है। यह उन्नति प्रदान करने में शाँती और धैर्य से कार्य करते हैं। इनकी कुंडली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं ८–१०–११–१२–१–२ ६–७ और नेष्ट राशियाँ यह है ९—३—४—५। इनकी विशेषता यह है कि यह बुरे से बुरे समय में भी महनत शक्ती के द्वारा कुछ न कुछ धन लाभ के साधन प्राप्त करते ही रहते हैं।

लाभकारी रंग मणियां तथा ग्रहों के गुण दोषादि का फलादेश

कुं०नं० १६६



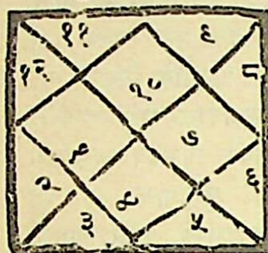
(बृ०) मकर लग्न वाले व्यक्तियों को खर्च बाहरी दूसरे स्थानों का सम्बन्ध भाई-बहन पराक्रम बाहुबल शक्ती के कार्य इत्यादि विषयों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह बृहस्पति हैं इनका रंग पीला है,इनका स्वभाव बड़प्पन युक्त दयालु है इनकी मणी पुखराज है, यह उन्नति प्रदान करने में बाहुबल और बाहरी स्थानों की संपर्क शक्ती से कार्य करते हैं। इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं ६-१२-४-३-८ और नेष्ट राशियां यह हैं १०-११-३-५-७ और सामान्य राशि यह १—२ हैं।

(श०) मकर लग्न वाले व्यक्तियों को धन संग्रह की शक्ति कौटुम्ब देहबल,आत्मबल की शक्ति इत्यादि विषयांके प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शनी है, इनका रंग श्याम है इनकी मणी नीलम है, इनका स्वभाव कठोर है यह उन्नति प्रदान करनेमें देहबल और धनबल की शक्तीसेकार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह १०-११ १२-२—४ ६ ७-८ हैं और नेष्ट राशियाँ यह ६,३,५,१ हैं।

(चं०) मकर लग्न वाले व्यक्तियों को—स्त्री, ससुराल, दैनिक रोजगार, भोग इत्यादि योगों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह चन्द्रमा हैं इनका रंग उज्वल है इनका स्वभाव शीतल अग्नि स्वरूप है इनकी मणी मोती है, यह उन्नति प्रदान करने में मनोयोग की दैनिक कर्मशक्ती के द्वारा कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह है १,२,४,६,७,१०,१२ और नेष्ट राशियाँ यह हैं ३,५,८,९ और सामान्य राशि यह ११ हैं। और इनकी विशेषता यह है कि यह बुरे से बुरे समय में भी नित्य प्रति की कर्मशक्ति से जीवन निर्वाह का साधन कुछ न कुछ कर ही लेते हैं।

 मकर लग्न वालों को—रेस आदि सभी व्यापार कार्यों के लिये लाभकारी रंग मणियां तथा ग्रहों के गुण दोषादि का फलादेश

कुं० नं० १४०

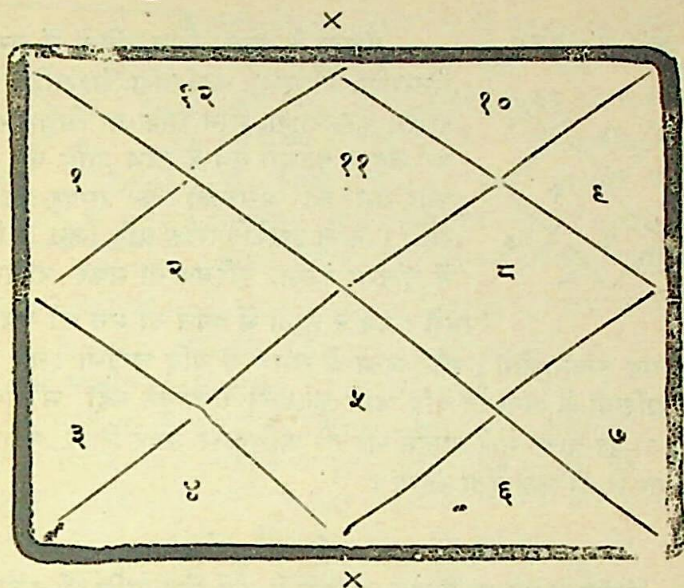


(सू०) मकर लग्न वाले व्यक्तियों को—आयु मृत्यु, पुरातत्व की शक्ती, पेट का सम्बन्ध, जोवन की दिनचर्या, प्रभाव इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह सूर्य हैं, इनका रङ्ग लाल है, इनका स्वभाव महान् गरम है, इनकी मणी माणिक है, यह उन्नति प्रदान करने में पुरातत्व शक्ती के सम्बन्ध से कार्य करते हैं, इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं–५सिंह–६ कन्या ८–वृश्चिक १२ –मीन १– मेष ४–कर्क और नेष्ट राशियां यह हैं–७ तुला–६ धन ३मिथुन और सामान्य राशियां यह हैं २ वृषभ– १० मकर ११ कुम्भ।

(रा०) मकर लग्न में जन्म लेने वालों को–दिमाग की गुप्त चालें चिन्ता अधिक लाभ की सूक्ष्म भूंठ, कष्ट इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह राहू है। इनका रंग काला है, इनका स्वभाव कटु है, इनकी मणि गोमेध है। यह उन्नति प्रदान करने मे गुप्त कर्म शक्ती से कार्य करते हैं। इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं ८ वृश्चिक–१२ मीन–३ मिथुन ६–कन्या–२ वृषभ और नेष्ट राशियां यह हैं–६. धन –१०मकर–११ कुम्भ–१ मेष–४ कर्क–५ सिंह–७ तुला।

(के०) मकर लग्न में जन्म लेने वालों को—गुप्त धैर्य चिन्ता गुप्त वीरत्व, कष्ट अधिक लाभ में लिये कठिन प्रयत्न इत्यादि योगों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह केतू हैं। इनका रंग लाल है, इनका स्वभाव अति कटु है, इनकी मणी लहसनियां है। यह उन्नति प्रदान करने में कष्टसाध्य कर्मयोग के द्वारा कार्य करते हैं, इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं८, वृश्चिक, १२ मीन, ६ धन, ६कन्या २ वृषभ और नेष्ट राशियां यह हैं १० मकर ११ कुम्भ १ मेष ४ कर्क ५ सिंह–७ तुला और सामान्य राशि यह ३ मिथुन है।

कुम्भ लग्न फलादेश प्रारम्भ



इस कुम्भ लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सुख और धन लाभ के सम्बन्ध में मुख्य ग्रह प्रायः वृ०शु० मं० सू० ही हैं और अधिकांश इन्हीं ग्रहों के रंग व मणियां धनोन्नति संबंधी सभी व्यापारादि कार्यों में लाभप्रद सिद्ध होंगे, किन्तु राशि और स्थानान्तर के भेद से प्रायः सभी ग्रह अच्छे और बुरे फल के सूचक बन जाते हैं जैसा कि आपको कुण्डली नं०१४१ से लेकर कुण्डली नं० १५४ तक में विचारहेतु इन सभी ग्रहों का भाग्य के हर एक विषय में भिन्न २ फलादेश महान् सरल रूप से जानने को मिलेगा ।

कुं० नं० १४१

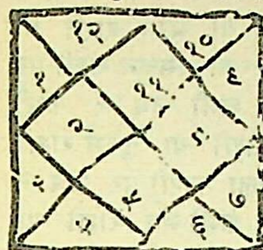


पंचांग के अन्दर जिन २दिनों में चन्द्रमा धनराशि, मेषराशि, कर्क राशि,सिंहराशि, तुला राशि, कुम्भराशि, मीन राशि या मिथुन राशि पर जब २ आयेंगे तब २ लाभ प्राप्ति का ढंग और मन की प्रसन्नता के सुन्दर कारण रहेंगे। किन्तु इसकेविपरीत यदि जिन २ दिनों में चन्द्रमा कन्या, वृश्चिक या मकर राशि पर रहेंगे। उन २ दिनों में हानि या मन की अशाँती के कारण उत्पन्न होंगे। और जन्म के समय में यदि चन्द्रमा इन्हीं उपरोक्त राशियों के अन्तर्गत यदि जन्म कुण्डली के अन्दर कहीं भी बैठा होगा तो वह प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकतर ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल देता रहेगा।

❀ धन लाभ का मासिक फलादेश ❀

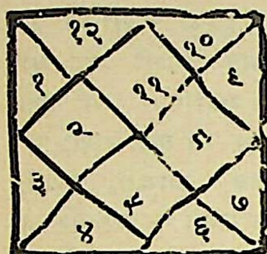
पंचांग के अन्दर जिन २ महीनों में सूर्य सिंह राशि,वृश्चिकराशि धन राशि, कुम्भ राशि, मीन राशि,मेष राशि, वृषभ राशि या मिथुन राशि पर आयेंगे अथवा जब २ शुक्र तुला राशि, वृश्चिक राशि, कुम्भ राशी, मीन राशि मेष राशि धन राशि वृषभ राशि या सिंह राशि पर जब २ आयेंगे अथवा मंगल जब २ कभी वृश्चिक राशि धन राशि कुम्भ राशि, मीन राशि, मेषरराशि, वृषभराशि, मिथुन राशि, सिंह या तुला राशि, वृश्चिक राशि,धनराशि,कुम्भराशि, मेष राशि, वृषभराशि, मिथुन राशि या सिंहराशि पर जब २ आयेंगे तब २ उन महीनों में लाभ और शाँती रहेगी। किन्तु इसके विपरीत यदि सूर्य जब २ कन्या, तुला, मकर राशि में आयेंगे अथवा मंगल जब २ कर्क या कन्याराशि में आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी मकर या मीन राशि या कर्क राशि में आयेंगे तब तब उन महीनों में अशांती के कारण उत्पन्न होंगे।

कुं० नं० १४२



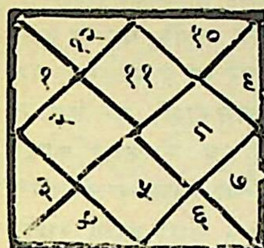
पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में वृहस्पति धन राशी पर या कुम्भ राशी पर या मीन राशी पर या मेष राशी पर या वृषभ राशी पर या मिथुन राशी पर या कर्क राशी पर या सिंह राशी पर या तुला राशी पर या वृश्चिक राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा शनीदेव जब २ कभी तुला राशी पर या वृश्चिक राशी पर या धन राशी पर या कुम्भ राशी पर या वृषभ राशी पर या मिथुनराशी पर या सिंहराशी पर जब २ आयेंगे, अथवा राहू जब २ कभी मेष राशी पर या मिथुन राशी पर या तुला राशी पर या मकर राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा केतू जब २ कभी धन राशी पर या मेषराशी पर या कर्क राशी पर या तुलाराशी पर या मकर राशी पर जब २ आयेंगे तथा-मासिक लाभ के ग्रह भी जब २ अनुकूल हों, तब २ इन वर्षों में खूब लाभ और धन की वृद्धि होती है। और इसके विपरीत जिन २ वर्षों में वृहस्पति मकर राशी, में या कन्या राशी में आयेंगे या शनि देव जिन २ वर्षों में मकर राशी में या मेष राशी में या कर्क राशी में या कन्या राशी में जब २ आयेंगे या राहू जब २ कभी मीन राशी पर या सिंह राशी पर या कन्या राशी पर या वृश्चिक राशी पर या वृषभ राशी पर या कुम्भ राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा केतू जिन २ वर्षों में मीन राशी पर या वृषभ राशी पर या कन्या राशी पर या वृश्चिक राशी पर या कुम्भ राशी पर जब २ आयेंगे, और मासिक लाभ के ग्रह भी जब २ प्रतिकूल होते हैं तब २ इन वर्षों में हानि या अशान्ती के कारण उतपन्न होते हैं और राहू का धन राशी का आना या शनी का मीन राशी पर आना सामान्य फल दायक रहता है। और यही सब ग्रहों में से जो कोई भी ग्रह इन्हीं २ राशियों के अनुसार यदि कोई जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह प्रायः सारे जीवन भर ही उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहते हैं।

कु० न० १४३



पंचाँग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में वृहस्पति वृश्चिक राशी या मीन राशी या मेष राशी या धन राशी या मिथुन राशी पर जब २ आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी वृश्चिक राशी या धन राशी या कुम्भ राशी या वृषभ राशी या तुला राशी पर जब २ आयेंगे, और राहू जब २ कभी मेष राशी या मिथुन राशी या कर्क राशी या तुला शशी या मकर राशी पर जब २ आयेंगे और केतू जब २ कभी धन राशी या मेष राशी या कर्क राशी या तुला रांशो पर आयेंगे और मंगल जब २ कभी वृश्चिक राशी या धन राशी या कुम्भ राशी या मीन राशी या मेष राशी या सिंह राशी या तुला राशी या मिथुन राशी में जब २ कभी आयेंगे, और शुक्र जब २ कभी वृश्चिक राशी या धन राशी या कुम्भ राशी या मीन राशी या मेष राशी या वृषभ राशी या मिथुन राशी या सिंह राशी या तुला राशी में जब २ आयेंगे, और सूर्य जब २ कभी सिंह राशी या वृश्चिक राशी या धन राशी कुम्भ राशी या मेष राशी या वृषभ राशी या मिथुन राशीं में जब २ आयेंगे, और जब २ कभी मिथुन राशी या सिह राशी या कन्या राशी या तुला राशी या धन राशी या कुंभ राशी या मेष राशि या वृषभ राशी पर जब २ आयेंगे, या चन्द्रमा जब २ कभी कर्क राशी या सिह तुला राशी या धन राशि या कुँभ राशी या मेष राशी या वृषम राशी पर जब २ आयेंगे अर्थात् यह सभी नव ग्रह उपरोक्त राशियों के अनुसार जब २ जौन २ सी साल में एक ही समय में, इन उपरोक्त राशियों के अन्तर्गत ही आया करेंये, तब २ ही इन सालो में इस कुंभ लग्न वालों को राजयोग प्राप्त होता रहेगा। और जन्म के समय में यदि कोई भी ग्रह उपरोक्त लिख अनुसार जन्म कुण्डली में बैठा होगा, तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही शुभ फल प्रदान करने वाला समझा जाता है। और अस्त ग्रह का फल निमूंल होता है।

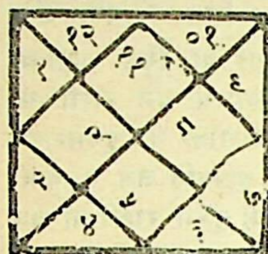
कुं० नं० १४४



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में बुध मिथुन राशी या सिंह राशी या तुला राशी या वृश्चिक राशी या धन राशी या कुम्भ राशी पर या मेष राशीपर या वृषभराशी पर जब २ आयेंगे, और वृहस्पति जब २ कभी मिथुन राशी तुलाराशी या कुम्भ राशी या धन राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा मंगल जब कभी मिथुन राशी या वृश्चिक राशी या धन राशी या मीन राशी पर जब २ आवेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी मिथुन राशी या धन राशी पर आयेंगे, अथवा शुक्र जब जब कभी मिथुन राशी या धन राशी पर आयेंगे अथवा राहू जब २ कभी मिथुन राशी पर आवेंगे, और शनी जब २ कभी मिथून राशी पर आयेंगे। तब २ विद्या और सन्तान पक्ष में उन्नति,एवं सुख प्राप्ती का साधन पैदा करते हैं। किन्तु इसके विपरीत यदि जब २ बुध कर्क राशी पर या कन्या राशी पर या मकर राशी या मीनराशी पर जब २ आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी मिथुन राशी या धन राशी पर आयेंगे, अथवा केतू जब २ कभी मिथुन पर आयगे, तब २ विद्या और सन्तान पक्ष में एवं मस्तिष्क के सम्बन्ध में परेशानी का योग तैयार करते हैं। और जन्म के समय में, यदि ऊपर लिखे अनुसार राशियों के जो कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में हमेशा ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहते हैं। और जो जो कोई भी ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या सून्य अंश होगा या २६ अंश से अधिक या १ अंश से कम होगा तो वह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा पूरा फल प्रदान नहीं कर सकता है।

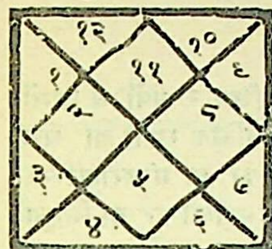
 कुम्भ लग्न वालों को--आयु, पुरातत्व एवं पेट सम्बन्धी विकारों का फलादेश

कुं० नं० १४५



पंचाग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में बुध सिंह राशी पर या कन्या राशी पर या वृश्चिक राशी या कुम्भ राशी पर या तुला राशी पर या मेष राशी पर या वृषभ राशी पर या मिथुन राशी पर या धन राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा वृहस्पति जब २ कभी कन्या राशी पर या मीन राशी या वृषभ राशी पर आयेंगे अथवा मंगल जब २ कभी कन्या राशी पर या मिथुन राशी पर या कुम्भ राशी पर या मीन राशी पर जब २ आयेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी कन्या राशी पर या मीन राशी पर आयेंगे तब २ आयु एवं पुरातत्व सम्बन्ध या पेट के सम्बन्ध में सुख व उन्नति का शुभ योग पैदा करते हैं, और इसके विपरीत यदि बुध जब२ कभी मकर राशी पर या मीन राशी पर या कर्क राशी पर आयेंगे, अथवा चन्द्रमा जब २ कभी कन्या राशी पर या मीन राशी पर अवेंगे अथवा शुक्र जब कभी कन्या राशी पर या मीन राशी पर आवेंगे अथवा राहू या केतू जब २ कभी कन्या राशी पर या मीन राशी पर आवेंगे, अथवा किसी हिस्से में कुछ शनी भी जब २ कभी कन्या रा शी पर या कर्क राशी पर आवेंगे तब-तब इन ग्रहों के असर से आयु एवं पुरातत्व व पेट के संबंधों में हानिकारक एवं अशांतीप्रद योगपै दा होता है, और जन्म के समय में यदि इन उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह उपरोक्त राशियों के अनुसार ही यदि जन्म कुण्डली के अन्दर भी बैठे होंगे तो वह प्रायः अधिकांश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहेंगे, और जो कोई भी ग्रह, सूर्य से अस्त होंगे या शून्य अंश होंगे तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकते हैं।

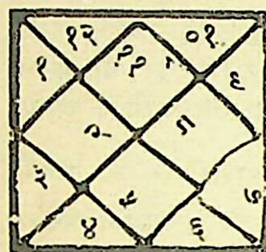
कु० नं० १४६



पंचाग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में सूर्य सिंह राशी पर या वृश्चिक राशी पर या धन राशीपर या कुम्भ राशी पर या मेश राशी पर या वृषभ राषी पर या मिथुन राशी पर जब २ आयेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी सिंह राशी पर या धन राशी पर या कुम्भ राशी पर या मेष राशीपर जब२आयेंगे अथवा मंगल जब २ कभी सिंह राशी पर या मकर राशी पर या कुम्भ राशी पर या वृषभ राशी पर जब २ आयेंगे अथवा शुक्र जब २ सिंह राशी पर या कुम्भ राशी पर आयेंगे, तब-तब स्त्री व दैनिक रोजगार के पक्ष में उन्नति व सुख की प्राप्ती होती है, और शनी जब २ कभी सिंह राशी पर या मिथुन राशी पर या वृश्चिक राशी पर या कुम्भराशी पर जब २ आयेंगे, तब-तब स्त्री व दैनिक रोजगार की लाइन में कुछ अच्छाई और बुराई को साथ लेकर फल की प्राप्ती होतीहै, और इसके विपरीत यदि सूर्य जब २ कभी कन्या राशी पर या तुला राशीपर या मकर राशीपर या मीन राशी पर या कर्क राशी पर जब २ आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी सिंह राशी, या कुम्भ राशी पर आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी सिंह राशी पर या कुम्भ राशी पर आवेंगे अथवा राहू या केतू कोई भी जब२कभी सिंहराशी पर या कुम्भ राशी पर आवेंगे, तब २ स्त्री व दैनिक रोजगार के पक्ष में अशांत प्रद वातावरण पैदा करें गे। यदि जन्म के समय में इन उपरोक्त ग्रहों में से कोई भी ग्रह यदि इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली में बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर अधिकांश रूप में उपरोक्त फला देश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहेंगे, और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्तहोगा या शून्यअंश होगा, तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

 कुम्भ लग्न वालों को, भाग्य धर्म भक्ति, ईश्वरीय बल सुयश आदि का फलादेश

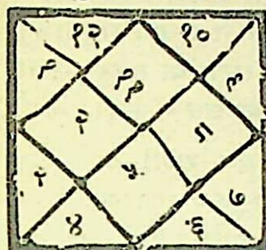
कुं० नं० २४७



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में शुक्र, तुला राशी या वृश्चिक राशी या धन राशी पर या कुम्भराशी पर या मीनराशी पर या मेष राशी पर या वृषभराशी पर या मिथुन राशी पर या सिंह राशी पर आयेंगे, अथवा वृहस्पति जब २ तुला राशी पर या कुम्भ राशी पर या मिथुन राशी पर या मेष राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा मंगल जब २ कभी तुला राशी पर या मीन राशी पर या मेषराशी पर जब २ आयेंगे अथवा शनी, जब २ कभी तुला राशी पर या सिंह राशी पर आयेंगे, तब २ भाग्य,धर्म भक्ति व ईश्वरीय बल की उन्नति का योग प्राप्त होता है, और इसके विपरीत यदि सूर्य जब २ कभी तुला राशी पर आवेंगे, अथवा चन्द्रमा जब २ कभी तुला राशी पर आयेंगे अथवा राहू या केतू जब २ कभी कोई तुला राशी पर या मेषराशी पर आयेंगे तब २ भाग्य, धर्म व ईश्वर भक्ति के सम्बन्धों में परेशानी या कमजोरी का योग पैदा करते हैं। बुध जब २ कभी तुलाराशी या मेष राशी पर आयेंगे,तब २ इस उपरोक्त विषय में सामान्य फल प्रदान करते हैं, और जन्म के समय यदि इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से जो जो कोई भी ग्रह यदि इन्ही उपरोक्त राशियों के अनुसार यदि जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह सारे जीवन भर ही अधिकाँश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहते हैं, और यदि कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रहप्राय निर्बल होने के कारण अपनी शक्ति के अनुसार पूरा पूरा फल प्रदान नहीं कर सकता है।

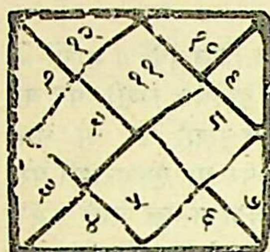
ख्याति आदि का फलादेश

कुं० नं० १४८



पंचांग के अन्दर जिन वर्षों व मासों में शनी कुंभ राशी पर या वृश्चिक राशी पर या तुला राशी पर या मिथुन राशी पर या धन राशी पर या सिंहराशी पर या वृषभराशी पर जब २ कभी आयेंगे अथवा मंगल जब२ कभी कुंभराशी पर सिंह राशी पर या वृश्चिकराशी पर आयेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी कुंभ राशी पर या मिथुन राशी पर या सिंह राशी पर या तुला राशी पर जब २ आयेंगे अथवा शुक्र जब -२ कभी कुंभ राशी पर या सिंह राशी पर आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी कन्या राशी पर आयेंगे तब २ इन ग्रह योगों में देह की सुन्दरता, आत्मबल ख्याति आदि के संबन्ध में उन्नति व सफलता प्राप्त होती है और इसके विपरीत यदि शनी जब २ कभी मीन राशी पर या मेष राशी पर या कर्क राशी पर या कन्या राशी पर या मकर राशी पर जब २ आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी कुंभ राशी पर या सिंह राशी पर आवेंगे अथवा बुध जब २ कभी कुंभ राशी पर या सिंह राशी पर आवेंगे अथवा राहू या केतू कोई भी जब २ कभी कुंभ राशी पर या सिंहराशी पर आयेंगे, तब २ इन ग्रह योगों में देह सुन्दरता, आत्मबल, ख्याति आदि के विषय में हानि या कुछ कमी का योग पैदा करते हैंऔर जन्म के समय में यदि इन उपरोक्त ग्रहों में से जो, कोई भी ग्रह यदि ऊपर लिखी राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः अधिकाँश रूप में सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल देते रहेंगे, और यदि कोई भी सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनूसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

कु० नं० १४६

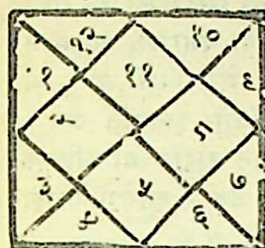


पंचांग के अन्दर जिन२ वर्षों में व मासों में वृहस्पति कर्क राशीया मीन राशीया वृश्चिक राशी पर जब २ आवेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी कर्क राशी पर आयेंगे अथवा राहूयाकेतू जब २ कभी कोई कर्क राशी या मकर राशी पर आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी कर्क राशी या धन राशी या मेष राशी या वृषभ राशी या तुला राशी या कुम्भ राशी पर जब२ आयेंगे, या चन्द्रमा मिथुन एवं सिंह राशी पर आवेंगे तब २ इन ग्रह योगों में शत्रु पक्ष एवं झगड़े झंझट आदि विषयों में,विजय और स्फूर्ती पैदा करते हैं, किन्तु इसके विपरीत यदि जब २ कभी चन्द्रमा कभी कन्या राशी या वृश्चिक राशी या मकर राशी या मीन राशी पर जब२ आयेंगे अथवा मङ्गल जब २ कभी कर्क राशी या मीन राशी पर आवेंगे अथवा बुध जब २ कभी कर्क राशी या मकर राशी में आयेंगे तब २ शत्रु पक्ष एवं झगड़े झंझट आदि विषयों में कुछ अशांती का कारण पैदा करते हैं, और शनी जब२ कभी कर्क राशी या वृषभ राशी या तुला राशी पर आवेंगे तब २ शत्रु पक्ष व झगड़े झंझटों के पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ विजय प्राप्त करते हैं, और इन्हीं ग्रहों में से यदि कोई भी जन्म के समय में, इन्हीं उपरोक्त राशियोंके अन्तर्गत यदि जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में सारे जीवन भर ही उपरोक्त फलादेश के अनुसार हीं फल प्रदान करते रहेंगे। और यदि कोई भी ग्रहसूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा, तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

नोट-कुम्भ लग्न वालों को चन्द्रमा, बुध, शनी, इन तीन ग्रहों का असर यदि अच्छा प्राप्त होने का समय आता है तब भी कुछ न कुछ फिकर या दिक्कत अवश्य करते हैं।

फलादेश

कुं० नं० १५०

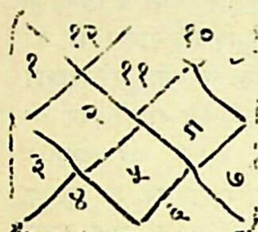


पंचांग के अन्दर जिन वर्षों व दिनों में शुक्र, तुला राशी पर या वृश्चिक राशी पर या धन राशी पर या कुम्भराशी पर या मीनराशी पर मेष या राशी पर या वृषभ राशी पर या मिथुन राशी पर या सिंह राशी पर आयेंगे अथवा मंगल जब २ तुला राशी पर या कुम्भ राशी पर या वृषभ राशी पर या वृश्चिक राशी पर जब २ आयेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी वृषभ राशी पर या वृश्चिक राशी पर जब २ कभी आयेंगे अथवा चंद्रमा जब २ कभी वृषभ राशि पर आयेंगे, अथवा सूर्य जब जब कभी वृषभ राशी पर आवेंगे, तब २ मकान, भूमि, सुख शांती के सम्बन्धों में उन्नति, एवं लाभ प्राप्ती का योग पैदा करते है, और इसके विपरीत यदि शुक्र जब २ कभी कर्क राशी पर या कन्या राशी पर या मकर राशी पर आवेंगे,अथवा राहू या केतू कोई भी जब २ कभी वृषभराशी पर आवेंगे, और शनी भी किसी हिस्से में जब २ कभी वृषभराशी पर या सिंह राशी पर या मीन राशी पर जब २ आवेंगे. तब २ माता भूमि मकान सुख प्राप्ती के सम्बन्धों में कुछ कमजोरी या कमी या अशान्ती का योग पैदा करते हैं, और जन्म के समय में यदि उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह यदि इन्हीं उपरोक्त राशियों के अनुसार जन्मकुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकाँश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहते हैं, और यदि कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

 कुम्भ लग्न वालों को, पिता, राज समाज, बड़ा कारबार,

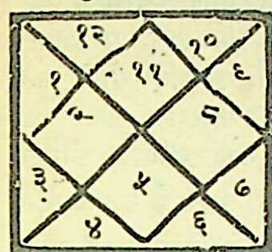
मान, प्रतिष्ठा आदि का फलादेश

कु० नं० १५१



पंचांग के अन्दर जिन २ दिनों और वर्षों में मंगल, मिथुन राशि या सिंहराशी या तुला राशी या वृश्चिक राशी या धनराशी या मीन राशी या कुंभ राशी या मेष राशी या वृषभ राशी पर जब २ आयेंगे और वृहस्पति जब २ कभी वृषभ राशी या मीन राशी या वृश्चिक राशी या कर्क राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा शुक्र जब २ कभी वृषभ राशी या वृश्चिकराशी पर जब २ आयेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी वृश्चिक राशी पर आयेंगे तब २ पिता, कारबार, राज समाज मान प्रतिष्ठा आदि विषयों में उन्नति प्रदान करते हैं, और शनी जब २ कभी वृश्चिक राशी पर आयेंगे तब २ उपरोक्त विषय में बाहरी स्थानों के सम्बन्ध में उन्नति करते हैं और पिता स्थान के संबन्ध से सामान्यतम लाम हानि का योग पैदा करते हैं, किन्तु इसके विपरीत यदि मंगल जब २ कभी कर्क राशी या कन्या राशी या मकर राशी पर आवेंगे, अथवा चन्द्रमा जब कभी वृश्चिक राशी या वृषभ राशी पर आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी वृश्चिक राशी या वृषभ राशी पर आयेंगे, अथवा राहू या केतू कोई भी जब २ कभी वृश्चिक राशी या वृषभ राशी पर आयेंगे तब २ पिता राज समाज मान इत्यादि के विषय में हानिकारक योग या अशांती कारक योग उत्पन्न करते हैं और जन्म के समय में यदि इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह इन्हीं राशियों के अनुार जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में हमेशा ही ऊपर लिखे अनुसार ही फल प्रदान करते रहते हैं और जो २ कोई भी ग्रह यदि सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती क अनुसार पूरा पूरा फल प्रदान नहीं कर सकता है ।

कुं० नं० १५२



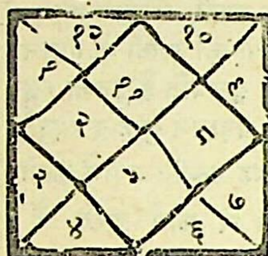
(वृ०) कुम्भ लग्न वाले व्यक्तियों को आमदनी, धन की संग्रह शक्ती. कौटुम्ब, आवश्यक लाभ, इत्यादि विषयों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह वृहस्पति हैं इनका रङ्ग पीला है, इनका स्वभाव बड़प्पन युक्त दयालु है इनकी मणी पुखाज है, यह उन्नति प्रदान करने में, हृदय बल की शक्ती से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं १–२–३–५–७ ८–९–११–१२ और नेष्ट राशियाँ यह है १०–६ और समान्य राशी यह—४ हैं।

(शु०) कुम्भ लग्न वाले व्यक्तियों को–भाग्य, धर्म, भक्ति, ईश्वरीय बल, यश, मकान, भूमि, माता, सुख, शांती इत्यादि योगों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शुक्र हैं, इनका रङ्ग सफेद है इनका स्वभाव कोमल, गुणज्ञ है इनकी मणी हीरा है यह उन्नति प्रदान करनेमें इश्वरीय बल एवं शाँती से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं १–२–३–५–७–८–९–११–१२ और नेष्ठ राशियाँ यह ४–६–१० हैं।

(मं०) कुम्भ लग्न में जन्म लेने वालों को राज समाज, पिता, कारबार, मान, प्रतिष्ठा, भाई-बहन, पराक्रम, बाहुबल, इत्यादि योगों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह मङ्गल है। इनका रंग लाल है, इनका स्वभाव गरम और गम्भीर है, इनकी मणी मूंगा है। यह उन्नति प्रदान करने में बाहुबल की शक्ती से कार्य करते हैं। इनकी कुण्डलीके अन्दर बैठनेकी श्रेष्ठ राशियां यहहैं १-२-३-५-७-८-९-११-१२ और नेष्ट राशियाँ ये ४–६–१० हैं। इनकी विशेषता यह है कि यह बुरे से बुरे समय में भी अपने हाथों की आदर्श कर्म शक्ती से मान, प्रातिष्ठ आदि की कुछ न कुछ रक्षा कर ही लेते हैं।

 कुम्भ लग्न वालों को. रेस आदि सभी व्यापार कार्यों के लिये,
लाभकारी रंग, मणियाँ तथा ग्रहों के गुण दोषादि का फलादेश

कुं० नं० १५३



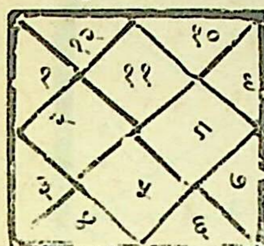
(बु०) कुम्भ लग्न वाले व्यक्तियों को विद्या, सन्तान, वाणी, आयु. मृत्यु, पुरातत्व-शक्ति, बौद्धिक, दिनचर्या, इत्यादि योगों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह बुध हैं इनका रंग हरा है, इनका स्वभाव कोमल और कटु है, इनकी मणी पन्ना है यह उन्नति प्रदान करने में गूढ़ बुद्धी के योगसे कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं १-२-३-५-७-८-९-११ और नेष्ट राशियाँ ४-१०-१२ और सामान्य राशी ६ है।

(श०) कुम्भ लग्न वाले व्यक्तियों को खर्च, देह, स्वरूप,आत्मबल बाहरी स्थानों का सम्बन्ध इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शनी है, इनका रंगनीला है. इनकी मणी नीलम है, इनका स्वभाव कठोर और कोमल है यह उन्नति प्रदान करने में आत्मबल और बाहरी स्थानों के सम्बन्ध से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह २-३-७-८-९- '१हैं और नेष्ट राशियाँ यह ६-१०-१ है, और सामान्य राशियाँ यह ४-१२ हैं।

(चं०) कु० लग्न वाले व्यक्तियों को, शत्रु, रोग, ननसाल चिंता, झगड़े झंझट, इत्यादि योगों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह चन्द्रमा हैं, इनका रंग उज्वल है इनका स्वभाव शीतल अग्नि स्वरूप है, इनकी मणी मोती है, यह उन्नति प्रदान करने में मानसिक परिश्रम की शक्ति के द्वारा कार्य करते हैं। इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं। १-२-३-४-५-७-९-११-२१-और नैष्ठ राशियां यह हैं-६--८--१०। और इनकी विशेषता यह है कि यह बुरे से बुरे समय में भी मानसिक शक्ति के योग से धैर्य धारण कर कुछ न कुछ अवश्य कर ही लेते हैं।

लाभकारी रंग मणियों तथा ग्रहों के गुण दोषादि का फलादेश

कुं० नं०१५४

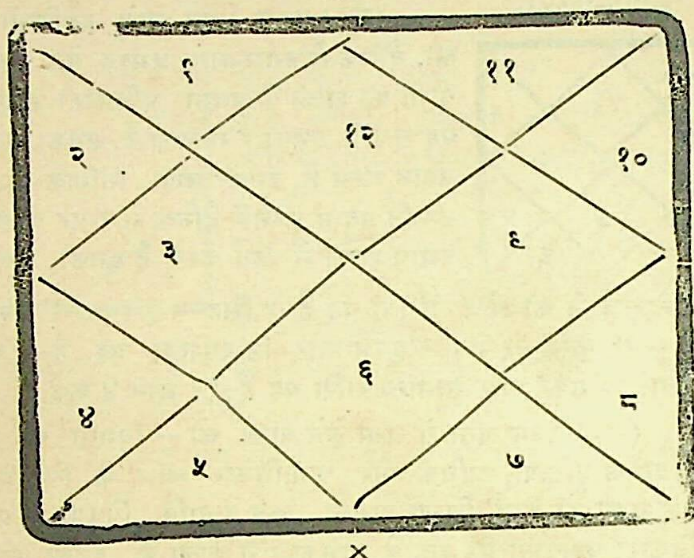


(सू०) कुम्भ लग्न वाले व्यक्तियों को स्त्री, दैनिक रोजगारभोग, प्रभाव, तेज इत्यादि योगों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह सूर्य है, इनका रंग लाल है, इनका स्वभाव महान गरम है, इनकी मणी माणिक है, यह उन्नति प्रदान करनेमें दैनिक रोजगार के अन्दर प्रभाव शक्ती से कार्य करते है इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं-५ सिंह-८ वृश्चिक-९ धन--३ मिथुन-११ कुम्भ-१ मेष-२ वृषभ और नेष्ट राशियां यह हैं-६ कन्या ७ तुला-१० मकर और सामान्य राशि यह हैं-१२ मीन ४ कर्क ।

(रा०) कुम्भ लग्न में जन्म लेने वालों को— दिमाग को गुप्त लाभदायक युक्तियां, अधिक और अनाधिकार लाभ के लिये कठिन प्रयत्न शक्ती का कार्य, चिन्ता असत्य, कष्ट इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह राहू है । इनका रंग काला है, इनका स्वभाव कटु है, इनकी मणी गोमेध है । यह उन्नति प्रदान करने में गुप्त कर्म-शक्ति से कार्य करते हैं । इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशि यह हैं-३ मिथुन-१ मेष-४ कर्क-१० मकर-७ तुला और नेष्ट राशियां यह हैं-९ धन-८ वृश्चिक १२ मीन११ कुम्भ ५ सिंह २ वृषभ ६ कन्या ।

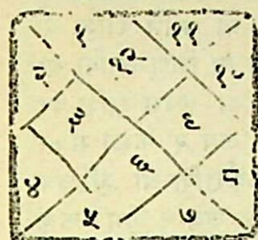
(के.) कुम्भ लग्न में जन्म लेने वालों को बाहुबल की गुप्त लाभ दायक शक्तियाँ अनाधिकार लाभ के लिये कठिन प्रयत्न, चिन्ता इत्यादि योगों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह केतू हैं । इनका रंग काला है इनका स्वभाव अति कटु है, इनकी मणी लहसनियां है । यह उन्नति प्रदान करने में कष्टसाध्य कर्मयोग के द्वारा कार्य करते हैं,इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं ९धन १मेष ४कर्क १० मकर ७तुला और नेष्ट राशियां यह हैं २वृषभ ३ मिथुन ५ सिंह ६कन्या ८ वृश्चिक ११ कुम्भ १२ मीन !

मीन लग्न फलादेश प्रारम्भ



इस मीन लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को सुख और धन लाभ के सम्बन्ध में मुख्य ग्रह प्रायः बु गु०मं०च०श० ही हैं और अधिकांश इन्हीं ग्रहों के रंग व मणियां धनोन्नति संबंधी सभी व्यापारादि कार्यों में लाभप्रद सिद्ध होंगे, किन्तु राशि और स्थानान्तर के भेद से प्रायः सभी ग्रह अच्छे और बुरे फल के सूचक बन जाते हैं जैसा कि आपको कुण्डली नं० १५५ से लेकर कुण्डली नं० १६८ तक में विचारहेतु इन सभी ग्रहों का भाग्य के हर एक विषय में भिन्न २ फलादेश महान् सरल रूप से जानने को मिलेगा ।

कु: नं० १५५

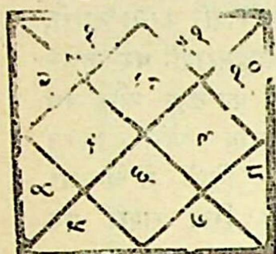


पंचांग अन्दर जिन २ दिनों में चन्द्रमा धन राशी या मेषराशी, कर्क राशी कन्या राशी, मकरराशी, मीनराशी या मिथुनराशी पर जब२ आयेंगे तब २ लाभ प्र.प्ती का ढङ्ग और मन की प्रसन्नता के सुन्दर कारण रहेंगे। किन्तु इसके विपरीत यदि जिन २ दिनों में चन्द्रमा कुम्भ, वृश्चिक, तुला या सिंह राशी पर रहेंगे। उन २ दिनों में खर्च और मन को अशान्ती के कारण उत्पन्न होंगे। और जब २ चन्द्रमा वृषभ राशी पर आयेंगे तब २ मन को प्रसन्नता, हिम्मत प्राप्त होगी।

+ धन लाभ का मासिक फलादेश +

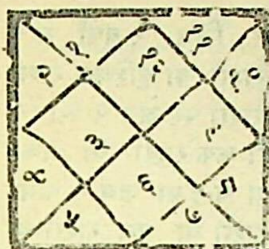
पंचाँग के अन्दर जिन २ महीनों में मंगल मेषराशि, वृश्चिकराशी धनराशी, मकरराशी, मीन राशी, कन्या राशी, वृषभ राशी या मिथुन राशी पर आवेंगे अथवा जब २ बुध मकर राशी, वृश्चिक राशी, कन्या राशी, कर्क राशी, मेषराशी, धनराशी, वृषभ राशी या मिथुन राशी पर जब २ आयेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी मकर राशी, मेष राशी, वृषभ राशी, कर्क राशी पर जिन २ महीनों में आयेंगे अथवा शुक्र जिन २ महीनों में मकरराशी, कर्कराशी, वृषभराशी, तुलाराशी पर जब२ कभी आयेंगे तब २ उन महीनों में हर एक उपरोक्त ग्रह की शक्ती से धन का लाभ एवं कारबार की सफलता प्राप्त होगी। किन्तु इसके विपरीतयदि जिन२ महीनों में मंगल कुम्भराशी, कर्कराशी पर होंगे और शुक्रकुंभ राशी, कन्या राशी, सिंह राशी पर होंगे और बुध जब २ कभी कुंभ राशी, सिंहराशी तुलाराशी पर होंगे तो सूर्य कुंभ राशी पर होंगे तब २ उन महीनों में धन की कुछ हानि रहेगी। और यदि इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से कोई भी ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर कहीं भी बैठा होगा तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकतर ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार फल देने वाला माना जाता है।

कुं, नं, १५६



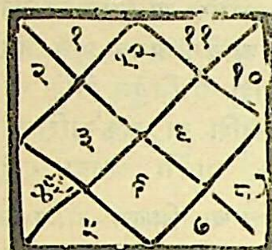
पञ्चाग के अन्दर जिन २ वर्षों व मास में बृहस्पति कर्क राशि या मीन राशि या वृश्चिक राशि या मेष राशि या मिथुनराशि या कन्या राशि या धन राशि या वृषभ राशि पर जब २ आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी मकर राशि या वृषभ राशि या कर्कराशि या वृश्चिक राशि पर आयेंगे अथवा राहू जब २ कभी कर्क राशि या मकर राशि या वृषभराशि या मिथुन राशि या सिंह राशि या वृश्चिक राशि या कुम्भराशि पर आयेंगे,अथवा केतू जब २ कभी कर्क राशि या धन राशि या वृषभ राशि या कुंभराशि या सिंह राशि या वृश्चिक राशि या मकर राशि पर जब २ आयेंगे, तब २ इन वर्षों में उन्नति व धन लाभ की शक्तियां प्राप्त होंगी, किन्तु यह ध्यान रहे कि इन लाभकारी वर्षों में, मासिक लाभ के ग्रह भी जब २ अनुकूल होंगे तब २ लाभ अधिक रहेगा, किन्तु इसके विपरीत बृहस्पति जब २ कभी मकर राशि या कुंभराशि या तुलाराशि पर जब २ आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी कुंभ राशि या धन राशि पर आयेंगे अथवा राहू जब २ कभी मेष राशि या धन राशि या तुला राशि पर आयेंगे अथवा केतू मेष राशि या मिथुन राशि या तुला राशि पर जब२ आयेंगे तब २ इन वर्षों में कुछ धन हानि का सा योग पैदा होता रहैगा और जो २ कोई ग्रह इन उपरोक्त लिखित अच्छे या बुरे दोनों प्रकार की राशियों से बाहर हैं वह ग्रह इन राशियों में जब २ आयेंगे तब २ सामान्य फल प्रदान करेंगे। और जो कोई ग्रह जन्म के समय में उपरोक्त राशियों के अन्तर्गत यदि जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहेंगे। और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या सून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार रा २ फल प्रदान नही कर सकता।

कु० नं० १५७



पञ्चाँग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में बृहस्पति धनराशि या मीनराशि या मेषराशि या मिथुनराशि या कन्याराशि या वृश्चिकराशि या कर्कराशि पर जब २ आयेंगे अथवा बुध जब २ धनराशि या मकरराशि या मिथुन राशि या कन्याराशि या वृश्चिकराशि या कर्कराशि या वृषभ राशि पर जब २ आयेंगे अथवा राहू जब २ कभी मकर राशि या मिथुन राशि या वृश्चिक राशि या कर्क राशि या सिंह राशि या कुम्भ राशि पर जब २ आयेंगे अथवा केतू जब कभी मकर राशि या कुम्भराशि या वृषभ राशि या सिंहराशि या धनराशि पर जब २ कभी आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी मकर राशि या वृषभ राशि या कर्कराशि या वृश्चिक राशि पर जब २ कभी आवेंगे अथवा मंगल जब २ कभी मेषराशि या वृषभराशि या मिथुनराशि या कन्याराशि या वृश्चिकराशि या धनराशि या मकर राशि या मीनराशि पर जब २ आयेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी सिंह राशि या मकरराशि या मेषराशि या वृषभराशि पर जब२आयेंगे,अथवा शुक्र जब २ कभी मकरराशि या मीनराशि या वृषभराशि या तुलाराशि पर जब २ आयेंगे, अथवा चन्द्रमा जब २ कभी मकरराशि या मीन राशि या मेषराशि या वृषभराशि या मिथुन राशि या कर्क राशि या कन्या राशि या धनराशि पर जब २ आयेंगे अर्थात् यह सभी ग्रह प्रायः उपरोक्त लिखे अनुसार ही, जिन २ वर्षों में उपरोक्त राशियों के अनुसार आया करेंगे, तब २ ही राजयोग कारक व उन्नतिदायक सफलता प्रदान करते हैं और जन्म के समय में भी जन्मकुण्डली के अन्दर यदि इन सब ग्रहों में से जो कोई भी ग्रह उपरोक्त लिखित राशियों के अन्तर्गत जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्राय सारे जीवन भर ही श्रेष्ठ उत्तम फल प्रदान करते रहेंगे।

कुं० नं० १५८



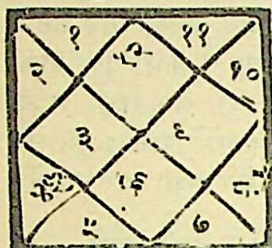
पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में वृहस्पति कर्क राशी या वृश्चिक राशी या मीनराशी या मकरराशी पर जब २ आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी कर्क राली या मकर राशी पर आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी कर्क राशी या कन्या राशी या धन राशी या मकर राशी या मीन राशी या वृषभ राशी या मिथुन राशी पर जब २ आयेंगे तब२ सन्तान पक्ष की व विद्या स्थान की उन्नति पैदा करेंगे और इसके विपरीत जब २ कभी चन्द्रमा सिंह राशी या तुलाराशी या वृश्चिक राशी या कुम्भ राशी पर जव २ आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी कर्क राशी या मकर राशी पर आवेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी कर्कराशीया मकरराशी पर आवेंगे अथवा मंगल जब२कभी कर्कराशी या मकर राशी या धन राशी या मेष राशी पर जब जब आयेंगे,अथवा राहू या केतू जब २ कभी कोई कर्क राशी या मकर राशी पर आयेंगे तब २ विद्या व सन्तान पक्ष में कभी कष्ट व अशाँती का योग पैदा करते हैं और शनी जब २ कभी कर्कराशी या वृषभ राशी या तुला राशी या मकर राशी पर आवेंगे तब २ संतान और विद्या पक्ष में कुछ लाभ और कुछ हानि का योग पैदा करते हैं। और जन्म के समय में यदि इन उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह यदि ऊपर लिखी राशियों के अनुसार जन्म कुण्डली बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूप में सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल देते रहेंगे और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता।

कुं० नं० १५६

	५ ११	
३	५८	१०
४	६	
७	६	८
	१ ७	

पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासों में शनी सिंह राशी पर या तुला राशी पर या मकर राशीं पर या मेष राशी पर जब २ आयेंगे अथवा मंगल जब २ कभी तुला राशी पर या मीनराशी पर या मेष राशी पर या कर्क राशी पर जब जब आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी तुला राशी या मेष राशी पर आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी तुला राशी पर या मेष राशी पर या वृश्चिक राशी पर धन राशी पर या मकर राशी पर या मीनराशी पर या वृषभराशी पर मिथुन राशी पर या कर्क राशी पर या मेष राशी पर आयेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी मिथुन राशी पर मेष राशी पर आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब जब कभी तुला राशी पर या मेष राशी पर आवेंगे तब २ आयु पुरातत्व एवं दिनचर्या के सम्बन्धों में सुख व उन्नति प्राप्त होगी और पेट के अन्दर आराम रहेगा और इसके विपरीत यदि सूर्य जब २ कभी कन्या राशी पर या मेषराशी पर आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी कन्याराशी पर या कुंभ राशी पर या सिंह राशी पर जब २ आयेंगे अथवा राहू या केतू दोनों में से कोई भी जब जब कभी तुला राशी पर या मेष राशी पर आयेंगे तब तब आयु, पुरातत्व व दिनचर्या के सम्बन्धों में परेशानी व कुछ दिक्कतों का योग पैदा करते हैं और जन्मके समय में यदि इन उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह उपरोक्त राशियों के अनुसार ही यदि जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः अधिकाँश रूप में ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहेंगे, और जो कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होंगे या शून्य अंश होंगे तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा पूरा फल प्रदान नहीं कर सकते हैं।

कु० नं० १६०



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों वृहस्पति कन्याराशि पर या मीनराशि पर या वृषभराशि पर आयेंगे, अथवा मंगल जब २ कभी कन्या राशि पर या मिथुन राशि पर या कुम्भ राशि पर या मीन राशि पर जब २ आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी कन्या राशि पर या वृश्चिक राशि पर या धन राशि पर या मकरराशि पर या वृषभ राशि पर या मिथुन राशि पर या कर्क राशि पर या मीन राशि पर जब २ आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी कन्या राशि पर या मीन राशि पर आवेंगे तब २ स्त्री व दैनिक रोजगार के पक्ष में उन्नति और सुख की प्राप्ती होती है। और इसके विपरीत शुक्र जब २ कभी कन्याराशि पर या मीनराशि पर आयेंगे, अथवा सूर्य जब २ कभी कन्या राशि पर या मीन राशि पर आयेंगे,अथवा राहू या केतू कोई भी जब २ कभी कन्या राशि पर या मीनराशि पर आवेंगे, अथवा बुध जब २ कभी कुम्भ राशि पर या सिंह राशि पर या तुला राशि पर या मेष राशि पर जब २ आयेंगे,तब २ स्त्री व दैनिक रोजगार के स्थान में कुछ परेशानी रहेगी, अथवा शनी जब २ कभी कन्या राशि पर या धन राशि पर मीन राशि पर या कर्क राशि पर आयेंगे,तब तब स्त्री व दैनिक रोजगार के पक्ष में कुछ हानि और कुछ लाभ प्राप्त रहेंगे। और जन्म के समय में यदि इन्हीं ग्रहों में से उपरोक्त राशियों के अनुसार यदि जन्म कुण्डली में जो २ कोई भी ग्रह बैठे होंगे, तो वह ग्रह सारे जीवन भर ही अधिकाँश रूप में उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल प्रदाक करते रहेंगे, और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकते है।

बरक्कत आदि का फलादेश

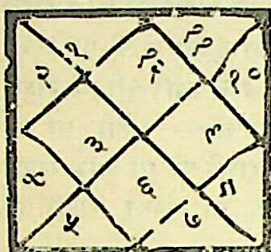
कु० नं० १६१

१	४ ११	७
१२		१०
३	६	
४	६	८
५		७

पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में व मासोंमें वृहस्तपति वृश्चिक राशी या मीन राशी पर या कर्क राशी पर या वृषभ राशी पर जब२ आवेंगे अथवा मङ्गल जब २ कभी वृश्चिक राशी पर या धन राशी पर या मकर राशी पर या मीन राशी पर या मेष राशी पर या वृषभ राशी पर या मिथुन राशी पर या कन्या राशी पर जब २ कभी आवेंगे, अथवा बुध जब २ कभी वृश्चिक राशी पर आयेंगे, या वृषभ राशी पर आवेंगे अथवा अधिकांश रूप में शनी जब २ कभी वृश्चिक राशी में आयेंगे, तब २ उन समयों में भाग्य एवं दैवी शक्ति व धर्म आदि की सफलता व उन्नति प्राप्त होतीहै और इसके विपरीत जब २ कभी चन्द्रमा वृश्चिक राशी पर या वृषभ राशी पर आयेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी वृश्चिक पर राशी या वृषभ राशी पर आवेंगे अथवा राहू या केतू कोई भी जब २ कभी वृश्चिक राशी में आयेंगे तब २ धर्म भक्ती तथा भाग्य को कुछ २ हानि व अशांती पैदा करते हैं। और जन्म के समय में यदि इन्हीं ग्रहों में से जो कोई भी, ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर यदि इन्हीं राशियों के अन्तर्गत बैठे होंगे, तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही उपरोक्त फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहते हैं। और यदि जो कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

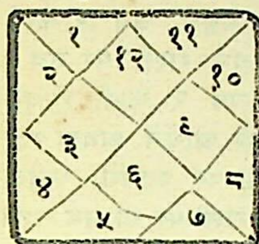
मीन लग्न वालों को, देह, आत्मबल, सुन्दरता, ख्याति आदि का फलादेश

कु० न० १६२



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में वृहस्पति मीनराशी पर या कर्कराशी पर या कन्याराशी पर या वृषभराशी पर या धनराशी पर या मिथुन राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा मंगल जब २ कभी धन राशी पर या मीन राशी पर या कन्या राशी पर जब जब आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब जब कभी मीन राशी पर या कन्याराशी पर आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी मीन राशी पर या वृषभ राशी पर या तुला राशी पर आयेंगे तब २ इन ग्रहयोगों में देह की सुन्दरता व आत्मबल तथा ख्याति आदि की उन्नति व सफलता प्राप्त होती है। और इसके विपरीत यदि जब २ कभी वृहस्पति तुला राशी पर या मकर राशी पर या कुम्भ राशी पर या सिंह राशी पर या कन्या राशी पर आयेंगे। अथवा बुध जब जब कभी मीन राशी पर या कन्या राशी पर आयेंगे। अथवा सूर्य जब जब कभी मीन राशी पर या कन्या राशी पर आयेंगे अथवा शनी जब जब कभी मीन राशी पर या मिथुन राशी पर या मिथुनराशी पर या कन्या राशी पर जब २ आयेंगे अथवा राहू या केतू कोई भी मीन राशी या कन्या राशी पर जब २ कभी आयेंगे, तब तब इन योगों में देह की सुन्दरता ख्याति व आत्मबल इत्यादि योगों की कमी पैदा हो जाती है इन्हीं उपरोक्त ग्रहों में से जो २ कोई भी ग्रह यदि जन्म के समय में इन्हीं राशियों के अन्तर्गत यदि जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः अधिकांश रूपमें ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही सारे जीवन भर ही फल प्रदान करते रहते हैं। और जो २ कोई ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

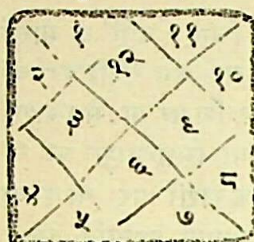
कुं, नं, १६३



पञ्चांग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में सूर्य सिंह राशी पर या धन राशी पर या मकरराशी पर या मीन राशि पर या मेष राशी पर या वृषभ राशी पर या मिथुनराशी पर या वृश्चिक राशी पर या कर्कराशी पर या कन्या राशी पर जब २आवेंगे अथवा वृहस्पति जब २ कभी सिंहराशी पर या धन राशी पर या मेष राशी पर जब २ आयेंगे अथवा मीन जब २ कभी सिंहराशी पर या वृषभराशी पर या मकर राशी पर जब २ आवेंगे अथवा शनी जब २ कभी सिंहराशि पर या वृश्चिक राशि पर आयेंगे अथवा केतू कोई भी जब २ कभी सिंह राशि पर या कुंभ राशि पर आयेंगे, तब २ शत्रु पक्ष में प्रभाव तथा झगड़े झंझटों में लाभ का योग पैदा करते हैं और इसके विपरीत जब २ कभी सूर्य तुला राशी पर या कुंभ राशी पर आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी सिंह राशी पर या कुंभ राशि पर आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी सिंहराशि पर या कुम्भराशी पर आयेंगे अथवा शुक्र जब २ कभी सिंह राशि पर या कुंभ राशी पर आयेंगे तब तब शत्रु पक्ष व झगड़े झंझटों के सम्बन्धों में कुछ परेशानी अनुभव करने का योग बनता है और जन्म के समय में यदि इन ऊपर लिखित राशियों के अनुसार ही जो २ कोई ग्रह जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्राय: अधिकांश रूप में सदैव ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार जीवन में फल प्रदान करते रहेंगे और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नही कर सकता है।

मीन लग्न वालों को—माता, भूमि, मकान, सुख शान्ती आदि का फलादेश

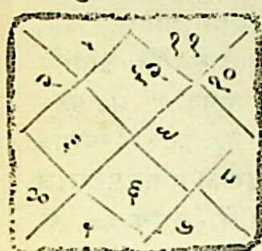
कुं० नं० १६४



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों में वह मासों में वृहस्पति, न धराशी पर या मिथुन राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा मङ्गल जब २ कभी मिथुन राशी पर या धन राशी पर जब २ आयेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी मिथुन राशी पर या धनराशी पर आयेंगे, अथवा राहू जब २ कभी मिथुन राशी पर आयेंगे, अथवा बुध जब २ कभी मिथुन राशी पर या धन राशी पर या कन्या राशी पर या मकर राशी पर या वृश्चिक राशी पर या वृषभ राशी पर या कर्क राशी पर जब २ आयेंगे तब २ उन ग्रह योगों में माता, भूमि, सुख, शांती मकानादि के संबन्धों में, उन्नति व सुख सफलता का योग पाप्त होता रहता है। और इसके विपरीत जब २ कभी सूर्य मिथुन राशी पर या धन राशी पर आयेंगे, अथवा शुक्र मिथुन राशी पर या धन राशी पर आयेंगे अथवा शनी जब २ कभी मिथुन राशी पर या कन्या राशी पर या मेष राशी पर या धन राशी पर जब २ आयेंगे, अथवा केतू जब २ कभी मिथुन राशी पर आयेंगे अथवा बुध जब २ कभी सिंह राशी पर या तुला राशी पर कुम्भ राशी पर या मीन राशी पर या मेष राशी पर जब २ आयेंगे तब २ सुख, शान्ती, माता, एवं मकानादि, भूमि, के सम्बन्धों में परेशानी का योग प्राप्त होता है, और जन्म के समय में इन्हीं उपरोक्त राशियों के अन्तर्गत इन्हीं ग्रहों में से कोई भी ग्रह कुण्डली के अन्दर कहीं भी बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही अधिकतर ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल देने वाला माना जाता है। और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

मान, प्रतिष्ठा आदि का फलादेश

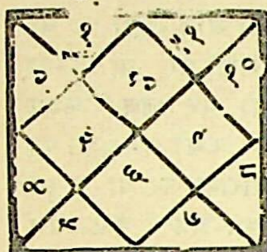
कुं० नं० १६५



पंचांग के अन्दर जिन २ वर्षों व मासों में बृहस्पति धनराशी पर या मीन राशी पर या मेष राशि पर या मिथुन राशी पर या कन्या राशी पर या वृश्चिक राशी पर जब २ कभी आयेंगे अथवा मंगल जब २ कभी धनराशी पर या वृषभराशी पर या कन्याराशी पर या मिथुन राशी पर आवेंगे अथवा बुध जब २ कभी धन राशी पर या मिथुन राशी पर आवेंगे अथवा चन्द्रमा जब २ कभी धन राशी पर या मिथुन राशी पर आयेंगे अथवा केतू जब २ कभी धनराशी पर आयेंगे तब २ इन ग्रह योगों में पिता स्थान से व राज समाज, व्यापार, मान प्रतिष्ठा आदि विषयों की ओर से सुख सफलता व उन्नति प्राप्त होती रहेगी तथा इसके विपरीत जब २ कभी बृहस्पति कुम्भराशी पर या तुला राशी पर या मकरराशी पर आवेंगे, अथवा शुक्र जब २ कभी धन राशी पर या मिथुनराशी पर आवेंगे अथवा सूर्य जब २ कभी धन राशी पर या मिथुनराशी पर आवेंगे अथवा शनी जब२ कभी धनराशी पर या मीन राशी पर या तुलाराशी पर आवेंगे अथवा राहू जब २ कभी धन राशी पर आयगे तब २ इन ग्रह योगों में पिता स्थान से व राज समाज से व व्यापार आदि मान प्रतिष्ठा संबन्धों में कुछ हानि व परेशानी के योग प्राप्त होते रहेंगे। और यदि जन्म के समय में इसी प्रकार की उपरोक्त राशियों सहित जो २ कोई भी ग्रह यदि जन्म कुण्डली के अन्दर बैठे होंगे तो वह ग्रह प्रायः सारे जीवन भर ही ऊपर लिखे फलादेश के अनुसार ही फल प्रदान करते रहेंगे। और यदि कोई भी ग्रह सूर्य से अस्त होगा या शून्य अंश होगा तो वह ग्रह निर्बल होने के कारण अपनी शक्ती के अनुसार पूरा २ फल प्रदान नहीं कर सकता है।

 मीन लग्न वालों को—रेस आदि सभी व्यापार कार्यों के लिये लाभकारी रंग मणियां तथा ग्रहों के गुण दोषादि का फलादेश

कुं० नं० १६६

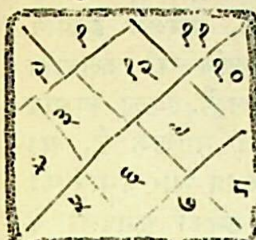


(वृ०) मीन लग्न वाले व्यक्तियों को- राज समाज, पिता, कारबार, मान प्रतिष्ठा, देह, आत्मबल, हृदयबल, सुन्दरता ख्याति इत्यादि योगों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह वृहस्पति है, इनका रंग पीला है, इनका स्वभाव स्वाभमानी और कर्मष्ठीहै इनकी मणी पुखराज हैं, यह उन्नति प्रदान करने में, हृदय बल की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं-१-३-४-६-८-६-१२ औरनेष्ट राशियां यह हैं-७- १०- ११और सामान्य राशी यह २-५ हैं।

(मं०) मीन लग्न में जन्म लेने वालों को-भाग्य धर्म, धन कुटुम्ब, भक्ति यश, बरकत इत्यादि की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह मंगल है। इनका रंग लाल है, इनका स्वभाव गरम और नरम है, इनकी मणी मूंगा है , यह उन्नति प्रदान करने में दैवी शक्ती व धन शक्ती के योग से कार्य करते हैं। इनकी कुन्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं १-२-३-६-८-६-१०-१२ और नेष्ट राशियां यह ४-७-११ है और सामान्य राशी यह ५ हैं और इनकी विशेषता यह है कि यह बुरे से बुरे समय में भी अपनी देह कर्म के द्वारा सदैव इज्जत आबरू की कुछ न कुछ कर ही लेते हैं।

(श०) मीन लग्न वाले व्यक्तियां को-धन लाभ आमदनी, खर्च बाहरी स्थानों का सम्बन्ध इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शनी है, इनका रंग श्याम है इनकी मणी नीलम है इनका स्वभाव तीक्ष्ण है यह उन्नति प्रदान करने में बाहरी योगों की शक्ती से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं-२-३ ४-८-१०-१२ और नेष्ठ राशियां यह-१ है ! और सामान्य राशियाँ यह ५-६-७-६-११ हैं।

कुं० नं० १६७



(बु०) मीन लग्न वाले व्यक्ति को माता, सुख, शान्ती, भूमि, मकानादि, स्त्री, दैनिक रोजगार, इत्यादि योगों की शक्ति के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह बुध हैं इनका रंग हरा है, इनकी मणी पन्ना है यह उन्नति प्रदान करने में शान्ती युक्त विवेक शक्ति के दैनिक कार्य-क्रम में कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ट राशियां यह हैं २–३–४–६–८–६–१० और नेष्ट राशियां ५-७–११––१२ और सामान्य राशि १ है।

(शु०) मीन लग्न वाले व्यक्तियों को भाई-बहन, पुरुषार्थ, आयु, पुरातत्व, जीवन की दिनचर्या, बाहुबल की गूढ़ शक्ती इत्यादि विषयां के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह शुक्र हैं, इनका रंग सफेद हैं इनका स्वभाव शक्ती को चतुराई से प्रयोग करने का है इनकी मणी हीरा है यह उन्नति प्रदान करने में परिश्रम की गहन नीति शक्ति से कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं १–२–३–४ ८–६–१०–१२ और नेष्ठ राशियां यह ५–६–११ हैं और सामान्य राशी यह ७ है।

(चं०) मीन लग्न वाले व्यक्तियों को बुद्धी, विद्या सन्तान, वाणी, मनोबल, इत्यादि योगों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह चन्द्रमा हैं इनका रंग उज्वल है इनका स्वभाव शीतल शान्त स्वरूप है इनकी मणी मोती है, यह उन्नति प्रदान करते में मनोबल की शक्ती के द्वारा कार्य करते हैं इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं– १–२–३–४–६–६–१०–१२ और नेष्ठ राशियां यह हैं– ५–७–८–११ और इनकी विशेषता यह है कि बुरे से बुरे समय में भी मनोबल की शक्ती से विद्या और संतान की कुछ न कुछ पूर्ति अवश्य कर ही देते हैं।

 मीनलग्न वालों को—रेस आदि सभी व्यापार कार्यों के लिये लाभकारी रंग मणियाँ तथा ग्रहों के गुण दोषादि का फलादेश

कुं० नं० १६८

	१		११
२		१२	१०
	३	९	
४		६	८
	५	७	

(सू०) मीन लग्न वाले व्यक्तियों को रोग ननसाल, झगड़े झंझट, परिश्रम इत्यादि योगों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह सूर्य हैं, इनका रंग लाल है, इनका स्वभाव महान गरम है इनकी मणी माणिक है, यह उन्नति प्रदान करने में परिश्रम और प्रभाव की योग शक्ती से कार्य करते इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं १ मेष-२ वृषभ-५ सिंह-६ कन्या ९ धन १० मकर-१२ मीन और नेष्ट राशियाँ यह हैं-७ तुला-११ कुंभ और सामान्य राशियाँ यह हैं-३ मिथुन-४ कर्क-८ वृश्चिक।

(रा०) मीन लग्न में जन्म लेने वालों को—दिमाग की गुप्त लाभदायक युक्तियाँ, अधिक और अनाधिकार लाभ प्राप्ता की सफल योजना, चिन्ता, असत्य, कष्ट इत्यादि विषयों के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह राहू है इनका रंग काला है इनका स्वभाव छिपाव रखना है, इनकी मणी गोमेध है यह उन्नति प्रदान करने में गुप्त गहरी योजनाओं से कार्य करते हैं। इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियां यह हैं २ वृषभ ३ मिथुय ५ सिंह १० मकर और नेष्ट राशियां यह है—१ मेष ६ कन्या ७ तुला ९ धन १२ मीन और सामान्य राशी यह है-४ कर्क ८ वृश्चिक ११ कुम्भ।

(के०)मीन लग्न में जन्म लेने वालों को-बाहुबलकी गुप्त कीमती शक्ती अधिक और अनाधिकार लाभ पाने के मार्ग का दृढ़ अनूसरण, चिन्ता, कष्ट, कटुता वाणी की लघुता, गुप्त साहस इत्यादि योगों की शक्ती के प्रधान अधिकारी फलदाता ग्रह केतू है। इनकी कुण्डली के अन्दर बैठने की श्रेष्ठ राशियाँ यह हैं-२ वृषभ ५ सिंह ९ धन १०मकर और नेष्ट राशियां यह है १ मेष ३ मिथुन ७ तुला १२ मीन। और सामन्य राशी यह है-४ कर्क ६ कंया-वृश्चिक-११ कुंभ।

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

हर चीजों की तेजी मन्दी जानने के लिये सभी ग्रहों दृष्टियां जानना जरूरी है, अतः सर्व ग्रहों की दृष्टियां निम्न प्रकार से समझना चाहिये ।

पंचाँग के अन्दर जो जो ग्रह जिस २ समय में, कौन २ सी राशियों में बैठे होंगे, वहां से दूसरे स्थानां पर इस प्रकार दृष्टियाँ डालते रहते हैं !

सू०—अपने स्थान, से सातवें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखता है !
चं०—अपने स्थान से सांतवें स्थान को पूर्ण दृष्टी से देखते हैं !
मं०—अपने स्थान से, चोथे, सातवें, आठवें स्थान कोपूर्ण दृष्टि से देखते हैं !
बु०—अपने स्थान से सातबें स्थान को पूर्ण दृष्टि देखते हैं !
गु०—अपने स्थान से पाँचवें, सातवें को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं !
शु०—अपने स्थान से सांतवें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं !
श०—अपने स्थान से तीसरे, सातवें, दसवें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखते हैं !

उदाहरण के लिये समझिए कि यदि पंचांग में शनी मेष राशि पर चल रहा है तो वह मिथुन, तुला, मकर इन तीन राशियों पर पूर्ण दृष्टि बराबर डालते रहेंगे ! और गुरू यदि मेष राशि पर चल रहें हैं तो सिंह, तुला, धन इन तीन राशियों पर बराबर दृष्टि डालते रहेंगे ! और मंगल यदि मेषराशि पर चल रहे हैं तो कर्क, तुला, वृश्चिक इन तीन राशियों पर बराबर दृष्टि डालते रहेंगे और यदि मेषराशि पर शुक्र बुध, सूर्य होंगे तो सबकी दृष्टि तुला पर बराबर रहेगी । इसी प्रकार जो २ ग्रह जिस २ राशी पर हो, वही से उसके अगले घरों को गिन लेने से मालुम हो जायगा कि कौन २ ग्रह किस २ स्थान को देख रहा है !

चाँदी की तेजी मन्दी प्रारम्भ

(मेष चन्द्र–१)

जिस समय चन्द्रमा मेष राशि पर २।। दिन तक रहता है, उस समय यदि चन्द्रमा के साथ शनी बैठा हो या चन्द्रमा को शनी देखता हो तो चांदीमें मन्दी आती है और यदि चन्द्रमा के साथ सूर्य या मंगल या गुरू बैठे हों या चन्द्रमा को देखते हों, तो चांदी में तेजी आती है और चन्द्रमा के साथ शुक्र या बुध बैठे हों या चद्रमा को देखते हों तो सामान्य भाव चांदी में रहता है और चंद्रमा के साथ र हू या केतू को; भा बैठे हों तो कुछ उतार चढ़ाव भाव में रहता है और यदि चन्द्रमा अकेला हो और दूसरा कोई भी ग्रह चन्द्रमा को देखता भी हो, तो च.दी में भाव करीब २ सामान्य ही रहता है।

(वृषभ चन्द्र—२)

जिम समय चन्द्रमा अकेला वृषभ राशि पर २।। दिन रहता है तब तेजो आती है और चन्द्रमा के साथ यदि सूर्य म गल गुरू शुक्र इन चारों ग्रहों में से कोई भी ग्रह होगा या उन चार ग्रहों में से कोई भी ग्रह चन्द्रमा को देखता होगा तो तेजी और भी अधिक आयेगी और चन्द्रमा के साथ यदि शनी यां बुध बैठे होंगे या चन्द्रमा को देखते होंगे तो सामान्य तेजी मन्दी और यदि चन्द्रसा के साथ राहू या केतू कोई भी होंगे तो तेजो प्रधान रहेगी किन्तु थोड़ा सा १ झटका मन्दी का हो सकता है ।

(मिथुन चन्द्र–३)

जिस समय चन्द्रमा अकेला मिथुन राशी पर २।। दिन रहता है, उस समय ढाई दिन के मध्य में मन्दी रहती है और यदि केतू या म गल या गुरू, सूर्य इनमें से किसी भी ग्रह का यदि संग हो जायगा तो तेजो आती है और यदि सूयं म गल, गुरू की चन्द्रमा पर दृष्टी भी पूर्ण होगी, तो भी तेजी आयगी किन्तु शनि बुध, शुक्र, राहू इन चारों ग्रहों मेंसे किसी का साथहोगा तो,भी मन्दीं रहेगी या शनी शुक्रकी चन्द्रमा पर दृष्टी भी होगी तो भी मन्दी रहेगी ।

(कर्क चन्द्र-४)

जिस समय चन्द्रमा अकेला कर्क राशि पर २।। दिन रहता है,तब तेजी आती है और यदि सूर्य या गुरू संग हो जाय या चन्द्रमा पर गुरू या सूर्य की दृष्टी पुर्ण होगी तो और भी अधिक तेजी आयेगी किन्तु कर्क राशि पर अन्तिम समय में कुछ मन्दी का योग बनता है। और यदि शनी मंगल राहु या केतू चन्द्रमा के साथ हो तो कुछ तेजी कुछ मंदी आती है और शनी या मँगल की चन्द्रमा पर पूर्ण दृष्टी होगी तो भी कुछ तेजी या मन्दी और चन्द्रमा के साथ यदि शुक्र बुध कोई होगा,या चंद्रमा को देखता होगा तो समान्य तेजी रहेगी।

(सिंह चन्द्र—५)

जिस समय चन्द्रमा अकेला सिंह राशि पर २।। दिन रहता है उस समय तेजी आती है और यदि चन्द्रमा के साथ मंगल या गुरू या सूर्य हों या यह तीनों ग्रहों में से कोई भी चन्द्रमा को पूर्ण दृष्टी से देख रहे हों तो और भी अधिक तेजी आजायगी किंतु यदि शनी राहू केतू इनकी किसी का साथ होगा या शनि की चन्द्रमा पर पूर्ण दृष्टी होगी तो तेजी होने में रुकावट पड़ जायगी किन्तु यदि बुध या शुक्र चन्द्रमा के साथ हों या चन्द्रमा को देख रहे हों,तो सामान्य तेजी रहेगी।

(कन्या चन्द्र-६)

जिस समय चन्द्रमा अकेला कन्या राशि पर २।। दिन रहता है उस समय मन्दी आती है और यदि गुरू मंगल सूर्य,बुध,इन चार ग्रहों में से किसी की चंद्रमा पर दृष्टि होय या इनमें से किसी ग्रह का साथ हो तो तेजी भी आ जाती है और यदि शुक्र या इनमें से किसी की भी दृष्टि चंद्रमा पर पूर्ण हो तो अधिक मंदी आती है।

(तुला चन्द्र—७)

जिस समय अकेला चन्द्र तुला राशि पर २॥ दिन रहता है,तब तेजी आती है किन्तु यदि चन्द्रमा के साथ में शनी गुरू, मंगल, शुक्र, इन चारों में से कोई ग्रह होगा या इनमें से किसी की दृष्टि चन्द्रमा पर होगी तो तेजी की प्रधानता ही रहेगी और यदि चन्द्रमा के साथ सूर्य बुध, राहू, केतू इन चार ग्रहों में से कोई होगा या सूर्य या बुध की दृष्टि होगी तो मन्दी आयगी किन्तु इस जगह सूर्य का साथ होना या सूर्य दृष्टि होना मन्दी का खास कारण बनता है।

(वृश्चिक चन्द्र—८)

जिस समय अकेला चन्द्र वृश्चिक राशि पर २॥ दिन रहता है,तब मन्दी आती है किन्तु दो दिन के बाद तेजी शुरू हो जाते हैं और शनी या राहू या केतू या बुध इनसे कोई भी चन्द्रमा के साथ हों या चन्द्रमा पर शनी की दृष्टि हो तो अधिक मन्दी आती है। और यदि चन्द्रमा के साथ गुरू या मङ्गल या सूर्य या शुक्र कोई भी इनमें से होगा या गुरू या मंगल सूर्य इन तीनों में से किसी भी ग्रह की पूर्ण दृष्टि चन्द्रमा पर होगी तो तेजी भी आवेगी और थोड़ी मन्दी आयेगी।

(धन चन्द्र-६)

जिस समय अकेला चन्द्र धन राशि पर २॥ दिन रहता हैं, तब तेजी आती है और यदि चन्द्रमा के राहू, गुरू, मंगल, सूर्य, शुक्र पर इनमें से कोई भी होगा या गु० मं० सू० इनमें से किसी का भी चंद्रमा पर पूर्णदृष्टी होगी तो और भी अधिक तेजी आवेगी और यदि चंद्रमा के साथ केतू, शनी, बुध इनमें से किसी का भी साथ होगा या चन्द्रमा पर शनी या बुध की दृष्टी होगी, तो तेजी में कुछ रुकावट पड़ती रहेगी किन्तु फिर भी तेजी की प्रधानता रहेंगी।

(मकर चन्द्र—१०)

जिस समय अकेला चन्द्र मकर राशि पर २॥ दिन रहता है, तब मन्दी की प्रधानता रहती है ! और जिस दिन चन्द्रमा के साथ सूर्य मंगल गुरू में से कोई भी होंगे या इनमें से कोई चन्द्रमा को देखते होंगे तो कुछ तेजी भी आ जायगी और यदि चन्द्रमा के साथ शुक्र, बुध बैठे होंगे या देखते होंगे तो कुछ मन्दी के योगों में सामान्यतया रुकावटें पड़ेंगी और यदि चन्द्रमा के साथ राहू या केतू शनी इनमें कोई होगा तो अधिक मन्दी आयेगी और यदि शनी की चन्द्रमा पर पूर्ण दृष्टि होगी तो भी अधिक मन्दी का सा योग बनता है ।

(कुम्भ चन्द्र–११)

जिस समय कुम्भ राशि पर अकेला चन्द्रमा २॥ दिन ठहरता है तब प्राय: तेजी आती है और कभी २ थोड़ी सी मन्दी भी आ जाया करती है ; और यदि चन्द्रमा के साथ सूर्य, मंगल, गुरू शुक्र इन चार ग्रहों में से कोई देखता हो तो तेजी का योग ही प्रधान रहता है और यदि चन्द्रमा के साथ शनी, राहू, केतू इनमें से कोई भी बैठा हो या चन्द्रमा पर या शनी की पूर्ण दृष्टी होय तो कुछ मन्दी आती है और कुछ तेजी भी आती है !

(मीन चन्द्र–१२)

जिस समय मीन राशि पर चन्द्रमा २॥ दिन रहता है उस समय तेजी और मन्दी के दोनों योग बनते हैं और यदि चन्द्रमा के साथ सूर्य गुरू, मंगल, शुक्र इन चारों में से कोई होगा या इन चारों में से किसी की भी चन्द्रमा पर पूर्ण दृष्टी होगी तो तेजी का योग अच्छा विशेष रूप से बनता है और यदि चन्द्रमा के साथ शनी राहू केतू , बुध इनमें से कोई भी होगा या चन्द्रमा पर शनी या बुध की दृष्टी पूर्ण होगी तो मन्दी का योग बनता है । और अमावस के पहले दिन व दूसरे दिन अक्सर चांदी में कुछ मन्दी आती है ।

इक तरफा चांदी का विशेष योग

(मीन शुक्र-१२)

जिस समय मीन राशि पर अकेला शुक्र पौन महीने ठहरता है उस समय चांदी पर इक तरफा तेजी आती है अतः व्यापारियों को चाहिये कि मीन पर शुक्र के प्रवेश करते ही चाँदी की खरीद करके बैठ जाना चाहिये और पौन महीने के अंदर जब २ कभी मंदी का रैक्शन आवे, तब२ चांदी की खरीद करते रहना चाहिये और २०दिन के करीब हो जाने पर माल को फौरन काट देना चाहिये। किन्तु जबतक खासतौर से मंदी का रुख न बने तब तक सौदा उतने टाइम तक खड़ा रखकर फिर अन्त से फौरन नफा खा लेनी चाहिये और बीच २ में चन्द्रमा के हिसाब से भी देखभाल करते रहना चाहिये।

(कर्क शुक्र-४)

जिस समय कर्क राशि पर गुरू प्रवेश करते हैं उस समय उसी दिन से चांदी को तेजी का योग बनना शुरू हो जाता है, अतः व्यापारियों को उसी दिन से खरीद शुरू कर लेनी चाहिये तथा आगे चन्द्रमा के हिसाब का ध्यान भी साथ रखते रहकर, प्रमुख ध्यान तेजी का ही रखना चाहिये और यदि जिस समय गुरू कर्क पर आवें और उसी टाइम में यदि शनी देव कर्क, तुला, मकर, वृष, इन चार राशियों पर कहीं भी हुए,या कर्क में राहू या केतू हुए, या कर्क पर मंगल की पूर्ण दृष्टी हुई तो जितनी तेजी गुरु के द्वारा खास तौर से जोरदार आनी चाहिये उतनी नहीं आ सकेगी किन्तु रोजाना की तेजी मंदी का ख्याल चंद्रमा के द्वारा बराबर देखते रहना चाहिये।

(गुरु–८–१२–१०)

जिस समय गुरू, वृश्चिक या मीन या मकर राशि पर आकर ठहरते हैं उस समय भी चांदी में इक तरफा तेजी चलती है किन्तु कर्क राशि पर यदि उस समय जब तक, मंगल, शनि, राहू, केतू इनमें से कोई रहेगा, जब तक तेजी का मुख्य रूप न बन सकेगा, या कर्क पर मंगल, शनि की पूर्ण दृष्टि भी होगी तो भी तेजो में रुकावट पड़ती रहेगी और उपरोक्त गुरु की स्थिति के समय, यदि उस समय कहीं सूर्य मकर या कर्क के होंगे तो फिर तेजी खब खुलकर इकतरफा चलेगी। किन्तु रोजाना के चन्द्रमा का हिसाब जरूर ध्यान में रखना चाहिये।

(सूर्य—४–१०)

जिस समय सूर्य, कर्क या मकर राशि पर होते हैं तब तेजी आती है और यदि इस मौके पर कहीं गुरु भी कर्क के हों तब तो फिर इकतरफा की बड़ी मजबूत तेजीं आती है किन्तु कर्क पर शनि, मंगल की दृष्टि हुई या कर्क पर शनि, मंगल, राहू, केतू इनमें से कोई भी बैठा हुआ होगा तो भरपूर तेजी नहीं आ सकेगी, किन्तु रोजाना का चन्द्रमा की चाल से तेजी मन्दी का ध्यान बराबर चाहिये।

... ...

इकतरफा चांदी का योग

(मंगल ४–६–१०–१)

जिस समय कर्क राशि पर मंगल आते हैं या कर्क राशि पर मंगल की पूर्ण दृष्टि होती है तब मन्दी आती है, किन्तु कर्क राशि पर गुरु या सूर्य बैठे न हों और न कर्क पर गुरू या सूर्य की दृष्टि होय नहीं तो मंदी का योग साधारण सा ही प्रतीत हो सकेगा, किन्तु राज मिति की तेजो मंदी का योग चन्द्रमा के द्वरा बराबर देखते रहना चाहिये। जबकि मंगल धन, मकर, मेष पर आते हैं तब तर्क पर पूर्ण साथ दृष्टि मंगल की होनी चहिये।

(राहू–केतू–४)

जिस समय राहू या केतू दोनों में से कोई भी कर्क राशि पर आकर १॥ साल ठहरते हैं उस समय मन्दी का योग प्रधान रूप से चलता है किन्तु कर्क राशि पर गुरू यासूर्य की दृष्टी नहीं होनी चाहिये और कर्क पर गुरू या सूर्य को स्थिति होनी चाहिये अन्यथा मन्दी का प्रधान रूप से योग नहीं बन सकेगा किन्तु फिर भी चन्द्रमा की चाल से रोजाना की तेजी मन्दी का बराबर ध्यान रखना चाहिये।

(शनी–४–१०–२)

यदि जिस समय कर्क राशी पर शनी या तुला, मकर, वृष, इन तीन राशियां पर कहीं बैठे हों, तो मंदी का प्रधान रूप चलता है किन्तु कर्क राशि पर गुरू या सूर्य बैठे न हों और न इनकी कर्क राशि पर पूर्ण दृष्टी ही होनी चाहिये, अथवा मन्दी का योग खुलकर नहीं आ सकेगा, फिर भी रोजाना की तेजी मन्दी का चँद्रमा के द्वारा विचार जरूर करते रहना चाहिये।

जिस समय कभी कोई तिथि टूटती है, तब उसके आस पास २ या ३ दिन के अन्दर मन्दी आती है यहाँ पर दो बातों का ध्यान रखना जरूरी है कि एक तो पंचाँगों में मतभेद होता है कि किसी में कभी और किसी में कभी तिथि टूटती है किन्तु फिर भी वहां उस दो तीन दिन के अन्दर जन्द्रमा का ध्यान रखना जरूरी है कि चन्द्रमा मंदी का आता है तभी खासतौर से मन्दी सोचनी चाहिये।

जिस समय कर्क राशी पर शनी, मङ्गल-राहू-केतू इनमें से कोई भी एक या दो या तीन ग्रह बैठे हों और बाकी के शनी या मङ्गल दोनों में से किसी की कर्क पर पूर्ण दृष्टि भी पड़ रही हो और दूसरी तरफ कर्क राशी पर गुरू या सूर्य न बैठे हों और न गुरू यासूर्य की कर्क राशी पर पूर्ण दृष्टी ही पड़ रही तो तब मन्दीका विशेष योग इक तरफा का चलता है, और बीच २ में चन्द्रमा के योग से सब कुछ तेजी मन्दी अलग और बनती रहती है।

चांदी के घोर तेजी का इक तरफा का योग

जिस समय वृहस्पति कर्क राशी पर हों और अकेला शुक्र मीन राशी पर हो या सूर्य मकर राशी पर हो या जिस समय मीन पर अकेले शुक्र हों उस समय कर्क सूर्य या गुरू की पूर्ण दृष्टी हो और शनी, मङ्गल, राहू, केतू इनमें से कोई भी कर्क पर बैठे न हों और शनी,मंगल में से किसी का भी कर्क पर पूर्ण दृष्टी भी न हो और चन्द्रमा वृष,कर्क सिंह, धन, मीन, इन २ राशियों पर कहीं भी हो, तो चांदी में भरपूर तेजी उस वक्त आती है और जिस समय कोई तिथी बढ़ती है, तो उस समय भी तेजी स्वतः आती है।

सोने की तेजी का प्रमुख योग

जिस समय सूर्य मेष राशी पर १ माह ठहरते हैं उस समय सोने पर अवश्य तेजी आती है अतः व्यापारियों को चाहिये कि सूर्य के मेष पर आते ही सोना खरीद करलें, और सूर्य जब मेष पर से वृषभ पर जाने वाला हो उसने करीबन १ सप्ताह पहिलेही सोना बेच देना चाहिये और जिस समय सूर्य सिंह राशी पर १ माह ठहरते रहते हैं उस समय सोने पर तेजी आती है किन्तु सूर्य के साथ यदि कभी राहू या केतू या शनी का साथ हो जायगा तो पूर्ण रूपेण तेजी नहीं आ सकेगी और यदि सूर्य पर शनी की पूर्ण दृष्टी भी होगी तो भी तेजी भरपूर नहीं आ सकती और सिंह राशी पर वृहस्पति के आने से भी सोने पर प्रायः तेजी

का ही ढङ्ग बना रहता है तथा जिस समय सूर्य मेष पर रहते हैं उस समय यदि सूर्य के साथ मङ्गल हों या सूर्य पर मङ्गल की दृष्टी होय तो तेजी और भी अधिक आती है। और यदि सूर्य वृश्चिक या धन राशी पर भी आते हैं, और उस समय मङ्गल या गुरू का साथ हो जाय या इनकी दृष्टी सूर्य पर आजाय तो भी सोने पर तेजी का कुछ योग बनता हैं ।

सोने की मन्दी का प्रमुख योग

जिस समय सूर्य तुला राशी पर १ माह ठहरते हैं उस समय सोने पर अवश्य मन्दी आती है किन्तु यदि शनी की दृष्टी सूर्य पर रही या शनी और सूर्य का तुला पर साथ रहा तोमन्दी खासतौर से नहीं आ सकती है किन्तु तुला पर यदि सूर्य के साथ केवल राहू या केतू काही साथ रहेगा तो और भी अधिक मन्दी आ सकती हैं। इसी प्रकार यदि सूर्य जबमकर राशी पर १ माह ठहरतेहैं तो सोने पर तबभी मन्दी आती है किन्तु उस समय यदि मकर पर गुरू की दृष्टी पड़ रही होगी या उस समय मकर पर राहू या केतू या गुरू या शनि का संग हो जाय तो और भी अधिक मन्दी आने का योग बन जाता है किन्तु यदि मकर पर सूर्य के साथ मंगल हुआ या मंगल की पूर्ण दृष्टि हुई तो फिर सोने की मन्दी को रोक देंगे अर्थात् उतनी मन्दी नहीं आसकती हैजितनी आनी चाहिये तो असाधारण मन्दी आकर रह जायगी जिस समय सूर्य वृक राशी परहों तब भी मन्दी आतीहै और यदि उस समय सूर्यपर शनी या मंगल की दृष्टी हो या संग होजाय या सूर्य के साथ राहू या केतू कोई भी आजाय, तो इन सब कारणों से भी मन्दी का योग अच्छा बनता है।

जिस २ वर्षों से वृहस्पति धन राशी पर आते हैं तब २ गुड़ में विशेष तेजी आती है और जब २ वृहस्पति मेष राशी पर व सिंह राशी पर आते हैं तब२ भी गुड़ में तेजी आती है और सूर्य जब२ धनराशी पर आते हैं तब२ भी गुड़ में तेजी आती है और मङ्गल भी जब२ धन राशी पर या वृश्चिक राशी पर या मेष राशि पर जब२ आयेंगे तब२गुड़ पर तेजी आती है और सूर्य तथा वृहस्पति दोनों जिस वक्त एकही समय में अर्थात् वृहस्पति सिंह राशी में हो और सूर्य धन राशी पर हों तो उस वक्त बहुत जल्दी २ गुड़ का भाव तेजी की तरफ बढ़ता चला जाता है अथवा वृहस्पति और मङ्गल जब २ कभी एक दूसरे को देखेंगे तब २ गुड़ पर तेजी आवेगी अथवा केतू जिस समय धनराशी पर हो और वृहस्पति की उस पर दृष्टी या सङ्ग हो तो गुड़ में खुब तेजी आवेगी।

गुड़ की मन्दी

जिस२ वर्षों में वृहस्पति मकर राशी में आते हैं तब२ गुड़ की मन्दी आती है और राहू जिन२ वर्षों से धन राशी पर आते हैं तब२ गुड़ की मन्दी आती है अथवा वृहस्पति के ऊपर शनीचर की दृष्टी या शनीचर का सङ्ग जब २ आता है तब २ गुड की मन्दी आती है और अथवा वृहस्पति के साथ राहू या केतू जिन जिन वर्षों में आते हैं तब २ गुड़ की मन्दी आती है और जिन२ वर्षों में राहु धनराशी पर हो और उसी वर्ष में वृहस्पति मकर राशी पर हों तो गुड़ में बहुत मन्दी आने का योग बनता है

जिन २ वर्षों व मासों में सूर्य वृश्चिक राशी पर या धन राशि पर आते हैं या मेष राशि पर आते हैं या सिंह राशि पर आते हैं तब२ गेहूं में तेजी आती है और मङ्गल भी जिन २ मासों में वृश्चिक राशि पर आते हैं तब २ भी गेहूँ में तेजी आती है और. जिन २ समयों में मंगल कर्क राशी पर या कन्या राशि पर या मिथुन राशि पर आते हैं तब २ गेहूँ की मन्दी रहती है अथवा सूर्य जब २ तुला राशि पर या मकर राशि पर आते हैं तब २ गेहूं में मन्दी आती है अथवा मंगल पर शनी की दृष्टी होय या सूर्य पर शनी की दृष्टी होय तब२ उन समयों में गेहूँ की मन्दी आती है अथवा मंगल शनी को दोंनों की आपस में दृष्टी पड़ती होय तो मन्दी आती है और सूर्य मङ्गल की आपस में एक दूसरे पर जब दृष्टी आवे तो गेहूँ में तेजी का योग बनता है।

ज्योतिष द्वारा भाग्योदय संबन्धी तीन चेतावनियाँ

१--अनाधिकार मैथुन करने से, दैनिक रोजगार व स्त्री स्थान में कष्ट और अवनति प्राप्त होती और संयमति भोग की प्राप्तीसे उन्नति प्राप्त होती है।

२--अधर्म और पापाचरण से उन्नति व पदार्थ की ओर दौड़ने वाले व्यक्तियों को, किसी न किसी खास विषय पर अपने भाग्य की कमजोरी की ओर से मजबूत कोई खास दुःख सहन करना पड़ता है और धर्म के सहारे चलने वाले व्यक्तियों को किसी न किसी खास विषय पर, अलौकिक उन्नति के द्वारा भाग्य पर, महान आनन्द प्राप्त होता है।

३--अधिक झूंठ बोलने से मनुष्य को अपने सन्तान पक्ष में किसी न किसी विषय पर पीड़ित होकर कष्ट भोगना पड़ता है और सत्य बोलने से, वाक सिद्धी, सन्तान सुख, तेज, तत्व, ज्ञान, दूरदर्शता, आत्मबल, निर्भरता प्राप्त होती है।

प्रत्येक अरिष्टदायक ग्रहों से बचाव पाने के १२ सरल साधन



१—नित्य प्रति कुत्तों को रोटी खिलानी चाहिये।

२—नित्य प्रति कछुए मछलियों को कुछ आटे की गोली डालनीं चाहिये

३—नित्य प्रति चील कउओं को खाने पीने की वस्तुओं में से कुछ हिस्सा जरूर डालना चाहिये।

४—नित्य प्रति भोजन से पूर्व एक रोटी पर गुड़ रखकर गाय को खिलानी चाहिये।

५—नित्य प्रति सुबह स्नान करके शंकर पर जल चढ़ाकर प्रेम से नमस्कार दंडवत करनी चाहिये।

६—नित्यप्रति स्नान के बाद सुबह सूर्यनारायण को जल व लाल पुष्प चढ़ाकर बारबार हाथ जोड़कर नमस्कार करनी चाहिये।

७—हर एक शनिवार को पीपल के वृक्ष पर जल चढ़ाकर परिक्रमा करके और सूर्य, शंकर, पीपल इन तीनों को जल चढ़ाने के बाद जल को नेत्रों से लगाना चाहिये।

८—नित्य प्रति सुबह सूर्य के सम्मुख बैठकर एकान्त ध्यान से कम से कम १ घन्टा भगवत भजन करना चाहिंये।

९—नित्य प्रति यथाशक्ति कुछ न कुछ गरीबों को दान देना चाहिये।

१०—प्रत्येक प्राणी मात्र पर यथाशक्ति दया और स्नेह का भाव रखना चाहिये।

११—प्रत्यक अनाधिकार वस्तुओं को कभी ग्रहण न करना चाहिये!

१२—सदैव ईश्वर की महान सामर्थ्य पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिये। और अधर्म से सदैव डरना और बचना चाहिये।

—···—

❀ लेखक के विचार ❀

प्रिय पाठक—मुझे कुछ चन्द बातें, आपसे निवेदन करनी हैं, जो कि नितान्त सत्य हैं।

१—मैंने अब तक फलित ज्योतिष के जितने ग्रन्थ लिखे हैं, उन सबके अन्दर जो कुछ भी फलादेश लिखा है वह पूर्ण स्वतन्त्र हैं इन फलदेशों के अन्दर मैंने किसी भी दूसरी पुस्तकों की, किंचित मात्र भी छाया नहीं ली है।

२—मेरे समस्त लेख, पूर्ण अनुभव सिद्ध हैं, जो कि हजारों जन्म कुण्डलियों पर, सदैव साबित होते रहे हैं।

३—मुझे फलित ज्योतिष पर, जो कुछ भी गहरे और नवीन अकाट्य अनुभव हुए हैं, उनका मूल कारण, ईश्वर की देन है, शास्त्रीय अध्ययन नहीं है!

४—मुझे फलित पुस्तकों पर, एवं सर्व साधारण को बताये हुये जन्म कुण्डलियों के फलादेशों पर अनेकों उत्तम हृदयग्राही प्रशंसा पत्र भारी तादाद में प्राप्त हो चुके हैं, उन सबका हमारी पुस्तकों में, अतिषयोक्ति समझकर, उल्लेख करना उचित नहीं समझा है।

५—मैंने केवल धनोपार्जन के दृष्टिकोण से ही यह सब पुस्तकें नहीं लिखी हैं बल्कि अपने उन नवीन अनुभवों को, जोकि दूसरी पुस्तक में सर्वथा अप्राप्त हैं, और सदैव सत्य सिद्ध हुए हैं। उनको सर्व साधारण के हित की दृष्टि से पुस्तकों में लिख कर जनता के समक्ष पहुँचाना बहुत आवश्यक समझा है।

६—फलित ज्योतिष पर अबतक जितनी पुस्तकें लिखी गई है उन सबों इस बात का ध्यान सबसे अधिक रखा है कि थोड़ी सी हिन्दी का जानकार व्यक्ति भी बगैर ज्योतिष सीखे ही हर प्रकार के फलादेशों को स्वयं समझ सकें।

नोट—हमारी पुस्तकें, अधिक तादाद में खरीद करने वालों को व्यापारी भाव के रेटों पर माल दिया जा सकेगा, प्रत्येक विषय, में विशेष जानारी करने के लिये पत्र व्यवहार करें।

❀ ज्योतिष सीखने के कुछ खास २ आंकडे ❀

प्रथम तो वह कुण्डली जो इस पुस्तक के प्रारम्भ में लिखी है उससे यह सीखना चाहिये कि जन्म कुण्डली में किस २ स्थान से भाग्य और जिन्दगी की क्या२ बातें देखी जाती हैं।

दूसरी बात यह है—जन्म कुण्डली में जो १२ अङ्क राशियों के लिखे रहते हैं, उन अंकों के, जो ग्रह स्वामी होते हैं यही ग्रह, उस स्थान के भी स्वामी माने जाते हैं, जिस स्थान में जिन २ ग्रह की राशी अंक लखे होते हैं। अतः कौन २ ग्रह, किस राशियों के स्वामी हैं।

मेष और वृश्चिक के स्वामी मङ्गल हैं। वृष और तुला के स्वामी शुक्र हैं। ३ मिथुन और कन्या के स्वामी बुध हैं। कर्क के स्वामी चन्द्रमा हैं। सिंह के स्वामी सूर्य हैं। धन और मीन के स्व गुरू हैं। मकर कुम्भ के स्वामी शनी हैं।

तीसरी बात यह है, कि कोई भी ग्रह जहां बैठता है वहाँ से कौन २ से स्थान को पूर्ण दृष्टी से देखता है, इसका फलादेश चाँदी की तेजी मन्दी के प्रारम्भ वाले पेज में देख लीजिये।

चौथी बात यह है कि किस२ राशियों में बैठने से कौन२ ग्रह उच्च होजाता है और कौन२ ग्रह किस२ राशी में नीचता का फल देता है।

उच्च राशी		नीच राशी
१	सू०	७
२	चं०	८
१०	मं०	४
६	बु०	१२
४	गु०	१०
१२	शु०	६
७	श०	१
३	रा०	९.
९	के०	३

पांचवीं बात यह है कि लग्न से छटे या आठवें या बाहरवें स्थान में जो कोई ग्रह बैठा होता है या जो कोई ग्रहनीच राशियों में बैठा होता है, यह ग्रह कुछ न कुछ जीवन में कष्ट अवश्य देता रहता है, किंतु छटे, आठवें, बारहवें स्थान में अगर अपने घर का मालिक ही कोई ग्रह बैठा होगा तो वह अच्छा समझा जायेगा।

छठवीं बात यह है कि हर एक कुण्डली के अन्दर हरएक ग्रह कहां २ बैठेकर किस २ प्रकार का फल देता है इसका पूर्ण रूपेण भिन्न २ फलादेश सरल हिन्दी में जानने के लिये हमारी भृगु संहिता पद्धति में पढ़कर मालूम करिये।

कपड़े की, या सूत की तेजी मन्दी

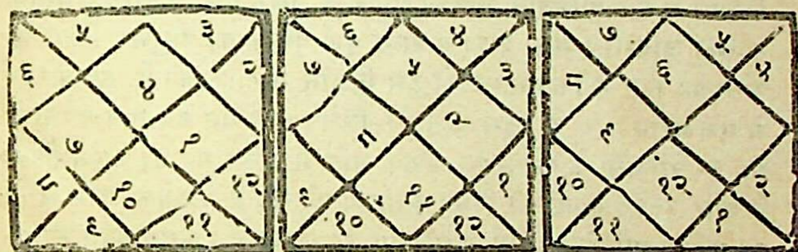
जिस २ साल के अन्दर जब कभी, मंगल वृश्चिक राशि पर आता है तब २उस डेढ़ महीने के अन्दर कपड़े या सूत पर अच्छी तेजी आती है। और मंगल जब २ कभी मेष राशिपर या वृषभराशि पर या सिंहराशि पर आते हैं तब २ भी तेजी आती है और यदि मंगल के साथ गुरू और शुक्र होंगे तो अधिक तेजी आयेगी और मंगल जिन २ वर्षों में,कर्क पर आवेंगे तब२ और यदि कर्क के मंगल के साथ गुरू बैठे होंगे या गुरू वृश्चिकराशि पर होंगे तो कपड़े की मन्दी ठीक तौर से नहीं आ सकेगी और वृश्चिकराशि पर शनी राहू या केतू के होने से भी तेजी ठीक नहीं बन सकती है बल्कि मन्दी नही रह सकती है।

कागज की तेजी मन्दी

जिन सालों में वृहस्पति वृश्चिक राशि पर आते हैं तब २ कागज की तेजी जोरदार आती है और जिन२ वर्षों में वृहस्पति मीन राशि पर या कर्कराशि पर आते है तब २ भी कागज की तेजी आती है किन्तु जिन २ महीनों में कर्क का मंगल होगा या जिन वर्षों में वृहस्पति मकर राशि पर होंगे या वृश्चिक राशि पर या कर्क राशि पर राहू, केतू, शनि होंगे तो कागज की मन्दी रहेगी या तेजी में रुकावटे पड़ती रहेंगी।

गलत कुण्डलियों को ठीक करने का सरल साधन

प्रत्येक बालक के जन्म के समय घड़ियों की गड़बड़ी से, या स्त्रियों की असावधानता से, या सूर्य टाइम या लोकल टाइम के फर्क से अक्सर जन्म कुण्डलियाँ गलत बन जाया करती हैं और बच्चे के जन्म का शुद्ध समय प्राप्त नहीं हो पाता है। इस कठिन समस्या को आप जरासे इशारे मात्र के कार्य योग से,सुलझा कर प्रत्येक गलत कुण्डलियों को ठीक कर सकते है। देखिये कुल बारह लग्न हैं और इन्हीं में सर्व प्राणियों का जन्म होता रहता है, मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क सिंह, कन्या तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ मीन, प्रतिदिन २४ घन्टे के अन्दर यह बारहों लग्न रात और दिन में रोजाना बदल२ कर घूम जाती हैं। अतः बच्चे की पैदाइस के वक्त यदि घण्टे आधे घण्टे का या कुछ मिनटों का फरक रह गया है, और जन्म की लगन गलत बन गई तो आप ऐसा करिये कि जन्म की लगन से एक लग्नपहले की और एक लग्न बाद की, लेकर दोनों में से अपना फलादेश मिलाकर देखें तो आपको जो लग्न सही होगी उसी का फलादेश भी सही मिल जायेगा। उदाहरण के लिये यह तीन लग्न से समझिये।



कर्क–पहिले की लग्न   सिंह–वर्तमान लग्न   कन्या–बाद की लग्न

इस प्रकार सिंह लग्न वाले की कुण्डली का फलादेश यदि सिंह लग्न पर सही नहीं बैठा है तो कन्या लग्न पर ही सही बैठ जायेगा, या कर्क लग्न पर सही बैठे जायेगा। इस प्रकार हरएक लग्न वालों की एक लग्न पहिले की और एक लग्न पीछे की लेने से, ठीक २ जाँच हो जायेगी।

❀ प्रशंसा-पत्र ❀

हीरा रत्ना श्री आर जी सपरे बी० एस ०सी,

सी० वा० साइकलोजी

ज्योतिष पत्रो के लेखक तथा प्रकाशक, देहली कलकत्ता तथा कटक के भविष्य वक्ता सबधी विभाग के सहायक लेखक।

डाकखाना–राहुरी, जिला–अहमद नगर, राहुरी।

प्रिय भगवान द.स जी!

में आपके प्रकाशन, 'भृगु संहिता पद्धति' के अंग्रेजी प्रति के लिये धन्यवाद देता हूँ जो आपने समालोचना के लिये मेरे पास भेजा है, लगभग ३० वर्षों से अधिक मैंने ६०० से अधिक लेखों को, भारत तथा लङ्का के प्रमुख पत्रोंमें भेजा है अतः मुझे अधिकाँश पुस्तकें निरीक्षणार्थ प्राप्त हुई हैं,और जिनका निरीक्षण प्रमुख पत्रों में किया गयाहै, इस अनुभव के आधार पर मैं यह कह सकता हूँ कि आपका वर्तमान प्रकाशन ज्योतिष साहित्य में एक महत्व पूर्ण कृति है।

ज्योतिष सम्बन्धी लेखों का लेखक होनेके कारण मैं यह विचार रखता हूँ कि ७०० पृष्ठों की पुस्तक के पूर्ण करने में किसी भी व्यक्ति को कितना परिश्रम करना पड़ता है और वास्तव में यह पुस्तक ज्योतिष विज्ञान में एक अनिवार्य भविष्य प्रसङ्ग के लिये एक आवश्यक पुस्तक समझी जावेगी। मैंने शब्द व शब्द पूर्ण पुस्तक का अनुभव किया है, और यह स्पष्ट है कि आपने जो इस विज्ञान में खोज की है, वह वास्तव में एक महान कार्य है। इस कृति का विशेष अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि १२ राशियों के अन्तरगत प्रत्येक भाव में प्रत्येक ग्रह का वर्णन किया है और १२९६ लग्नों की विषद व्याख्या की गई है। प्रत्येक जन्म लग्नों का फलित आपके १० वर्ष के परिश्रम का साक्षी है। भाषा बहुत साधारण है जो प्रत्येक व्यक्ति द्वारा समझी जा सकती है। मुझे प्रसन्नता है कि यह जटिल विषय एक ऐसी चतुराई तथा योग्यता के ढङ्ग से लिखा गयाहै जो आपके गुणों को सम्मानित करता है। मैं आपके अन्य प्रकाशनों के लिये प्रतीक्षा मैं हूँ और यह विश्वास करता हूँ कि वे भी इसी प्रकार महत्वपूर्ण होंगे। मैं इस वर्तमान प्रकाशनके लिये आपको धन्यवाद देता हूँ और आपकी कृतियों के लिये विशेष सफलता चाहता हूँ।

आपका शुभ चिन्तक :—आर० जी० सपरे, २१-२-५७

विश्व के भाग्यवानों की कुण्डलियां

ज्योतिष का चमत्कार

इस ग्रन्थ के अन्दर प्राचीन काल से लेकर अब तक के विश्व-विख्यात पुरुषों कीमहान् कुण्डलियाँ और ज्योतिषका अकाट्य फलादेश दिया है। महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, भगवान बुद्ध, औरङ्गजेब सिकन्दर बादशाह, पृथ्वीराज चौहान, झांसी की रानी, अरविन्द घोष महात्मा गान्धी, श्री जवाहरलाल नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस, श्री राजेन्द्र प्रसाद, लोकमान्य तिलक, सरदार पटेल, मदनमोहन मालवीय, रवीन्द्र नाथ टैगोर, स्वामी विवेकानन्द, भक्त नामदेव, श्री आदि शङ्कराचार्य, रामानुजाचार्य, हिटलर, मौलाना जिन्ना, सन्त तुलसीदास, हैदरअली टीपू सुलतान, अमेरिका के राष्ट्रपति, रूस के राष्ट्रपति, चीन के राष्ट्रपति, जार्ज पंचम का लड़का, इङ्गलड का प्रसिद्ध लेखक बरनार्ड शा,मानसिंह डाकू, अकबर बादशाह, महात्मा ईसा मसीह, वीर सावरकर, निजाम हैदराबाद, मुसलोनी, हरबर्ट जोर्ज वेल्स, नाथूराम गौडसे विनायक. रामकिशन डालमियां, श्री रामकृष्ण परमहंस, प्रसिद्ध उपन्यासकर्ता देवकीनन्दन खत्री, पंडित राधेश्याम कथावाचक बरेली, सर आशुतोष मुकर्जी, सूर्यनारायण राव, पण्डित क्षेत्रपाल शर्मा सुखसंचारक कम्पनी इत्यादि २ अनेकों महत्वदायक पुरुषों का जन्म कुण्डलियां दे देकर, उन लोगों की जीवनियों को,उन्हीं के रहस्यप्रद ग्रहों के योगों से, भिन्न २ रूप से स्पष्टीकरण कर करके, प्रत्यक्ष सिद्ध फलादेश लिखा है और लड़के लड़कियों के विवाह सम्बन्ध का सरल ग्रह ज्ञान तथा ज्योतिष के अनेकों अनुभव सिद्ध पेटेन्ट आंकड़े लिखे हैं। इस ग्रन्थ के द्वारा थोड़ी सी हिन्दी का जानकार व्यक्ति भी ज्योतिष के मार्मिक भेदों को बड़ी आसानी से समझ सकता है,इस ग्रन्थ में अनेकों प्रकार के आश्चर्यजनक ग्रह योगों का ज्ञान हो सकेगा। मू० ४) डाक खर्च अलग।

चारों पुस्तकें एक साथ मंगाने पर दो आना रु० कमीशन मिलेगा।

प्रकाशित होने वाला अद्भुत ग्रन्थ

भृगुसंहिता ज्योतिष पद्धति

सर्वाङ्ग ज्योतिष दर्शन

—इस ग्रन्थ के द्वारा—समस्त संसार भर की जन्म कुण्डलियों के फलादेश को एवं फलित ज्ञान को तस्वीर की तरह मालुम करिये अर्थात् हर पृष्ठ पर—हर एक ग्रह के कारण सहित फलादेश लिखे हुए हैं, हर एक ग्रहों की—हर एक कुण्डली में कहां कहां, किस—किस प्रकार की दृष्टियां उच्च नीच, मित्र—शत्रु, स्वक्षेत्री—सामान्य पड़ रही हैं और कुण्डली के अन्दर किस—किस स्थानों का स्वामी है, और किस—किस प्रकार कारक मारक बनता है तथा किस किस स्थान पर सबल एवं निर्बली हो जाता है, और कौन २ से केन्द्र तथा त्रिकोण स्थान बनते हैं। इन समस्त कारणों को—सम्पूर्ण दृष्टि में रखते हुए पुस्तक के अन्दर प्रत्येक कुण्डली के चार्ट में कारणों सहित भाग्य सम्बन्धी समस्तों जीवन के फलादेश लिखे हैं। और सम्पूर्ण जीवन के प्रत्येक अच्छे बुरे समय की जानकारी एक दो दिन तक की—भाग्य के हर एक सम्बन्धों में सदैव काल तक के लिये बड़े भारी विस्तार से खुलासा रूप में लिखा है।

इस पुस्तक के द्वारा घर २ में प्रत्येक व्यक्ति ज्योतिष ज्ञान का जानकार बगैर परिश्रम किये हुए स्वतः बन सकता है सन् १९६२ के अन्तिम माह में सम्भवतया छप सकेगी। पत्र व्यापार से मालुम करें,

भृगुज्योतिष पुस्तकालय, नया बाजार मथुरा (यू०पी०)

